اکتوبر-نومبر۲۰۱۳ء/محرم نمبر ۱۴۳۵ھ

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَّ کِتَابٌ مُّبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

October-November 2013





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

एक साल के लिए : 200/-रू0
पांच साल के लिए : 800/-रू0
लाइफ़ मेम्बरशिप : 4000/-रू0

विषय सूची

अक्टूबर-नवम्बर 2013ई०
मुहर्रम नम्बर 1435हि०

मासिक **"शुआ-ए-अमल"** (हिन्दी-उर्दू),
"ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर"
और **नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन** से प्रकाशित
सभी किताबों को
डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट
Log on Our Website:
www.noorehidayatfoundation.com

हुसैन क्या चाहते थे?

y§kd %& आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा मौलाना सैय्यद अली नक़ी नक़वी
vuqknd %& शिव भूषण वर्मा, अध्यापक यादगारे हुसैनी हायर सकेण्ड्री स्कूल इलाहाबाद

फूलों की सेज पर सुख भरी नींद से सोना जितना सरल है शोलों की शय्या पर क्षण भर लेटना उतना ही कठिन है। संसार में सुख की कामना प्रत्येक मनुष्य करता है लेकिन दुःख और आपत्तियों का कोई स्वप्न भी नहीं देखना चाहता। शरीर के किसी भी भाग में चुभा हुआ कांटा जब तक निकल नहीं जाता तब तक मनुष्य को विश्राम नहीं मिलता। तब कौन ऐसा होगा जो जीवन पर्यन्त अपने ह्रदय में कांटों का जाल चुभाए रखने की कल्पना भी कर सकता हो। मनुष्य जब किसी श्रेष्ठ या आदर्श रूप कार्य को करने चलता है तो उसके सामने बड़ी बड़ी बाधाएं आती हैं, आंधियां और तूफ़ान आते हैं लेकिन जो उनका साहस से सामना करता हुआ आगे बढ़ता जाता है अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफ़ल होता है। आकाश उसके ऊपर फूलों की वर्षा करता है। मनुष्य सदा उसके नाम की माला जपता है।

कर्बला की घटना एक ऐसी दुःख भरी कहानी है कि जिसके स्मृति मात्र से रोमान्च हो जाता है। कर्बला के राण क्षेत्र में आदर्श पुरूषों ने सत्य और न्याय की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर मानव जाति को एक नवीन जीवन प्रदान किया है तथा जब तक इस संसार में मानव की सत्ता होगी तब तक उन्हें इस घटना से जीवन मिलता रहेगा। लोग उसकी याद कर यही कहते रहेंगे कि आह! कर्बला युद्ध के मैदान में नेछावर होने वालों की कहानी में ज़िन्दगी बरसती है। यह बिल्कुल सत्य है कि हज़रत इमाम हुसैन ने अपने त्याग और तपस्या से अंधी आंखों में प्रकाश भर दिया है।

हज़रत इमाम जिनपर कर्बला की घटना का इतना बड़ा महत्व आधारित है वे क्या चाहते थे? यही बतलाने के लिए हमने अपनी लेखनी उठाई है। कर्बला के रणक्षेत्र में हज़रत इमाम हुसैन अ. को सपरिवार बलिदान हुए आज (लगभग) 1400 वर्ष बीत चुके हैं। इतने लम्बे समय में न मालूम कितने परिवर्तन हुए। मनुष्य के जीवन को झकझोर डालने वाले न मालूम कितने तूफ़ान आए और चले गये, बड़ी बड़ी क्रान्तियां हुईं, लेकिन लोगों के दिलों में हुसैन अ. की याद ताज़ी बनी रही। काल चक्र इसे मिटा न सका। प्रत्येक के होंठों पर हुसैन का नाम है और हर एक हुसैन के उद्देश्य को जानना चाहता है। हुसैन किसी अपने निजी लाभ के उद्देश्य को लेकर नहीं चले बल्कि वे समस्त मानव जाति के हित के लिए था। इसी लिए मनुष्य ने आप की स्मृति को अपने ह्रदय में ऐसा स्थान दे दिया है जो कि कभी हट नहीं सकती। अब हुसैन अ. के उद्देश्य का पूर्ण चित्र आपके सामने रखना है।

हज़रत इमाम हुसैन अ. के कुछ समय पहले हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ने सभ्यता, संस्कृति और धार्मिक जीवन में एक नवीन क्रान्ति का सन्देश पंहुचाया था। जिसका नाम था "इस्लाम"। इस्लाम ने लोगों के जीवन में अनेकों महत्व पूर्ण परिवर्तन किए। उसने स्वार्थ के नशे में डूबी हुई मानव जाति को एक दूसरे के साथ भाई चारे का व्यवहार करने का पाठ पढ़ाया। "सब अल्लाह के बन्दे हैं, ऊंच नीच का विचार करना यह मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है" की शिक्षा देकर लोगों के दिलों में एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न की। और केवल अल्लाह की उपासना करने का उपदेश दिया।

जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत तो सभी जानते हैं। इसी का सहारा लेकर बलवान निर्बलों पर अत्याचार करता रहा और आज भी जब कि मनुष्य अपने को सभ्यता की अन्तिम चोटी पर बैठा हुआ मानता है इसका प्रभाव कम नहीं हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि आज भी बलवान अपने से कमज़ोर

पर हर तरह के अत्याचार करता है। इस मानवता के दामन की आज धज्जियां हवा मे उड़ती हुई दिखाई देती हैं। अरब जाति के लोगों में उस समय अनेकों दुर्गुण पैदा हो गये थे। वे लोग दूसरी जाति के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। वे स्वयं वैधानिक कामों में छोटे बड़े, नीच ऊँच की बात सोचते थे। यदि किसी फौजदारी कानून के अन्तर्गत किसी निम्न श्रेणी के मनुष्य को कठिन दण्ड दिया जा सकता था। तो उसी क़ानून के अन्तर्गत ऊंची श्रेणी के मनुष्य को बिना दण्ड दिये छेड़ दिया जाता था या तो बहुत साधारण दण्ड दे दिया जाता था। बड़े आदमियों की जानें बहुत मंहगी थीं ओर छोटे आदमियों की बहुत सस्ती। जो मनुष्य का घर धन धान्य से भरा पूरा होता उसका जीवन बड़े ठाटबाट का होता, उसके समुदाय में बहुत लोग होते उसी को उच्च श्रेणी का आदमी माना जाता। यही गुण अरब जाति के चिन्ह माने जाते थे तथा जिनके पास ये सब गुण न होते वे निम्न श्रेणी के लोग कहे जाते। अरब जाति वाले इन निम्न श्रेणी के लोगों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया करते थे।

इस प्रकार धन, जन, और शानशौकत के आधार पर अपने को ऊंचा समझ बैठने से ही अरब जाति अपराध और पाप के अंधेरे कुएं में गिर चुकी थी। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ने सबसे पहले इसी छोटे बड़े ऊँच नीच के भेद भावों को समाप्त किया तथा जाति वर्ग की भिन्नता को मिटाया। और मनुष्य को दूसरों से ऊंचा होने की एक नयी कसौटी संसार के सामने रखी। आपने बतलाया कि संसार के सभी मनुष्य अल्लाह के बन्दे होने के नाते बराबर हैं। लेकिन मनुष्य के संसार में अनेकों कर्त्तव्य होते हैं। जो मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का भली भांति सच्चाई के साथ पालन करता है वही अपने को दूसरों से ऊंचा या बड़ा कहलाने का अधिकारी होता है। उसपर अल्लाह की विशेष कृपा होती है। इसके विपरीत जो मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करता है वह छोटा या नीच कहलाता है।

आपके इस कथन से ठाटबाट, धन सम्पत्ति के आधार पर बड़ा या उच्च श्रेणी का मनुष्य मानने वालों के ह्रदय पर बहुत बड़ी चोट लगी। वे सब लोग आपके विरूद्ध हो गये और इस्लाम का दृढ़ता के साथ सामना करने लगे, तथा इस्लाम के प्रचार को बन्द कराने के लिए प्रयत्न करने में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा को अनेकों प्रकार के दुःख दिये। अनेकों स्थानों पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0 को अपने विरोधियों से लड़ना पड़ा। इसी से सम्बन्ध रखने वाली बद्र, ओहद और ख़न्दक़ की लड़ाइयां प्रसिद्ध हैं। रसूल स. के विरूद्ध लड़ने वालों में बनी उमय्या क़बीले का नेता अबुसुफ़ियान सबसे आगे था। कठिनाइयां चाहे जितनी उठानी पड़े लेकिन अन्त में विजय सत्य की ही होती है। इन संघर्षों में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा की विजय हुई और विरोधियों को आपके सामने घुटने टेक देने पड़े।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स. के समय में इस्लाम के सिद्धान्तों में परिवर्तन करने का किसी को अवसर नहीं मिल सकता था। वे इस्लाम के सिद्धान्तों का बड़ी दृढ़ता के साथ स्वयं पालन करते थे और दूसरों को उसी तरह दृढ़ता ओर विश्वास के साथ पालन करने पर ज़ोर देते थे। जब हज़ारों की संख्या में सभी कबीलों से निकल निकल कर लोग इस्लाम की शरण में आना गर्व की बात समझते थे उस समय भी आप भिखारियों के साथ उठते बैठते, फटे, कपड़े पहनते तथा मिलने आने वाले के साथ भाई चारे का व्यवहार करते थे। आपने अपनी मस्जिद में अज़ान देने के लिए एक हब्शी को नियुक्त किया था जिसे अरब जाति वाले गिरी हुई दृष्टि से देखते थे। लेकिन रसूल स. के ह्रदय में उस हब्शी के लिए वान्धुत्व के नाते सम्मान और प्रेम था। आपने अपनी फुफेरी बहन का विवाह एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम के साथ कर दिया। आगे चल कर इसी गुलाम के बेटे को अरब की ऊंची जाति वालों की सेना का सेनापति बनाया। इस पर लोगों को बुरा मालूम हुआ लेकिन आपने किसी की भी बात न सुनी।

जिन लोगों का रसूल स. बहुत आदर करते थे अधिकतर वे लोग निर्बल निर्धन और विदेशी थे। सलमान फारसी जो ईरान के निवासी थे उनके साथ आपका ऐसा अच्छा व्यवहार था जैसा दूसरों के साथ होना कठिन था। ये सब काम रसूल इस लिए करते थे जिससे अंधकार में भटके हुए मनुष्यों के विचारों और मस्तिष्क में परिवर्तन हो सके और मानवता फिर कंचन के समान चमक उठे। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि रसूल स. के जीवन के दिन शीघ्र ही समाप्त हो गये। इस संसार में उनकी कुछ दिन की और आवश्यकता थी परन्तु अल्लाह की इच्छा के आगे

किसी की कुछ नहीं चलती। वे संसार से सदा के लिए चले गये परन्तु आपके जीवन की एक एक घटना मानव जीवन में मार्ग प्रदर्शित करती रहती है। आपके जीवन काल में ही इस्लाम इतनी शक्ति पा चुका था कि वह दुनिया वालों के लिए एक आदर्श बन गया था और जिसे कुछ लोग व्यवहारिक रूप से पालन भी करने लगे थे।

जनता की विचारधारा में परिवर्तन लाने के लिए एक लम्बे समय की आवश्यकता होती है। क्योंकि जो भाव या विचार मनुष्य के मस्तिष्क में बैठ जाते हैं उनका निकलना सरल नहीं होता है। इसलिए इस्लाम के फैलने में भी एक लम्बे समय की आवश्यकता हुई। रसूल स. के मृत्यु के कुछ दिन पश्चात बनी उमय्या की शक्ति की नींव पड़ी। प्रारम्भ में इसकी शक्ति एक सूबे की गवर्नरी के रूप में थी लेकिन धीरे धीरे इसका प्रभाव निरन्तर बढ़ता चला गया। शाम में बनी उमय्या का परिवार बड़ा शक्तिवान हो गया था और उसकी शक्ति बराबर बढ़ती जा रही थी इस शक्ति से इस्लाम के पैग़म्बर की हमेशा मुठभेड़ हुआ करती थी। लेकिन अन्त में इस शक्ति को पैग़म्बर की शक्ति के सम्मुख सिर झुका देना पड़ा था।

पाठक बड़ी सरलता से यह अनुमान लगा सकता है कि यदि इस कबीले के हाथ में राज शक्ति होती तो ये लोग क्या करते? जिस ऊंच नीच के भेद भाव को इस्लाम के पैग़म्बर ने मिटाने में अपनी समस्त शक्ति लगा दी थी तथा अनेकों प्रकार की आपत्तियों का सामना किया था वही फिर अपना स्थान जमा लेता। लेकिन सौभाग्य से इसकी शक्ति इस्लाम की छाया में आ गयी और इस्लाम उसका प्रतिनिधि बन गया था। इसलिए इस कबीले ने अपने उद्देश्य को इस्लाम की छत्रछाया में रहकर गुप्त रूप से अपने उद्देश्य की पूर्ति करने का विचार किया। यदि वे खुल्लमखुल्ला अपने उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयत्न करते तो यह उनके लिए बड़ा भयंकर परिणाम सिद्ध होता क्योंकि इस्लाम के सिद्धान्तों के सामने उनकी बात सुनने के लिए कोई तैयार न होता।

कुछ लोगों ने समझा कि इस्लाम की सादगी और उसके भाई चारे के स्थान पर साम्राज्यवाद जन्म ले रहा है और पूंजीवाद की नीव पड़ती जा रही है। लोगों ने इसका विरोध किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अबुज़रग़फ्फारी का देश निकाला हुआ, रब्ज़ह को जंग में भेज दिया गया, रसूल स. इस संसार से चल बसे।

समय ने पलटा खाया। इस्लाम का शासन हज़रत अली अ. के हाथों में आया। अतः इस्लाम के सिद्धान्तों का पुनः प्रचार आरम्भ हुआ। इसलिए विरोधियों ने आपको विद्रोह के विरूद्ध आपको इस प्रकार लड़ाइयों में उलझा दिया कि आप अपने लक्ष्य को पूरा न कर सकें। अन्त में हज़रत अली अ. का सिर एक मस्जिद में उतार दिया गया। आपके मारे जाने के बाद आपके पुत्र हसन अ. को इस्लामी शासन का अधिकार मिला। इस समय तक शाम की सरकार की शक्ति बहुत बढ़ गयी थी। इस लिए आपने देखा कि युद्ध के द्वारा हमें सफलता नहीं मिल सकती है। अतः उनसे सन्धि करके उनकी हिंसा प्रवृत्ति का दमन किया तथा दूरदर्शिता से काम लेकर सन्धि के साथ यह शर्त लगा दी कि शाम के शासक को अपने पश्चात किसी को उत्तराधिकारी बनाने का अधिकार न होगा। इसके पश्चात शासन बनी हाशिम को प्राप्त होगा। यह शर्त ऐसी थी कि जिसमें भविष्य बहुत कुछ हज़रत हसन के हाथों सुरक्षित था।

उनका विचार यह था कि इसके बाद शाम का शासन बनी हाशिम के हाथ आ जाएगा। लेकिन राजनीति में सच्चाई तथा प्रतिज्ञा पालन का कोई महत्व नहीं है। अनेकों शर्तें तय होती हैं और तोड़ दी जाती हैं सन्धि पत्र लिखे जाते हैं पर वे रद्दी काग़ज़ की टोकरी में पड़े दिन काटा करते हैं। अतः वही हुआ जिसकी सम्भावना थी। सन्धि की शर्तों का पालन करना तो दूर रहा। उल्टे हज़रत हसन को विष खिलाकर उनकी हत्या कर दी गयी। यह भी एक बलिदान था जो इस्लामी संस्कृति को जीवित रखने वाले हुसैन अ. शेष रहे। प्रत्यक्ष रूप से तो आपको ऐसे कुसमय में कोई भी क़दम आगे बढ़ाने का अवसर नहीं था। जिस गिरोह को लेकर शाम की शक्ति का सामना किया जा सकता था वह पूरा सन्धि के पश्चात तितर बितर हो गया था तथा अब उसके पुः संगठित होने की कोई सम्भावना भी नहीं थी। इस्लाम के सिद्धान्तों के विपरीत विरोधियों की चालों को देखकर हज़रत हुसैन अ. मन मसोस कर रह जाते थे पर कर ही क्या सकते थे, विवश थे। तथा आप इस प्रतीज्ञा में थे कि देखें शाम का शासक मुआविया अपने उत्तराधिकार के लिए क्या करता है।

इससे यह न समझना चाहिए कि इस पृतिक्षा की अवधि में अपने अधिकारों को चाहने वाले बिल्कुल चुप बैठे थे। अर्थात् सन्धि की शर्तों के अनुसार लोगों की आवाज़ें कभी कभी बलन्द होती कि मुआविया को अपने बाद किसी को उत्तराधिकारी बनाने का अधिकार नहीं है! परन्तु उनकी आवाज़ें इस तरह दबा दी जाती थीं जिस प्रकार हिटलर ने अपने विरोधियों की आवाज़ों को बन्द कर दिया था। इस सिलसिले में अर्म बिन हुमुक़ ख़ुजाई और हुज्र बिन अदि तथा उनके दस ग्यारह साथियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया। इन लोगों की शाम की सरकार से कोई शत्रुता नहीं थी वरन् केवल सिद्धान्तों की भिन्नता थी। शाम की सरकार के सिद्धान्तों के विरूद्ध सच्चे इस्लामी सिद्धान्तों के पालन पर जोर देने के कारण इन्हें अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। हज़रत इमाम हुसैन ने इन दुर्व्यवहारों का विरोध तो अवश्य ही किया परन्तु साथ ही साथ यह भी देखते रहे कि अन्तिम शर्त का क्या परिणाम होता है। कुछ दिनों के पश्चात् वह समय भी आ गया। शाम के शासक अमीर मुआविया ने हसन के साथ की शर्त के विरूद्ध अपने बेटे यज़ीद को अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया हज़रत इमाम हसन ने जिस शर्त को अपने भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए आधार बनाया था वह भी नष्ट हो गयी।

हज़रत इमाम हुसैन अ. ने यह अनुभव किया कि यज़ीद जो कि उनका विरोधी था, उसके कारनामे खुल्लम खुल्ला इस्लाम के विरूद्ध विद्रोह के शोले थे। मुआविया भी समझते थे कि इस मामले में हुसैन के व्यक्तित्व का सबसे बड़ा सम्बन्ध है इस लिए उन्होंने हज़रत हुसैन को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया। परन्तु वे अपने प्रयत्न में असफल रहे। इमाम हुसैन ने बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मैं इन बातों के बिल्कुल विरूद्ध हूं। आपके सन्धि के प्रस्ताव को अस्वीकार करने पर कोई कठोरता का व्यवहार नहीं किया। मुआविया की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र यज़ीद उसका उत्तराधिकारी हुआ। उसने सबसे पहले हुसैन से धार्मिक शासक होने का अधिकार किस प्रकार प्राप्त किया ....उसने मदीना के गवर्नर को पत्र में लिखा कि या तो हुसैन अ. से धार्मिक शासक होने का अधिकार छीन लो या उनकी हत्या कर दो। हुसैन के विरूद्ध उठाया जाने वाला यह पहला हिंसात्मक पग था। हुसैन अ. इसके लिए बिल्कुल तैयार थे। उन्होंने बड़े गर्व से कहा कि चाहे मेरे प्राण चले जायं परन्तु मैं इस असत्य मार्ग पर चलने वाले शासक के आगे सिर झुकाना अपने स्वाभिमान के विपरीत समझता हूं।

यह ऐसा समय था कि जब लोगों की ज्ञान शक्ति बिल्कुल नष्ट हो चुकी थी। वातावरण बिल्कुल शान्त था। जिन लोगों से विरोध करने का सन्देह था उनमें से किसी का गला घोंट दिया गया था किसी की मानसिक शक्ति को खरीद कर उसके मुंह में ताले लगा दिये गये थे सोने चांदी से भरी थालियों को देख कर बड़े बड़ों के ह्रदय डाँवाडोल हो गये थे। ऐसे समय में हुसैन उस अन्तिम काम के लिए तैयार हो रहे थे जिसके द्वारा बनी उमइय्या के साम्राज्यवाद का महत्व धराशायी हो जाय।

इमाम हुसैन के लिए यह असम्भव था कि वह राज शक्ति का सामना शक्ति से करते। आपने युद्ध का एक नया ढंग सोचा। संसार ने उनसे पूर्व ऐसा युद्ध का नियम नहीं देखा था। वही इसके उद्देश्य के लिए अधिक लाभदायक था। वे अच्छी तरह जानते थे कि मुसलमानों की आखों पर पर्दे पड़ गये हैं, इनकी बुद्धि कुन्ठित हो गयी है। उनके ज्ञान पर अज्ञान का पर्दा पड़ गया है। उनमें यह सोचने की शक्ति शेष नहीं रह गयी थी कि बनी उमइया के कर्म इस्लाम के बिल्कुल विरूद्ध हैं। इसलिए हुसैन अ. चाहते थे कि मुसलमानों को ज्ञान प्रकाश देकर उनकी आंखों के सामने से अज्ञान का पर्दा उठा दिया जाय उन्हें सच्चाई दिखाई दे जाये। उनके सामने इस्लाम का असली रूप रखा जाय।

हज़रत इमाम हुसैन अ. ने इसके लिए सेना एकत्र नहीं की। आपने उन सत् पुरूषों की खोज की जो कि सही रूप में इस्लाम के प्रतिनिधि थे, जिनकी सज्जनता और सच्चाई को प्रत्येक मनुष्य स्वीकार करता था। उन्होंने रसूल स. के परिवार के युवक, बालक तथा नवजात शिशु को भी अपने साथ लिया। तथा रसूल स. के घराने की स्त्रियां जिनमें रसूल स. की सगी नातिन भी थीं अपने साथ में लिया। हुसैन अ. ने अपने शत्रुओं की प्रवृत्तियों को भली भांति समझ लिया था कि वे उनपर कभी भी दया और सहानुभूति नहीं दिखा सकते। हज़रत इमाम हुसैन अ. ने अपने साथ जो सामान लिया था वह सब हुसैनी उद्देश्य की पूर्ति में

व्यय हो गया।

बूढ़ों के सिर काट लिए गए, युवकों को मृत्यु की गोद में सुला दिया गया, बच्चों के प्राण ले लिये गये, शत्रु के अत्याचार और बर्बरता का अन्तिम तीर शेष था। हुसैन अ. ने इसके लिए भी लक्ष्य खोज निकाला। रबाब की गोद से 6 महीने का बच्चा ले लिया। सबसे अन्त में अपनी गर्दन को भी सामने कर दिया। आपकी मृत्यु के बाद शहज़ादियों को बन्दी बना लिया गया। यह सब जो कुछ किया वह बहुत समझकर किया गया। हुसैन अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफ़लता पा सके। इन बलिदानों से मुसलमानों की आंखे खुल गयीं। उन्होंने वास्तविकता को पहचान लिया। इस्लाम और यज़ीदियत दुध और पानी की तरह अलग अलग हो गये। हुसैन बस यही चाहते थे कि लोग इस्लाम को पहचान लें..............समझ लें कि इस्लामी संस्कृति वही नहीं है जो दमिश्क की राजधानी में दिखाई देती है। जहां शराब की बोतलें रात दिन खुला करती है। तथा वेश्याओं का झुंड अंगड़ाइयां लिया करता है। जहां समस्त प्रजा से धन लेकर ख़लीफ़ा की रंग रलयों में व्यय किया जाता है। जहां ग़रीबों की आवाज़ें कोई सुनने वाला नहीं है, जहां न्याय का गला घोंटा जाता है।

हुसैन ने दिखला दिया कि इस्लाम की संस्कृति वह है जो कर्बला के मैदान में ला खड़ी की गयी। जहां एक हब्शी गुलाम भी घायल होकर घोड़े से गिरता है और इमाम को पुकारता है तो इमाम उसके सिरहाने जाते हैं तथा उसके सिर को उठाकर अपनी गोद में रखते हैं। इस प्रकार उस ग़ुलाम की आत्मा स्वामी की गोद में पड़े हुए शरीर से सदा के लिए अलग हो जाती है। यज़ीद के समान शक्तिवान उनके शासक हो सकते हैं तथा प्रत्येक जाति में उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु हुसैन के समान सत्य की रक्षा में सपरिवार बलिदान होने वाले विरला ही जन्म ले सकता है। हुसैनी मिशन जो कर्बला के मैदान में अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सका वह प्रत्येक काल में यज़ीद के समान शक्तिवान शासकों की पराजय के लिए पर्याप्त है परन्तु इसके साथ एक शर्त यह है कि संसार के लोग हुसैन अ. के कर्मों को स्मरण रखें तथा उस से शिक्षा प्राप्त करें।

(इमामिया मिशन लखनऊ का प्रकाशन नं0 229)



¼'ks u0 09 dk cfd;k ----------------½

किये और सेना का अलमदार (ध्वज धारी) अपने भाई हज़रत अब्बास अ. को बनाया।

युद्ध का आरम्भ उमर सा'द ने इस तरह किया कि एक तीर कमान /धनुष के चिल्ले में जोड़ कर छोड़ा और इसके साथ ही चार हज़ार कमानें कड़कीं और उतने ही तीर आये जिसके बाद हुसैन अ. ने भी जानें न्योछावर करने वालों को ललकारा कि बस अब हुज्जत (प्रमाण) पूरी हो गयी (अर्थात अब समझौते की आशा मिट चुकी है और लड़े बिना कोई उपाय नहीं है।) कहां तीस हज़ार और कहां बहत्तर का छोटा सा गुट! मगर इन बहत्तर ने इस बहादुरी से मुक़ाबला किया कि आकाश और पाताल को अपने जियालेपन और शेरदिली का गवाह बना दिया। उनमें से किसी एक ने मैदान से क़दम नहीं हठाया। जब साथी सब (वीरगति पाकर) शहीद हो गये तो परिजनों की बारी आयी। इमाम हुसैन अ. के भान्जे, भतीजे, भाई एक एक करके शहीद हुए। आख़िर में अलमदार हज़रत अब्बास और मशहूर कथनानुसार, उनके बाद हज़रत इमाम हुसैन अ. के अट्ठारह बरस के कड़ियल जवान बेटे अली अकबर ने भी जो रसूल हज़रत मुहम्मद स. के बिल्कुल समरूप थे छुटने का दाग़ दिया। और सबसे अन्त में वह बेजोड़ बलिदान प्रस्तुत किया जो इतिहास में पहली और आख़िरी बार प्रस्तुत हुआ अर्थात छः महीने की जान अली असग़र अ. जो बाप के हाथों पर तीर से शहीद हुए। फिर स्वंय हज़रत इमाम हुसैन अ. तीन दिन की भूख प्यास में यादगार ओर बेमिसाल वीरता के साथ मुक़ाबला करने के बाद (अमर) शहीद किये गये। इमाम हुसैन अ. की शहादत के बाद खैमों (तम्बुओं) में आग लगा दी गयी; सामान लूटा गया ओर हरम (महिलाओं) को बन्दी बनाकर शहर शहर गांव गांव फिराया गया। यह सब कुछ हो गया मगर हुसैन अ. ने और उनके बाद किसी बच्चे ने भी यज़ीद के राज्य को माना नहीं।

यही है वह (अमर) बलिदान जिसकी याद मुहर्रम में हर साल मनायी जाती है और इस तरह कर्बला के अमर शहीदों का बरसाबरस शोक मातम होता है जो साढ़े तेरह सौ साल से सम्पन्न है और निश्चय ही जब तक आकाश पाताल है यह ग़म स्थापित रहेगा।



(1966 के एक उर्दू रेडियो व्याख्यान का हिन्दी रूपान्तरण)

कर्बला के अमर शहीद का बरसाबरस शोक

y§kd %vk;rqYykfgy mtek lS;n gy myeke eksykuk vyhudh huduoh
vuqokn %tukc eq0 j0 vkfcn] y[kuÅ

संसार में दुनिया से उठ जाने वाले का शोक, जो उसके सबसे निकट के सम्बन्धी करते हैं, वह बस कुछ दिन होता है। लेकिन ये सिर्फ़ कर्बला के अमर शहीद हैं जिनका शोक हर साल होता है। जहां जहां उनके नाम और काम के जानने वाले मिलते हैं वहां वहां यह शोक होता है। उनमें लगभग हर आदमी की ओर या कम से कम हर घर या घराने में यह शोक मनाया जाता है, और ऐसे जैसे यह दुख घटना उसी साल हुई हो; और हरेक उस जोश वलवले से मनाता है जिस जोश से वह अपने किसी सम्बन्धी का शोक नहीं मनाता। आख़िर इसका कोई कारण होना चाहिए! जो पास का कारण किसी के मन में तुरन्त आ सकता है वह मज़हबी श्रद्धा है। मगर याद रखना चाहिए कि किसी फ़िरक़े के भेद के बिना हर मुसलमान को मज़हबी श्रद्धा इमाम हुसैन अ. के पूर्वजों से ज़्यादा है इनमें पहली ज़ात हज़रत मुहम्मद साहब स. की है, खुद इमाम हुसैन अ. से ज़्यादा (श्रद्धा की) है। इसी तरह आपके पिता श्री हज़रत अली अ. और माताश्रीमती हज़रत फ़ातिमा ज़हरा स. की भी श्रेणी आपसे आगे है, फिर जहां तक शिया फ़िरक़े का सम्बन्ध है इमाम हुसैन अ. की अपेक्षा हज़रत इमाम हसन अ. से भी उसकी मज़हबी श्रद्धा किसी तरह कम नहीं मगर जहां तक दुख शोक की अभिव्यक्तियों का सम्बन्ध है वह जिस शान से इमाम हुसैन अ. के लिए होती हैं उस तरह उनके बड़ों के लिए भी नहीं होतीं।

इन महाशयों के जन्नतावसान की तिथियों पर बेशक शिया मजलिसें (शोक–सभाएं) करते हैं मगर इस तरह का दुःख शोक मातम निस्सन्देह उन महाशयों में से किसी का भी नहीं होता जो इमाम हुसैन अ. के अगुवा हैं और न ही बाद के मासूम (निष्पाप) इमामों में से किसी का होता है जो शिया धर्म मूल्यों से इमाम हुसैन अ. की तरह मज़हबी श्रद्धा के केन्द्र हैं।

इससे साफ़ साबित हो जाता है कि इसका कारण मज़हबी श्रद्धा नहीं है। यही राज़ है कि इमाम हुसैन अ. के दुःख में शियों के साथ वे भी शरीक होते हैं जो शिया क्या मुसलमान भी नहीं हैं। अगर इस शोक का श्रोत मज़हबी श्रद्धा होती तो यह शोक उन्हीं लोगों में रहता जो यह श्रद्धा रखते हैं। मगर इसका सम्बन्ध क्योंकि मज़हबी श्रद्धा से नहीं बल्कि किसी प्राकृतिक (Natural) नियम से है, जिसका प्रभाव धर्मजाति के भेद से सर्वोपरि होता है, इसलिए हज़रत इमाम हुसैन अ. के ग़म में शियों के साथ संसार शरीक है।

बात यह है कि हज़रत इमाम हुसैन अ. ने सत्य भक्ति के रास्ते वह बलिदान दिया है जिसका उदाहरण न उनके पहले कोई सामने आया था और न उनके बाद कोई उदाहरण मिलता है। फिर इस बलिदान के चलते आप पर जो यात्नाएं और दुःख पड़े वह हर मनुष्य को जिसके सीने में पत्थर नहीं बल्कि दिल है, प्रभावित कर देते हैं। दिल का असर आँख पर पड़ता है और आँखें आँसू बहा कर उस अमर शहीद को श्रद्धान्जिलि देती हैं जिसने सत्य के मार्ग में इन दुःखों को झेला।

यह हज़रत इमाम हुसैन अ. का दुःख नहीं है, मानव के यथार्थवाद और सत्यानिष्ठा का एलान है, अत्याचार से घृणा का ऐलान है और अत्याचार के विरूद्ध पीड़ितों का विजय शंखु है। सत्य सतत अस्तित्व रखता है और अत्याचार से घृणा मानव प्रकृति के न बदलने वाले मूल्यों में से है, इस लिए हुसैन का शोक भी अमर जीवन रखता है और समय के बदलने के साथ उसके रूप चाहे बदल जायें परन्तु उसकी आत्मा में बदलाव असम्भव है। अब आइये न जानने वालों के लिए हज़रत इमाम हुसैन अ. के व्यक्तित्व और उनके

कारनामों के बारे में बतायें कि वे इस दुःख शोक से परिचित हों जिसे भरपूर तरह से मानवता ने अपना दिल चीर कर उसकी परतों में जगह दी है।

हज़रत इमाम हुसैन अ. इस्लाम प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद स. के बेटे थे। इस्लाम का असली सत यही है कि अल्लाह के मुक़ाबले में किसी शक्ति के सामने सर न झुकाया जाये। शाम के राज्य में यज़ीद, जो अपने बाप मुआविया के बाद बादशाह हुआ था, अपने को मुहम्मद साहब स. का उत्तराधिकारी कहलवाता था फिर भी हर प्रकार के दुष्कर्म और दुराचार खुले आम करता था और हज़रत इमाम हुसैन अ. से यह चाहता था कि आप उसकी बैअत (आधीनता की शपथ/प्रतिज्ञा) कर लें यानि उसे मुहम्मद साहब स. का वैध्य उत्तराधिकारी मान लें और बिना शर्त उसके आज्ञा पालन का क़रार कर लें। हज़रत इमाम हुसैन अ. की ओर से उसकी बैअत हो जाने के माने थे कि जनता में धर्म मज़हब का मान मिट जाय और वे सारे काले करतूत जिनमें यज़ीद लिप्त था, मुसलमानों के बीच संविधान की हैसियत से सही समझे जाने लगें। इसलिए हज़रत इमाम हुसैन अ. ने सारे नतीजों को सामने रखते हुए यज़ीद की बैअत ठुकरा दी, परन्तु आपने अपनी ओर से युद्ध का क़दम नहीं बढ़ाया बल्कि अपने नाना के प्रवास और अपने जन्म के स्थान मदीने को छोड़कर काबा धाम की ओर चले और मक्के में शरणार्थी (Refugee) की हैसियत से ठहरे। यह कार्यात्मक एलान था कि आपको किसी का ताज व राजसिंहासन लेना नहीं है, न अपनी ओर से युद्ध करना है। आपको तो असत्य के समर्थन से अलग थलग रहते हुए जीवन बिताना है और 'जियो और जीने दो' के तरीक़े पर चलना है मगर यज़ीद की ओर से हाजियों के भेस में आदमी भेजे गये कि हज की प्रक्रियाओं के बीच किसी न किसी तरह इमाम हुसैन अ. को शहीद कर दें या आपको पकड़ लें। इस लिए हज से सिर्फ़ एक दिन पहले जब दुनिया हज के लिए जमा हो रही थी, रसूल स. का बेटा मक्का छोड़ रहा था। आपके साथ कोई सेना न थी बल्कि आपके साथ ऐसा क़ाफ़िला था जिसमें पर्देदार बीबियां और छोटे छोटे बच्चे थे। यह भी इसका कार्यात्मक एलान था कि आप किसी पर हमला करने या किसी राज्य पर कब्ज़ा जमाने नहीं जा रहे थे। मगर आप इराक़ की सीमाओं में जो पंहुचे तो आपको पकड़ने के लिए यज़ीदी राज की ओर से सेना आ गयी। इस सेना ने आपको कर्बला के मैदान में रोक लिया और फिर इराक़ प्रान्त की राजधानी कूफ़े से जहां का राज्यपाल इब्ने ज़ियाद था, फौजों पर फ़ौजें आना शुरू हो गयीं। यहां तक कि चार पांच दिन के अन्दर कम से कम तीस हज़ार की सेना इमाम हुसैन और उनके छोटे से दल से मुक़ाबले के लिए आगई। सातवीं मुहर्रम से फ़ुरात नहर पर सेना का पहरा बैठ गया कि हज़रत इमाम हुसैन अ. के साथ का कोई आदमी पानी न ला सके। अब रसूल स. के बेटे और उनके साथियों पर प्यास छा गयी और छोटे छोटे बच्चे हाय प्यास! हाय प्यास!! की आवाज़ें उठाने लगे।

नवीं मुहर्रम की सैपहर को इब्ने ज़ियाद का पत्र उमर इब्ने साद के पास आया कि अब देर नहीं होना चाहिए, या तो हुसैन अ. यज़ीद की बैअत करें या फिर उनपर हमला करके उन्हें क़त्ल कर दिया जाय। इब्ने साद ने पत्र पढ़ते ही खुद कह दिया कि हुसैन बैअत तो नहीं करेंगे, उनके सीने में उनके बाप का दिल है, यानि किसी सांसारिक शासक की बैअत करना रसूल स. के घराने के सदा के उसूल के ख़िलाफ़ है। इस पर फ़ौरन उसने हमले का हुक्म दे दिया, मगर हज़रत इमाम हुसैन अ. ने अपने भाई हज़रत अब्बास को भेजकर एक रात की मुहलत (अवकाश) ले ली। इस लिए नहीं कि आपको इस एक रात में यज़ीद की बैअत के मसले पर फिर से विचार करना था, नहीं वह तो विचार का विषय था ही नहीं बल्कि आप चाहते थे कि आप आख़िरी बार पूरी रात ईश्वर की अराधना में बिता लें। फिर अपने साथियों को खतरे के निश्चित होने के बाद अवसर दे दें कि अगर आपका साथ छोड़कर जाना चाहें तो चले जायें। मगर इमाम हुसैन अ. के साथी कर्त्तव्य के ऐसे पहचानने वाले धर्मनिष्ठ थे कि उन्होंने इस अवकाश का इस तरह का कोई फ़ायदा नहीं उठाया और सबके सब सारी रात खुदा की इबादत अराधना में लगे रहे।

सुबह हुई, इब्ने सा'द ने अपनी सेना ठीक की। हज़रत इमाम हुसैन अ. ने भी अपने छोटे से जुट की व्यवस्था की, सेना की शैली में मैमना (दायीं टुकड़ी) और मैसरा (बायीं टुकड़ी) के नायक नियुक्त

¼cfd;k ist u0 7----------------ij½

कर्बला की पाठशाला

y§kd ¼mnZw½%tukc l¸;n bCusgqlSu udoh@ vuqokn %tukc l¸;n tkQj+ vlj udoh

हमारे सम्मुख है मुहम्मद स० साहब के जीवन का वह काल जबकि आप को एक दो दिन नहीं, वर्ष दो वर्ष नहीं अपितु तेरह सौ साल तक जिन विषभ परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, जो भेंट चढ़ानी पड़ी उसके लिए आपके मुख से निकले हुए शब्द पर्याप्त है कि जो कष्ट और अपत्ति मुझ पर पड़ी वह किसी अन्य नबी पर नहीं पड़ी। यह मक्के का जीवन था, इसके पश्चात् निरन्तर दस वर्ष तक मदीने में शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षा करते व्यतीत हो गये, कभी 'बद्र' का रणक्षेत्र है तो कभी 'ओहद' का युद्धस्थल, कभी 'खन्दक' का युद्ध है तो कभी ख़ैबर का जिहाद, और इनमें के प्रत्येक जिहाद में मुहम्मद साहब ने केवल इष्ट मित्र वरन् अपने परिवार के श्रेष्ठ व्यक्तियों की बलि चढ़ाते रहे।

तेईस वर्ष के निरन्तर परिश्रम, कठिनाइयों एंव बलिदान के पश्चात मुहम्मद साहब ने अनपढ़ अरबवासियों के मस्तिष्क में जो परिवर्तन उत्पन्न किये और जिस प्रकार अल्लाह के आदेशों का प्रसार किया था, आपकी मृत्यु के पश्चात ही उन शिक्षाओं को मुसलमानों के बहुदल ने पीठ पीछे डाल संसार की ओर अपना मुख मोड़ लिया।

अपने विशेष अधिकार का प्रदर्शन हज़रत अली अ० ने इसी लिए तो बारम्बार किया था कि अभी अवसर है कि मुसलमानों की शुद्धि की जा सके और उनको इस्लाम के पूर्व की दशा पर न पलटने दिया जाय। परन्तु जब मुसलमानों ने ध्यान न दिया तो आप पृथक हो गये और मौनता के साथ अपने उन कर्तव्यों के पालन में लीन हो गये जिनकी वे अल्लाह की ओर से उत्तराधिकारी थे, 25 वर्ष का लम्बा समय इसी प्रकार वयतीत हो गया इसके पश्चात वह समय आया जब मुसलमानों ने स्वयं उन्हें अपना ख़लीफ़ा बनाने की अभिलाषा प्रकट की।

यह घटना विचारनीय है कि अब से 25 वर्ष पूर्व हज़रत अली अ0 बारम्बार अपने अधिकारों को प्रकट कर रहे थे और कोई न सुनता था अब वही लोग अनुरोध कर रहे हैं कि आप हमारा नेतृत्व स्वीकार करें और आप बराबर इनकार कर रहे हैं। यह क्या था? प्रत्यक्ष है कि इन 25 वर्षों के मध्य मुसलमानों की प्रकृति इतनी बिगड़ चुकी थी कि अब उसमें किसी प्रकार का संशोधन होना कठिन दिखाई दे रह था।

जब उनका अनुरोध अधिक बढ़ गया तो हज़रत अली अ0 ने विवश होकर इस ज़िम्मेदारी को स्वीकार तो कर लिया, परन्तु यह कह दिया कि मैं तुमको उन्हीं शिक्षाओं पर चलाऊंगा जो मुहम्मद स० साहब ने दी थी। उस समय तो सब ने स्वीकार कर लिया, परन्तु संसार को ज्ञात है कि कि जिस प्रकार मुहम्मद स० साहब के जीवन में आप 23 वर्ष तक इस्लाम तथा क़ुर्आन के लिए जिहाद करते रहे उसी प्रकार आप को अपने जीवन के इस काल में भी 5 वर्ष तक क़ुर्आन के वास्तविक उपदेशों के प्रसार में जिहाद करते व्यतीत हुए।, कभी 'जमल' का रणक्षेत्र था, कभी 'सिफ्फीन' का घंघोर युद्ध और इसी क्रम में इस्लाम के शत्रुओं के विद्रोह का मुक़ाबिला और परिणाम में विषमय तलवार से अल्लाह के सजदे में शहादत (अमरत्व)।

हज़रत अली अ0 की शहादत के पश्चात अब उनके सुपुत्र इमाम हसन अ0 पर ईश्वर की ओर से उसके उपदेशों की सुरक्षा का भार आ पड़ा। आपने अपने नाना तथा पिता के रक्त से सींचे गये इस्लाम के वृक्ष की सिंचाई आरम्भ की। परन्तु अब परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि सीरिया शाम देश सम्पूर्ण रूप से बनी उमय्या के आधीन आ चुका था और मुक़ाबला उससे था जो उनके पिता से निरन्तर छः मास तक युद्ध करके धोखा देकर और चतुराई के द्वारा सफलता प्राप्त कर चुका था। मुसलमानों की गाढ़ी कमाई से एकत्र किए हुए कोष के द्वार खोल कर बड़े बड़े व्यक्तियों को खरीद लिया गया था और आम मुसलमान इस्लाम की शिक्षाओं को भुला चुके थे।

हज़रत इमाम हसन अ0 ने जब यह देखा कि

अब इनका संशोधन अधिक रक्तपात के पश्चाात भी सम्भव नहीं तो आपने एक ऐसे सन्धि पत्र के द्वारा जिससे इस्लाम धर्म की सम्पूर्ण सुरक्षा हो सकती थी, मुसलमानों के वाध्य तेतृत्व से अलग होकर मौनता पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। परन्तु इतिहास साक्षी है कि सीरिया नरेश को उनका मौन एंव शान्त जीवन भी प्रिय न लगा और उनको विष दिलाकर उनके जीवन के दीपक को बुझा दिया और शहादत के समाचार सुनकर 'अल्लाहो अकबर' का नारा मारा।

इमाम हसन अ0 ने सन्धि पत्र में मुख्य शर्त रखी थी कि सीरिया नरेश को अपने पश्चात किसी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार न होगा वरन् मुसलमानों के नेतृत्व का सौभाग्य बनी हाशिम को ही प्राप्त होगा। सीरिया नरेश ने जिस प्रकार इस सन्धि पत्र की किसी धारा का पालन न किया उसी प्रकार इस शर्त को भी ठुकरा दिया, और अपने जीवन में अपने धन और सांसारिक शक्ति के बल पर मुसलमानों को ख़रीद लिया और अपने दुराचार, मानवशत्रु और धर्मावलम्बी कुपुत्र यज़ीद को अपना उत्तराधिकारी घोषित करके मुसलमानों से बैअत (अपने आधीन करना) प्राप्त कर ली।

अब ऐसा समय आ गया था कि इस्लाम सहायता के लिए पुकार रहा था और ईश्वर की ओर से उसकी सुरक्षा का भार इमाम हुसैन अ0 पर आ चुका था। सन् 60 में इधर सीरिया नरेश का देहान्त हुआ उधर यज़ीद ने खिलाफत के सिंहासन पर बैठते ही मदीना के गवर्नर को यह आदेश भेजा कि ''हुसैन से मेरी बैअत'' लो और न मानें तो उनका सिर काट कर मेरे पास दमिश्क़ भेज दो।

मुहम्मद मुस्तफ़ा स0 की गोदी का पाला हुआ उनका पुत्र, अली अ0 तथा फातिमा स0 के हृदय का टुकड़ा हसन–ए–मुजतबा का छोटा भाई तथा ईश्वर की ओर से इस्लाम की रक्षा पर नियुक्त किया हुआ हुसैन अ0 और उसके समक्ष यज़ीद की 'बैअत' का प्रश्न? यह वह परिवर्तन है जो मुहम्मद साहब के देहान्त के बाद केवल पचास वर्ष के भीतर इस्लामी जगत में हुआ।

vc gqlSu gqvk ;thn ,oa ;thfnRo dsbl pSya dk eqdkfcyk

इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि हुसैन ने असत्य के इस चैलेंज को स्वीकार करके इसका उत्तर किस प्रकार दिया। इस्लाम के प्रारम्भिक आदेशों की सुरक्षा के नियमों को दुष्टि में रखते हुए, नाना का रौज़ा, माता की कब्र तथा भाई के मज़ार को छोड़ा और मदीने से 'देश निकाला' पाकर मक्के की पवित्र भूमि पर पदार्पण किया।

संसार का गुण ही दुख है। यहां की परिस्थिति सदैव समान नहीं रहती। एक समय था जब नाना का मक्के से देश निकाला दिया गया तो आपने मदीने में शरण ली, परन्तु नाती को मदीने की धरती पर रहने न दिया गया, वह असत्य के सहयोग से स्वयं को सुरक्षित रखने के हेतु मक्के में शरण लेना चाहता था। यह वह पवित्र धरती है जहां इस्लाम धर्म की शिक्षाओं के अनुसार किसी पशु तक को दुख पंहुचाना 'जायज़' (उचित) नहीं है। परन्तु रसूल के पुत्र का इसी धरती पर वध करने के लिए सीरिया के पशु रूपी सिपाही हाजियों के वेश में भेज दिये गये और हुसैन अ0 को ईश्वर मन्दिर (खाना–ए–काबा) के आदर को सुरक्षित रखने के हेतु हज किये बिना ही वहां से लौटना पड़ा।

अब हुसैन अ0 कहां जायें? कुफ़ा के निवासी निरन्तर पत्र भेज भेजकर यह अनुरोध कर रहे थे, कि आप हमारी हिदायत (पथ प्रदर्शन) के लिए कुफ़ा आइए। आप अपने भाई हज़रत मुस्लिम आत्मज अक़ील को वहां की परिस्थिति ज्ञात करने के लिए भेज चुके थे और उन्होंने लिखा था कि आप यहां आइये, ये सब आपकी शिक्षाओं और आदेशों का पालन करने को तैयार हैं। हुसैन अ0 उसी ओर मुड़ गये और अब यात्रा में विपत्तियों का समावेश होता गया। रसूल स0 के परिवार की आदरणीय स्त्रियां और छोटे छोटे बालकों का साथ, अरब का जलता हुआ मरूस्थल, दूर तक जल का पता नहीं परन्तु बलिदान स्थान तक पहुचने के लिए कठिन से कठिन मार्ग से होते हुए चले जा रहे हैं।

इधर कूफ़े में इब्ने ज़ियाद के राज्य के स्थापन के पश्चात ऐसा परिवर्तन होता है कि हुसैन अ0 के दूत मुस्लिम का वध कर डाला जाता है। उधर 'हुर' की सेना इमाम हुसैन अ0 का घेराव करती है कि उनको कुफे ले जा कर यज़ीद के सामने उपस्थित कर दे। रसूल के सुपुत्र ने इनकार कर दिया और कर्बला की ओर चले। हुर साथ–साथ है। आपने फ़ुरात नदी के तट पर अपने शिविर लगवाये शत्रु की सेना ने प्रतिरोध किया, युद्ध की परिस्थिति उत्पन्न हो गई

परन्तु समस्त संसार के लिए हितकारी बन कर आने वाले रसूल के नाती ने नदी के तट से अपने शिविर हटवा कर मरूस्थल में लगवा दिये। और इस अवसर पर भी युद्ध को प्रिय न किया।

यह सेना वही तो थी जिसे अभी कुछ दिन पूर्व हुसैन ने अपने साथ का पानी पिला दिया था। इस परिस्थिति में कि उस सेना के एक हज़ार व्यक्ति तृष्णा से व्याकुल थे और उनके मुख से उनकी जिहवा बाहर निकल आयी थी। इमाम हुसैन ने परिणाम की चिन्ता किये बिना अपने साथ का समस्त जल उनको पिला दिया था। क्या संसार मानव पर दया का इस से उच्चतर कोई आदर्श प्रस्तुत कर सकता है?

यदि हुसैन उस जल को सुरक्षित रखते तो एक ओर शत्रु की सेना के एक हज़ार व्यक्ति युद्ध किये बिना ही समाप्त हो जाते और दूसरी ओर जल का वह कोष इतना अधिक था कि वह महीनों इमाम हुसैन अ० और उनके साथियों के काम आता और शत्रु ने घाट रोकने की जो योजना बनाई थी वह सफल न हो पाती। परन्तु यह कार्य वह व्यक्ति कर सकता था जिसके समक्ष सांसारिक विजय होती। वे हुसैन थे जो सांसारिक मायाजाल में फंसे हुए व्यक्तियों से युद्ध करने और प्रभुत्व की विजय के हेतु रणक्षेत्र में आये थे। उनको प्रत्येक स्थान पर वास्तविक इस्लाम की शिक्षाओं को संसार के समक्ष प्रस्तुत करना था। उन से यह कहां सम्भव था कि मनुष्य तो मनुष्य किसी जीव तक को भी कष्ट देना सहन कर सकें।

इतिहास साक्षी है कि शत्रु की सेना के प्रत्येक सैनिक को पानी पिलाने के साथ साथ प्रत्येक घोड़े के सामने भी कई कई बार जल लाया जाता था और जब तक वह सन्तुष्ट होकर मुख न हटा लें उसके आगे से जल हटाया न जाता था। क्या कहना हुसैन के इस उच्च चरित्र का कि शिविर नदी के तट से हटा दिये और अपनी इस महान कृतज्ञता का वर्णन तक न किया।

इस्लाम युद्ध का विरोधी है, वह संसार में शान्ति का सन्देश लेकर आया था। वह विश्व शान्ति का अग्रदूत था। पैग़म्बर–ए–इस्लाम और उनके कुटुम्बी जो उनके वास्तविक पदाधिकारी (उत्तराधिकारी) थे उनके सम्पूर्ण जीवन का अध्ययन करने के पश्चात भी, संसार एक भी ऐसा उदाहरण नहीं प्रस्तुत कर सकता इन महापुरूषों ने किसी पर प्रहार अथवा आक्रमण किया हो। इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि जो युद्ध इस्लाम से हुआ वह मदीना के निकटवर्ती क्षेत्रों में हुआ, यदि मुहम्मद साहब आक्रमण करते तो रणक्षेत्र मक्का के निकट होता न कि मदीना के। जब उन पर आक्रमण किया गया तो उनको प्रतिरक्षा पर विविश होना पड़ा।

इस्लाम केवल उन शिक्षाओं का उत्तराधिकारी है जिसे उसने संसार के समक्ष प्रस्तुत किया था वह उन विजेताओं की कार्यवाहियों का उत्तराधिकारी नहीं जिन्होंने देशों पर विजय प्राप्त करने के हेतु दूसरों पर आक्रमण किया और इस्लाम को बदनाम किया। वे उनके निजी कर्म थे जिस के उत्तराधिकारी (उत्तरदायी) वे स्वयं थे न कि इस्लाम।

इस्लाम देशों पर विजय प्राप्त करने नहीं आया था, वह तो संसार वासियों के हृदय को जीतने आया था। जो ईश्वर की ओर से वास्तविक इस्लाम के रक्षक थे, उन्होंने ईश्वर की शिक्षाओं का प्रचार जिस प्रकार किया वह इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित है और बुद्धि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह निमंत्रण देता है कि वे वास्तविक इस्लाम का अध्ययन उनके आचरण तथा चरित्र के दर्पण में करे।

इस्लाम संस्थापक के पश्चात हज़रत अली अ0 ने भी यथासम्भव चेष्टा की कि युद्ध न करना पड़े, परन्तु जब बसरा तथा सीरिया की ओर से आक्रमण हुआ तो विवशतः उनको प्रतिरक्षा के लिए लड़ना पड़ा। इमाम हसन अ0 ने तो सांसारिक राज्य ही को ठोकर मार दी।

इमाम हुसैन अ० के सामने उनके नाना, पिता तथा बड़े भाई के जीवनादर्श थे। वे भी एकान्तमय जीवन व्यतीत कर रहे थे परन्तु उनको विवश किया गया कि या तो वे यज़ीद की 'बैअत' करें अन्यथा मरने पर तैय्यार हो जायें। हुसैन अ० के लिए मरना सरल था परन्तु अधर्म के आगे सीस झुकाना सम्भव न था इसलिए कि यज़ीद केवल हुसैन अ० ही को 'बैअत' पर विवश नहीं कर रहा था वरन वास्तव में यह प्रश्न पैगम्बरे इस्लाम से था, हज़रत अली अ० से था। इमाम अपितु स्वयं ईश्वर से था।

यज़ीद, हुसैन अ० के उच्चतर पद से अवश्य परिचित था, और इसी आधार पर उनसे बैअत चाहता था, नहीं तो उसके राज्य की सीमाओं में सैकड़ों नहीं सहस्त्रों वयक्ति ऐसे पड़े होंगे जिनको बैअत पर

विवश न किया गया होगा। परन्तु यज़ीद हुसैन अ० को केवल जानता था पहचानता न था। उसको यह अनुभव ही न था कि हुसैन युग के लौह पुरूष हैं। वह संसार का कुत्ता यह नहीं समझ सकता था कि ईश्वर जिन व्यक्तियों को अपने आदेशों के प्रसार और सुरक्षा के लिए चुनता है, वे वही होते हैं जो इसके योग्य होते हैं वे मनुष्यों द्वारा निर्वाचित तथा सांसारिक वैभव एंव शक्ति से प्राप्त किए हुए राज्यों के राजा हो सकते हैं जो अवसर को पहचान कर पालिसी अथवा डिप्लोमेसी से कार्य करते हैं। ईश्वर का नियुक्त किया हुआ पथ प्रदर्शक केवल ऐश्वरीय आदेशों का पालन करता है। वह कैसी ही कठिन से कठिन परिस्थिति क्यों न हो ऐश्वरीय शिक्षाओं का उल्लंघन नहीं करता।

2 मुहर्रम सन् 61 हि0 को हुसैन ने कर्बला की धरती पर पदार्पण किया और कर्बला की पाठशाला की शिक्षाओं का क्रम आरम्भ हो गया। कर्बला की रणभूमि शत्रु की सेनाओं के क्रमानुसार आगमन से छलकने लगी। हुसैन अ० का चारों ओर से घेराव कर लिया गया, परन्तु आप तथा आप के साथियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आप अब भी उन परिस्थितियों की खोज में हैं कि आप के उद्देश्य की सुरक्षा के साथ साथ कठिनाइयों से समझौता हो जाये और युद्ध न करना पड़े। आप के कार्य का ढंग इतना सुलझाा हुआ था कि शत्रु की सेना का सेना पति उमर–ए–साद भी यह स्वीकार कर रहा था कि हुसैन अ० सन्धि चाहते हैं। उसने कूफ़े के गवर्नर इब्ने ज़ियाद को इस प्रकार का पत्र भी लिखा परन्तु वह राज्य के गर्व और नशे में लीन था, वह हुसैन अ० को पहचानता ही न था कि उन में कितनी सहनशीलता विद्यमान है और वे अपने उद्देश्य की रक्षा के लिए कैसी कैसी कठिनाइयों का मुक़ाबला कर सकते हैं। वह हुसैन अ० की सन्धिप्रियता को उनकी क्षीणता समझ बैठा और उत्तर दिया बस उनका 'बध' अथवा 'बैअत'।

मुहम्मद अ० साहब तथा उनके वास्तविक पदाधिकारियों (उत्तराधिकारियों) ने अधर्म तथा असत्य की 'बैअत' न स्वीकार करने का जो प्रण किया था वह प्रत्यक्ष रूप से संसार के समक्ष था। स्वयं शत्रु की सेना के सेना पति 'उमर–ए–सअद' ने इब्ने ज़ियाद का पत्र पढ़कर कह दिया था कि ईश्वर की सौगन्ध हुसैन अ० 'बैअत' नहीं करेंगे उनके वक्ष में उनके पिता का हृदय है और इस प्रकार शत्रु अपने मुख से सत्य धर्म को स्वीकार कर रहा था। अब संसारवासी विचार कर सकते हैं कि जिसके नाना तथा पिता ने अधर्म का साथ देने से इनकार कर दिया हो, उसका सुपुत्र अधर्म के आगे किस प्रकार शीश झुका सकता है। यह एक निश्चित उद्देश्य था और ईश्वर की ओर से हुसैन अ० इसके उत्तराधिकारी थे कि वे सत्य की रक्षा के लिए असत्य के प्रत्येक प्रहार का मुकाबिला करें। और इस मार्ग में हर प्रकार का बलिदान प्रस्तुत करके ईश्वरीय आदेशों की रक्षा करते रहें और किसी स्थान पर सत्य की पताका झुकने न दें।

9 मुहर्रम को सांय काल शत्रु की सेना ने इब्ने ज़ियाद के आदेशानुसार अक्रमण भी कर दया परन्तु हुसैन अ० ने उस समय भी युद्ध को प्रिय नहीं किया। हुसैन अ० का भाई अब्बास जो सिंह का ह्रदय रखता था उसको हुसैन अ० ही थे जो फ़ुरात के किनारे से अपनी सौगन्ध देकर यह कह कर लौटा लाये थे कि मैं युद्ध में पहल नहीं करूंगा। यह एक मुख्य इस्लामी उद्देश्य की शिक्षा थी और इस उद्देश्य की पूर्ति में अब्बास की तलवार म्यान में तो चली गई, परन्तु शक्ति के वेग में दांतों से अपने होटों को चबा रहे थे, परन्तु समय के इमाम की आज्ञा का पालन करना अपना धर्म समझते थे। अब अब्बास की अभिलाशाओं की पूर्ति का समय आ गया शत्रु ने आक्रमण कर दिया प्रसन्न होकर आते हैं और इमाम हुसैन अ० से कहते हैं। "भाय्या ! शत्रु की सेना ने आक्रमण कर दिया।" तात्पर्य यह था कि बस अब तो हम उन से युद्ध कर ही सकते हैं।

हुसैन अ० अपने वीर भाई को यह उत्तर देते हैं, कि शत्रु से एक रात्रि का अवकाश लेलो, जिससे कि हम एक रात्रि और ईश्वर की इबादत (उपासना) में व्यतीत कर लें। कहां तो अब्बास की शत्रु से युद्ध करने की उमंग और कहाँ शत्रु से अवकाश प्राप्त करने की प्रार्थना। मैं अब्बास जैसे व्यक्ति का हुसैन अ० की आज्ञा के पालन पर बाध्य होना हुसैन अ० के इमाम होने का एक प्रमाण समझता हूं। अपितु जिस व्यक्ति की उत्पित्त का उद्देश्य ही यह हो कि वह सत्य की रक्षा के प्रति असत्य से युद्ध करे, उसका इस प्रकार अपनी भावनाओं पर अधिकार रचाना असम्भव था।

भावनाओं का वशीभूत न होना केवल मासूमों (जिन से कोई अपराध एंव गलती न हो) ही की

विशेषता है। परन्तु मुहम्मद साहब के परिवार का प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह मासूम न भी हो इसी विशेषता का प्रतीक था। उनकी प्रत्येक गतिविधि ईश्वर की प्रसन्नता के लिए थी। वे भावनाओं का वशीभूत बनकर कोई कार्य न करते थे वरन् प्रत्येक स्थान पर रसूल अल्लाह के आदर्शों पर बाध्य दृष्टिगोचर होते थे। यही रहस्य है कि मासूम की 'ग़ैबत' में हम पर जिहाद वर्जित है।

कर्बला की पाठशाला हमें बता रही है कि 'मासूम' प्रत्येक स्थान से होकर किस प्रकार आगे बढ़ते रहे। कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना हुआ, परन्तु युद्ध न किया। 'हुर' घोड़ा रोकता है, युद्ध नहीं करते नदी के तट से शिविर हटा लेने की बात होती है युद्ध नहीं करते। शत्रु की सेना आक्रमण कर देती है परन्तु युद्ध नहीं करते। वह जो 'मासूम' न हो इन विषभ परिस्थितियों का सामना सहनशीलता के साथ कर ही नहीं सकता। कर्बला के युद्ध में इमाम हुसैन अ० ने इस्लामी शिक्षाओं के जो चिन्ह छोड़े हैं और जो इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित हैं वे मानव जगत के लिए और मुख्य रूप से हमारे लिए प्रलय तक का पथप्रदर्शन करते हैं ईश्वर हमें सौभाग्य प्रदान करे कि हम हुसैनी शिक्षाओं पर चले सकें।

हुसैन अ० को एक रात्रि का अवकाश मिल गया। यह रात्रि शत्रु से मांगकर इस कारण प्राप्त की गई है कि जीवन की अन्तिम रात्रि को हुसैन अ० और उनके साथी अपने जन्मदाता की और उपासना कर लें। इतिहास साक्षी है कि ऐसी उपासना, ईश्वर की इस धरती पर न इसके पूर्व कभी हुई थी और न प्रलय तक संसार इसका कोई उदाहरण प्रस्तुत कर सकेगा।

कर्बला में इमाम हुसैन अ० ने न केवल हमारे लिए अपितु प्रत्येक मनुष्य के कल्याण के लिए अपने चरित्र तथा कार्यवाहियों के जो उच्च आदर्श प्रस्तुत कर दिए हैं वे यदि एक ओर मानव बुद्धि को आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं तो दूसरी ओर ऐश्वरीय शिक्षाओं के प्रकाश में हमारे जीवन को ऐश्वरीय इच्छाओं के अनुकूल संवार देने के भी उत्तराधिकारी हैं। काश कि कभी हम उन पर विचार करें और उनसे भी लाभ उठायें।

जीवन की इस अन्तिम रात्रि को हुसैन अ० ने ईश्वरोपासना के अतिरिक्त जो और कार्य किए उन में से एक कार्य यह भी था कि अपने परिवार की स्त्रियों के पर्दे और उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध भी कर दिया। इमाम हुसैन अ० शत्रु की शराफ़त और उनके धर्म को भलीभांति परखे हुए थे। वे जानते थे कि ये ऐसे नीच और कमीने व्यक्ति हैं कि वे अरबों के उन आम नियमों का उल्लंघन करेंगे जिन पर उन को गर्व था और उनके माथे का कलंक बन कर ये नीच व्यक्ति युद्ध के बीच पीछे से शिविर पर आक्रमण कर देंगे। अतः इस विचार को ध्यान में रखते हुए हुसैनअ० ने उसी रात्रि को शिविर के चहु ओर गड्ढ़ा खुदवा कर उसमें आग जला दी जिससे मुकाबला आमने सामने से हो और शत्रु पीछे से प्रहार न कर सके।

क्या हुसैन अ० को यह ज्ञात न था कि उनकी शहादत के पश्चात इन ही शिविर में आग लगा दी जाएगी और उनके परिवार की माननीय स्त्रियां बन्दी बना ली जाएंगी और उनको दर बदर फिराया जाएगा। वस्तुतः आप इसको जानते थे परन्तु उनको पाठ पढ़ाना था कि देखो मनुष्य जब तक जीवित है उसका यह कर्तव्य है कि वह अपने साथ की स्त्रियों के पर्दे तथा उनकी सुरक्षा का पूरा पूरा ध्यान रखे।

इमाम हुसैन अ० की इस मुख्य शिक्षा पर विशेष रूप से उन व्यक्तियों को ध्यान देने की आवश्यकता है जो मुसलमान और ईमान वाले होते हुए भी स्त्रियों के पर्दे के विरोधी हैं, जो इस्लामी शिक्षाओं के विरूद्ध हैं।

इतिहास के पृष्ठ 10 मोहर्रम की इस रात्रि की घटनाओं में से इमाम हुसैन की एक और कार्यवाही प्रस्तुत करते हैं जो अद्वितीय है। वह व्यक्ति जिसका मुक़ाबला किसी शत्रु से हो वह अपने सहयोगियों की संख्या में वृद्धि चाहता है, परन्तु हुसैनअ० इसके विरूद्ध अपने सहयोगियों को यह आज्ञा दे रहे थे कि वे उनका साथ छोड़कर जहां मन चाहे चले जाएं।

विचार कीजिए कि हुसैन के विरोध में शत्रु की जो सेना थी उसकी संख्या कम से कम तीस हज़ार थी और हुसैन के सहयोगियों की संख्या मुश्किल से सौ सवा सौ थी जिनमें बालक भी थे, अधेड़ भी थे और वृद्ध भी थे। होना तो यह चाहिए था कि आप अपने साथियों में से प्रत्येक की उपस्थिति को ही बहुत जानते और किसी को भी अपने से अलग न करते परन्तु आपने समस्त सहयोगियों को एकत्र किया, उनमें बनी हाशिम के गौत्र वाले भी थे और इष्ट मित्र भी थे। आपने उनसे कहा

कि मैं तुम सब को अपनी बैअत से मुक्त करता हूं, रात्रि के अन्धकार में जिधर चाहो चले जाओ, मुझे तुम्हारा जीवन प्रिय है, मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा भी मेरे साथ बध कर डाला जाये। मैं अकेला ही इस आपत्ति पर विजय प्राप्त करने के लिए काफी हूं।

हुसैन अ० के साथ कौन व्यक्ति थे? ये उस समय के इस्लामी जगत के संकलित (चयनित) और हुसैन अ० जैसे व्यक्ति के चुने हुए ईमानदार व्यक्ति थे, जिनके सम्बन्ध में आपने अपने उस समय के भाषण में कहा था कि ''मुझको ज्ञात नहीं कि किसी को ऐसे मित्र और सहायक मिले हों, जैसे तुम लोग हो।'' ये शब्द किसी और व्यक्ति के मुख से नहीं उच्चारित हुए, ये समय के इमाम के मुख से निकले हुए शब्द हैं जो इस बात का प्रमाण है। ये लोग इन्हीं विशेषताओं के प्रतीक थे यह एक तथ्य है कि हुसैन अ० के नाना, इस्लाम कै पैग़म्बर, पिता हज़रत अली अ० तथा बड़े भाई इमाम हसन अ० की एक समय में इन सभी विशेषताओं के वाहक इस संख्या में ईमान वाले और उच्च चरित्र के वाहक (चरित्रधारी) न मिल सके थे।

सन् 60 हिजरी में इस्लाम पर वह समय पड़ गया था कि अब ईमान वालों के समक्ष अपने जीवन से अधिक स्वयं इस्लाम के जीवन और मृत्यु का प्रश्न उपस्थित था, जब उन्हें हुसैन अ० जैसा इस्लाम रक्षक मिल गया जो अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने के लिए मैदान मे आगया था, तो इस अवसर को उन्होंने अपने लिए स्वर्ण अवसर समझा और इस्लाम की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान देने पर तत्पर हो गए।

'बनी हाशिम' अर्थात 'अबू तालिब' के वंशज का तो जन्म ही इस कारण हुआ था, उनके शरीर के कण कण में इस्लाम की रक्षा के उत्साहमय सागर आरम्भ से ही हिलोरें ले रहा था। उनके समक्ष अबू तालिब का वह दुखमय जीवन था जो उन्होंने मुहम्मदस० साहब तथा उनके संदेशों की रक्षा के सम्बन्ध में व्यतीत किया था। उनको स्मरण थे अबू तालिब के सुपुत्र जाफ़र–ए–तय्यार तथा हज़रत अली अ० के वे महान बलिदान जो वे इस्लाम की रक्षा के सम्बन्ध में यथा सम्भव देते रहे और ईश्वर के इसी संदेश की रक्षाा में शहीद होकर वे अमर हुए। अतः हज़रत 'अब्बास' आत्मज हज़रत 'अली' ने तो वही कहा जो उन्हें कहना चाहिए था। परन्तु धर्म तथा अधर्म के इस भीषण युद्ध के अवसर पर इस्लाम के रक्षकों का इस मात्रा (संख्या) में एकत्र हो जाना एक ऐश्वरीय कार्य था जो वास्तव में रसूल के कुटुम्बियों (परिजनों) के उन मौन प्रचार का परिणाम था जो वे पचास वर्ष तक धर्म के मार्ग में बलि चढ़ाकर करते रहे। जब समय आया तो ज्ञात हुआ कि उन पवित्र व्यक्तियों ने जो कि ईश्वर की ओर से इस संदेश के प्रसार और उसकी रक्षा पर नियुक्त किए गए थे कितने व्यक्तियों की नाड़ियों में ईमान की लहर का संचार कर दिया था। अब देख लीजिए कि हुसैन अ० के सहयोगियों में से एक एक रक्षक किन शब्दों में अपने ईमानी वेग का प्रदर्शन कर रहा था और हुसैन अ० के वापस लौटाए हुए जीवन को उनके चरणों पर न्योछावर कर देने की अभिलाशा प्रकट कर रहा था।

कोई कहता है कि ऐ रसूल के सुपुत्र! हम आपको शत्रुओं में छोड़ दें, आप के नाना को प्रलय के दिन क्या मुख दिखलाएंगे? कोई कहता है कि हम आप के पश्चात जीवित रहकर क्या करेंगे, हम किसी को मुख दिखाने के योग्य भी न होंगे! कोई कहता कि मेरे स्वामी यह तो शरीर से केवल एक बार ही सिर कट रहा है, आप की रक्षा करते हुए यदि हमको सौ बार भी मृत्यु आए और ईश्वर हमें पुनः जीवन प्रदान करे तो अन्तिम बार भी हम अपना जीवन आप ही के चरणों में अर्पित करेंगे, परन्तु आपका साथ नहीं छोड़ेंगे।

इमाम हुसैन अ० अपने साथियों को भलीभांति पहचानते थे, उन्हें तो संसार के समक्ष अपने उन संकलित व्यक्तियों के ईमान के स्तर को स्पष्ट कर देना था, कि देखो ये वे लोग हैं जो इस्लाम के सच्चे पथगामी हैं 'मेरे साथ किसी सांसारिक वैभव की लालसा में नहीं आए थे अपितु वे स्वंय इस अवसर पर अपने ईमानी कर्तव्य को समझ रहे थे कि ईश्वर के आदेशों की सुरक्षा के सम्बन्ध में वे भी मेरे साथ ईश्वर के मार्ग में धर्म युद्ध करने वाले इन व्यक्तियों ने 10 मोहर्रम की रात्रि को जो कुछ कहा था वह दस मोहर्रम के दिन कर दिखाया।'

वह दृष्य जब शत्रु की टिड्डी दल सेना ने अकस्मात आक्रमण कर दिया, और यह चाहा कि इन मुट्ठी भर व्यक्तियों को घोड़ों की टापों से पीस कर रख दें, उस अवसर पर इन साहसी सैनिकों ने जो कार्य किए वह उनके ईमान तथा दृढ संकल्प का ऐसा आदर्श था जो

मानव बुद्धि को आश्चर्य चकित कर देने वाला है।

इमाम हुसैन अ० के सहयोगियों की यह अभिलाषा थी कि उनके जीवन में हुसैन अ० तथा उनके परिवार के किसी सदस्य पर कोई आंच न आने पाए। अब देखिए कि उन्होंने इस सम्बन्ध में अपने इस ध्येय को ध्यान में रखते हुए तीन दिन की भूख और प्यास में जो कार्य करके दिखा दिया, हम उसे सोच भी नहीं सकते हैं! विचार कीजिए कि अकस्मात पांच हज़ार घोड़े सवारों का आक्रमण और उसका मुक़ाबला, हमारे प्राण न्योछावर हों इस्लाम के उन रक्षकों पर जिन्होंने शत्रु के इस आक्रमण का इस प्रकार मुक़ाबला किया कि धरती पर घुटने टेक दिए और अपनी कटारों की नोक पर घोड़ों को रोक लिया और मुक़ाबला आरम्भ कर दिया और ऐसा युद्ध हुआ कि परिणाम में शत्रुओं को परास्त होना पड़ा। ध्यान दीजिए कि इस युद्ध के समय में कैसी परिस्थिति रही होंगी! क्या केवल रक्षक ही युद्ध करते रहे होंगे और 'बनी हाशिम' चुप चाप खड़े होंगे? जी नहीं, यह बुद्धि के विरूद्ध है। वास्तव में सहयोगियों तथा बनी हाशिम गोत्र का प्रत्येक व्यक्ति उस समय प्रतिरक्षा में लवलीन होगा। रेत के गर्द में कोई किसी को देख न सकता होगा और यह युद्ध दस पांच मिनट तक न रहा होगा अपितु दो घण्टा जमकर मुक़ाबला हुआ होगा। इस कारण कि शत्रु की सेना पांच हज़ार थी और इनलड़ने वालों की संख्या अधिकाधिक सौ, सवा सौ! इसी से अनुभव (अनुमान) किया जा सकता है कि शत्रु की इतनी बड़ी सेना को पराजित करने में इमाम हुसैन अ० के सहयोगियों को कितने समय तक युद्ध करना पड़ा होगा।

आक्रमणकारी सेना पराजित तो हो गयी ओर निस्सन्देह उसको अधिक जानी क्षति भी उठानी पड़ी होगी, परन्तु वहां संख्या इतनी अधिक थी कि हज़ारों की कमी का कोई प्रभाव न पड़ सकता था, यहां संख्या इतनी कम थी कि एक व्यक्ति की कमी का भी अनुभव किया जा सकता था। जबकि धूल छटने के बाद रणक्षेत्र में पचास रक्षकों की लाशें तड़पती हुई मिलीं। इमाम हुसैन अ० ने प्रत्येक के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और यही वह अवसर था कि आप के मुख से यह शब्द निकले थे कि मेरे सहयोगियों की अधिक संख्या समाप्त हो गई।

ईश्वर के मार्ग में लड़कर मरने वाले इन शहीदों ने अपना बलिदान देकर शत्रु को यह समझा दिया कि इन के जीवन में वह अपने ध्येय में सफ़ल नहीं हो सकता, और इसी कारण इस युद्ध के बाद 10 मुहर्रम की संध्या तक फिर शत्रु का साहस न हुआ कि वह इस प्रकार आक्रमण कर सके। अब यह युद्ध एक एक व्यक्ति से होता रहा। हां ये कायर और कमीने व्यक्ति जब एक एक बालक का भी मुक़ाबला न कर पाते थे तो उसको घेर कर उसका बध कर डालते थे।

प्रकुति ने मनुष्य को जो विशेषताऐं प्रदान की हैं उनमें एक विशेषता दृढ़ संकल्प भी है और इसके उच्चतर स्तर का अनुभव (अनुमान) हमें केवल हुसैन के सहयोगियों की कार्यकुशलताओं से ही हो सकता है। उनकी यह अभिलाषा थी कि उनके स्वामी इमाम हुसैन अ० और बनी हाशिम गौत्र वाले उनके जीवन में सुरक्षित रहें। इस अकस्मात आक्रमण में हमारी बुद्धि काम नहीं करती कि किस प्रकार ये सैनिक इस दशा में कि धूल उड़ाने के कारण एक दूसरे को दिखाई भी न दे सकता था, शत्रु की इस भारी संख्या का मुक़ाबिला भी करते रहे और अपने स्वामी तथा उनके कुटुम्बियों की रक्षा भी करते रहे और अपने ध्येय की पूर्ति में सफ़ल भी हो गये। इतिहास हमें नहीं बताता कि इस युद्ध के अवसर पर बनी हाशिम गौत्र के किसी सदस्य को भी हानि पंहुची हो। बस यह हुसैन अ० के सहयोगियों के इसी दृढ़ संकल्प का चमत्कार था कि वे अपने इस महान ध्येय की पूर्ति में सफ़लता प्राप्त कर ले गये।

देखिए विश्व की प्रणाली बलिदान पर ही आधारित है। और प्रकृति का विधान यह है कि प्रत्येक नीच अपने से उच्च के लिए बलिदान प्रस्तुत करता रहे। प्रत्यक्ष रूप से तो उसका विनाश होगा, परन्तु अपने से उच्च का अंश बनकर उच्चता की ओर अग्रसर होता रहेगा।

मिट्टी अपने से उच्च के लिए जब बलिदान देती है तब ही वनस्पति का जन्म होता है। देखने में तो मिट्टी का विनाश हुआ, परन्तु उसने वनस्पति का अंश बन कर एक ओर तो उस ध्येय की पूर्ति की जिस के लिए उसका जन्म हुआ था दूसरी ओर प्रगति के एक स्तर से आगे बढ़ गई। इस प्रकार वनस्पति ने जन्तुओं का आहार बन कर अपनी बलि दी और अपने से उच्च का अंश बन कर उच्चता के शिखर पर पंहुची। अब मनुष्य की बारी आई यह शिरोमणि था।

चूंकि उससे मिट्टी, वनस्पति तथा जीव जन्तु सब ही नीच थे अतः इन सभी वस्तुओं ने उसके लिए अपनी बलि चढ़ाई और मनुष्य को इस प्रकार यह अधिकार प्राप्त हुआ कि वह इन सभी वस्तुओं का प्रयोग करे।

अब यह विचारणीय है कि जो वस्तुएं मनुष्य से नीच थीं वे तो प्रगति की ओर अग्रसर होती रहीं परन्तु मनुष्य जो इनमें से प्रत्येक वस्तु से श्रेष्ठ था क्या उसके लिए प्रगति का कोई स्तर था ही नहीं? यदि ऐसा होता तो वह कदापि शिरोमणि कहे जाने का भागी न होता। वास्तव में उसके जन्म का भी कोई उद्देश्य है और उसके लिए कोई उच्चतर स्थान भी है।

ईश्वरीय शिक्षाओं के प्रकाश में मनुष्य के जन्म का कारण आज़माइश (परीक्षा) बताया गया है। अतः जो दुःख के जिस स्तर पर पीड़ित होगा और उस परीक्षा में जिस हद तक सफ़लता प्राप्त करेगा उसको उतना ही उच्च स्थान प्राप्त होगा। समस्त ईश्वरीय दूत तथा महापुरूष कठिन परीक्षाओं से आगे बढ़ते रहे और जिसने जैसी परीक्षा दी वैसा ही उच्च स्थान उसको प्राप्त हुआ।

हज़रत इब्राहीम अ० से पूर्व परीक्षा केवल नबियों (ईश्वर दूतों) से ही ली जाती रही, परन्तु इब्राहीम का स्तर उच्च था अतः उनकी परीक्षा का क्रम उन के साथ–साथ उनके पुत्रों तक पंहुचा, और ईश्वर की इच्छा के लिए उनको अपने प्रिय पुत्र इस्माईल अ० का बलिदान देने के लिए तत्पर होना पड़ा और जब आप ने अपना स्वप्न (जो उन्हें ईश्वर की ओर से निरन्तर दिखाया जा रहा था कि अपने पूत्र इस्माईल की बलि दे रहे हैं सत्य कर दिखाया तो नूबूवत के साथ ईश्वर की ओर से इमामत (जन नेत्रत्व) के स्तर पर भी नियुक्त कर दिये गये। न केवल हमारा अपितु इस्लाम के सभी सम्प्रदायों का यह विश्वास है कि हमारे नबी और पैग़म्बर मोहम्मद स० साहब सभी नबियों से सर्वश्रेष्ठ हैं, अतः उनकी परीक्षा भी उच्चतर होनी चाहिए और उनका बलिदान स्थान (स्तर) हज़रत इब्राहीम अ० से आगे दृष्टगोचर होना अनिवार्य है।

समस्त मुसलमानों के लिए यह विचारणीय है कि मोहम्मद स० साहब के जीवन में उनके पुत्रों के किसी बलिदान का उदाहरण उपस्थित नहीं, ऐसी परिस्थिति में हज़रत इब्राहीम के मुक़ाबिले में हमारे पैग़म्बर का महत्व कैसे सिद्ध किया जा सकता है। अतः यह स्वीकार करना पड़ेगा कि कर्बला में इमाम हुसैन अ० ने जो महान बलिदान प्रस्तुत किये, वे वास्तव में मोहम्मद स० साहब के बलिदान थे। इब्राहीम अ० ने एक इस्माईल को प्रस्तुत किया, तो हुसैन ने अट्ठारह इस्माईल प्रस्तुत किये और इस प्रकार यह सिद्ध कर दिया कि मेरे नाना अन्य पैग़म्बरों से उच्च थे। हुसैन अ० ने जो परीक्षा दी और ईश्वर के सन्देशों की सुरक्षा के हेतु जो महान बलिदान प्रस्तुत कर दिये वे बलिदान आदि के अन्य पैग़म्बरों के कुल बलिदान से उच्चतर थे।

इस्लाम के रसूल ने संसार को जो सन्देश पहुँचाया और जो शिक्षा दी थी उनको मुसलमानों का बहुदल मोहम्मद स० साहब की मृत्यु के केवल 50 वर्ष के भीतर भुला चुका था। और अब वह समय आ गया था कि इस्लाम की शिक्षाओं पर इतने पर्दे पड़ चुके थे कि वास्तविक इस्लाम को पहचानना सम्भव ही न रहा था। इमाम हुसैन अ० को इस्लाम तथा इस्लामी शिक्षाओं को एक नया जीवन प्रदान करना था, और वह भी इस प्रकार कि प्रलय तक धर्म तथा अधर्म के मध्य अन्तर शेष रह सकें। हुसैन अ० ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर के धर्म तथा अधर्म के मध्य अपने रक्त से एक ऐसी रेखा बना दी कि अब कभी कोई व्यक्ति पथभ्रष्ट नहीं हो सकता यदि वह सत्य की खोज में हो।

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार मनुष्य के केवल दो ही कर्तव्य हैं। एक ईश्वर के अधिकार को पूरा करना अर्थात इबादत (प्रार्थना/उपासना) करना, दूसरे मानव अधिकार का पूरा करना। अब देखिए कि कर्बला में 10 मोहर्रम के दिन इमाम हुसैन अ० ने इन दोनों कर्तव्यों का पालन किस प्रकार किया और परिस्थिति जैसे जैसे कठिन होती गयी आपकी रचनात्मक शक्ति में किस प्रकार वृद्धि होती रही।

ईश्वर के अधिकार में उच्चतर कर्तव्य 'नमाज़' है। प्रतिदिन एक सहयोगी 'अज़ान' देता था। परन्तु 10 मोहर्रम को प्रातः काल को आपने कहा कि अली अकबर आज तुम अज़ान दो। इसके पश्चात परिस्थिति और कठिन आई और ज़ुहर (तीसरे पहर) की 'नमाज़' का समय आया। यह वह समय था कि आपके सहयोगियों की संख्या में भारी कमी आ चुकी थी और वे अमर हो चुके थे। अब केवल थोड़े से रक्षक और बनी हाशिम शेष थे। शत्रु ने नमाज़ के लिए युद्ध विराम करने से इन्कार कर दिया। नमाज़ वह मुख्य कर्तव्य है कि आप ने दो सहयोगियों को आदेश दिया

कि तुम आगे खड़े हो जाओ। ये जीवन न्योछावर करने वाले अपने इमाम के आगे सीना तान कर खड़े हो गये और शत्रुओं के वाणों को अपने वक्ष पर रोकना आरम्भ कर दिया। और दुखियारे हुसैन अ० ने इस प्रकार नमाज़ के कर्तव्य का पालन किया।

इस स्थान पर भी हुसैन अ० के सहयोगियों के दृढ़ संकल्प का वह चमत्कार भी प्रदर्शित हुआ जिससे उनके ईमान की दृढ़ता तथा चरित्र का अनुभव (अनुमान) किया जा सकता है। शत्रु की ओर से वाणों की वर्षा इस अधिक्ता से हो रही थी कि इतने समय में जब कि इमाम हुसैन अ० ने नमाज़ पढ़ी इन रक्षकों का शरीर वाणों से छलनी हो चुका था, परन्तु यह उनके दृढ़ संकल्प का चमत्कार था कि इस दशा में भी वे अपने स्थान से हटे नहीं। जैसे ही इमाम ने नमाज़ समाप्त की एक रक्षक ने आपसे केवल इतना पूछा कि स्वामी क्या मैं अपने कर्तव्य पालन में सफल हुआ? आपने उसे आशीर्वाद देने के बाद कहा निःसन्देह तुमने अपने कर्तव्य का पालन सफलता पूर्वक किया। यह सन्तोष हो जाने के बाद वह धरती पर गिर पड़ा और उसकी अत्मा स्वर्ग की ओर सिधार गई।

इमाम हुसैन ने सहयोगियों को इस्लाम की रक्षा में अमरत्व प्राप्त कर लेने की इतनी प्रबल इच्छा थी कि वे अपने प्राणों की कोई चिन्ता नहीं कर रहे थे, क्या यह सम्भव न था कि ये रक्षक वाणों को अपनी ढ़ालों पर रोकते रहते? परन्तु उन्होंने नहीं किया। वे अपने सीने तान कर खड़े रहे और हर उस बाण को अपने वक्ष पर रोकते रहे जिससे शत्रु इमाम हुसैन अ० पर प्रहार कर रहे थे और इस प्रकार वे इस्लाम की रक्षा का वह आदर्श संसार के समक्ष छोड़ गये जिसका उदाहरण प्रलय तक सम्भव नहीं। हमारे प्राण न्योछावर हों ईश्वर के मार्ग में लड़ने वाले उन रक्षकों पर। इसके पश्चात वह समय आ गया कि:—

न लश्करे, न सिपाहे, न कसररतुन्नासे।
न क़ासिमे, न अली अकबरे, न अब्बासे।।

अब हुसैन अ० अकले हैं, सिर से पैर तक घावों से चूर हो चुके हैं, शरीर का समस्त रूधिर इस्लाम की रक्षा पर व्यय हो चुका है। घोड़े पर रूकना सम्भव नहीं रहा। यह किस प्रकार कहूँ कि आप घोड़े से धरती पर कैसे गिरे, यह 'अस्र की नमाज़ का समय था। आपने जन्मदाता के सजदे में शीश झुका दिया। हुसैन अ० की अस्र की नमाज़ और यह अन्तिम सजदा ईश्वर की दृष्टि में इतना उच्च था कि ईश्वर ने इस सांयकाल की शपथ 'कुर्आन में पहले ही खाई है और उसकी महानता का प्रदर्शन किया हैं। हुसैन अ० का शीश सजदे से उठा तो परन्तु अब वह भाले की नोक पर सूरा—ए—कह्फ़ का पाठन कर रहा था।'

इमाम हुसैन अ० को कर्बला में इस्लाम की शिक्षाओं पर अपनी कार्य वाहियों तथा चरित्र से इतना गहरा प्रकाश डाल देना था कि संसार उसे फिर भुला ही न सके। ईश्वर के अधिकार उसके कर्तव्य का पालन तो आपने इस प्रकार किया कि कोई मनुष्य उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। ईश्वर के बन्दों (संसारियों) से सम्बंधित कर्तव्य पालन के आपने ऐसे आदर्श प्रस्तुत कर दिये कि इतिहास के पृष्ठ उन्हें अपने आंचल में सुरक्षित किए हुए हैं।

वह समय जब आप अंतिम विदा लेने शिविर के द्वार पर पधारे और प्रत्येक को सलाम किया तो जहां यह कहा कि ए 'ज़ैनब' व उम्मे कुलसूम तुम पर सलाम, ए 'उम्मे लैला' और 'रबाब' तुम पर सलाम और ऐ 'सकीना', 'रूकय्या' तुम पर सलाम——वहीं यह भी कहा कि ऐ मेरी माता की कनीज़ (दासी) 'फ़िज़्ज़ा' तुम पर भी सलाम। यह था मानव जगत के लिए अपने कर्तव्य का पालन।

मानव जगत से सम्बधित शहीदों की लाशों को दफ़न करने का भी एक कर्तव्य था। परन्तु हुसैनअ० को उस मरूस्थल पर इसका अवसर ही कहां था कि वे किसी शहीद को गाड़ सकते, परन्तु दुखियारे हुसैनअ० ने अपने दूध पीते बालक 'अली असग़र' की लाश को दफ़न कर के इस कर्तव्य पालन को भी सम्पूर्ण कर दिया।

यह था मनुष्य के जन्म का कारण और उसकी प्रगति का अन्तिम शिखर जिसको हुसैन अ० ने संसार के समक्ष प्रगति के अन्तिम केन्द्र तक पंहुचा कर दिखा दिया।

कर्बला के बलिदान का क्रम यहीं पर समाप्त नहीं हो जाता, यह तो 10 मोहर्रम को प्रातः काल से सांयकाल तक का क्रम था। दूसरा क्रम 10 मोहर्रम के सांयकाल से आरम्भ हो कर एक वर्ष तक जारी रहा। अब कर्बला से कूफ़ा और कूफ़ा से सीरिया की मंजिल थी और इस मार्ग की कठिनाइयां और दुखः कूफ़े में मुहम्मद साहब के परिवार की आदरर्णीय स्त्रियों का प्रदर्शन और 'इब्ने ज़ियाद के दरबार में उपस्थिति और

कूफ़ा से सीरिया तक की प्राण घातक यात्रा और यज़ीद के दरबार की प्राण हरण करने वाली नीच बातें, फिर एक वर्ष तक उस कारागार की कठिनाईयों का सहन करना जिस में दिन की धूप और रात की ओस में रसूल के परिवार वालों को जीवन के यह दिन व्यतीत करना पड़े।'

मुहम्मद साहब स० के कुटुम्बियों के बलिदान का यह क्रम कर्बला पर ही समाप्त नहीं हो जाता, सन् 61 हिजरी के पश्चात जो काम आरम्भ हुआ उसमें बनीउमइय्या तथा बनी अब्बास के गौत्र वालों के द्वारा लगभग दो सौ वर्ष तक इस्लाम का वास्तविक पदाधिकारी विभिन्न प्रकार की विपत्तियों का निशाना बनता रहा और परिणाम स्वरूप विष देकर उसके जीवन का दीप बुझाया जाता रहा, परन्तु इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि प्रत्येक मासूम अपने अपने समय में ईश्वर के शत्रुओं की इन कोशिश को सफ़ल नहीं होने दिया कि वे इस्लाम की शिक्षाओं का सर्वनाश कर सकें।

प्रकृति की दृष्टि में मोहम्मद स० साहब के पश्चात केवल 12 व्यक्ति ही ऐसे थे जो ईश्वर के आदेशों की रक्षा और उसकी ओर से कार्य करने के योग्य थे। उनमें से जब दो तलवार से और नौ विष के द्वारा इस्लाम के शत्रुओं के हाथों हताहत हो चुके तो उसने अपने अन्तिम कार्यकर्ता को संसार की दृष्टि से छुपा दिया इस कारण कि ईश्वर की ओर से उसके सन्देशक के बिना यह संसार शेष नहीं रह सकता।

इसके पश्चात इस्लाम के शत्रु उन व्यक्तियों की ओर मुड़े जो वास्तविक इस्लाम तथा उसकी शिक्षाओं पर चल रहे थे, यह संकट का वह समय था जब हमारे पूर्वजों पर अत्याचार होते रहे। परिस्थिति ऐसी थी कि मोहम्मद स० साहब के वंश के प्रत्येक व्यक्ति का चुन चुन कर वध किया जाता रहा कि संसार से उनके वंश का ही विनाश हो जाये। जब किसी भवन का निर्माण होता था उसका आधार रसूल की संतान के रक्त पर ही निर्धारित होता था, और उनको दीवारों में जीवित चुन दिया जाता था। आज भी बग़दाद की दीवार हमारे पूर्वजों की हड्डियों की अमानत दार और उन अत्याचारी राजाओं के अत्याचार की स्मृति है।,

इन्हीं अत्याचारों के फलस्वरूप ईश्वर ने इन अत्याचारी राज्यों का विनाश कर दिया। जब राज्यों का सर्वनाश हो गया तो तलवार और भाले के स्थान पर मुख से तथा कलम के द्वारा आक्रमण का काम आरम्भ हुआ जो आज तक चल रहा है जिसके प्रतिरक्षा के हम उत्तरदायी हैं।

जिस जाति तथा राष्ट्र के समक्ष कर्बला तथा कर्बला के पश्चात के महान बलिदान के आदर्श उपस्थित हों, न तो कभी उसकी भावनाए मर सकती हैं और न वह आक्रमणयता में पड़ सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि उसके समक्ष इतिहास के ये रक्तमय पृष्ठ और उसके पूर्वजों तथा पथ प्रर्दशकों के बलिदान की बराबर चर्चा होती रहे। इस ध्येय की पूर्ति में हम मजलिस करते हैं और इमाम हुसैन अ० के दुःख का स्मरण कर उनकी विपत्तियों पर आश्रुपात करना अनिवार्य समझते हैं।

dcZ;k dhf'k{kk,a

(1) इस जीवन को नाशमय तथा प्रलोक के जीवन को अनन्त समझो।

(2) मानवता के उच्च तत्वों की रक्षा अपने जीवन का उद्देश्य बनाओ।

(3) परस्वार्थ को निज स्वार्थ से सदा उच्च रखो।

(4) सत्य तथा न्याय के मार्ग में प्रत्येक भेंट के लिए कटिबद्ध रहो।

(5) असत्य की सहायता करके अपने को कलंकित न करो।

(6) असत्य की सांसारिक शक्तियों से कदापि भयभीत न हो।

(7) शान्ति रक्षा के लिए अन्तिम क्षण तक यथाशक्ति प्रयत्न करते रहो।

(8) जब तक असत्य से संघर्ष अनिवार्य न हो जाये अपना शिक्षण कार्य शन्तिपूर्वक करते रहो।

(9) इतनी सहनशीलता उत्पन्न करो कि अत्याचारी अत्याचार करते करते थक जाए परन्तु तुम अपने सिद्धान्त पर पर्वत समान अटल रहो।

(10) केवल परमात्मा पर विश्वास ही मनुष्य को सत्य–रक्षा में बड़ी से बड़ी भेंठ के लिए कटिबद्ध कर सकता है।

(11) विश्वास रखो कि अन्तिम विजय उन्हीं के लिए है जो सत्य पर जमे रहते हैं।

(12) परस्पर एक दूसरे को सत्य पर जमे रहने तथा आपत्ति में धैर्यपूर्वक रहने का उपदेश देते रहो।

(13) जब राक्षसी शक्तियों से संघर्ष अनिवार्य हो जाय तो तुम सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाओ।

(14) स्मरण रखो ''आदरणीय मृत्यु अनादरित (आदररहित) जीवन से अच्छी है।'' ✦✦✦

(इमामिया मिशन का प्रकाशन नं0 582
मोहर्रम 1689हि0 / मार्च1969)

मोहर्रम क्यों और कैसे?

y§kd %tukc fetkZ lTtkn gqlSu lkgc

जब तक नीलगगन पर तारागण आँख मिचौली खेलेंगे, चन्द्रमा की शीतल एंव मनोहर चन्द्रिका पड़ेगी, सूर्यदेव अपनी तेज़पूर्ण एंव सुनहरी किरणों से संसार को जगमगाएंगे, समीर के झोंके चलेंगे, मीन समुद्रों में रहेंगी तथा संक्षेप में जब तक यह प्राकृतिक छटा, छवि एंव सुन्दरता रहेगी, मोहर्रम मनाया जाएगा तथा इमाम हुसैन की करूणाजनक एंव विलापपूर्ण मृत्यु पर अश्रु–धारा बहायी जाएगी।

क्यों कि ऐसे ऐसे समय भी व्यतीत हुए जब कि मोहर्रम मनाने वालों को यातनाएं सहन करनी पड़ी, विघ्न बाधाओं कष्टों एंव कठिनायों को डालकर उनको मोहर्रम मनाने से रोका गया, मृत्यु के घाट उतारा गया, वे आजीवन कारावास के दन्ड भोगी बने परन्तु मोहर्रम के मनाने में तनिक भी कभी न हुई। इतिहास के पृष्ठ इसके साक्षी हैं। अतः मेरा उपरोक्त कथन भी अतिश्योक्ति एंव असत्य की सीमा तक न पंहुचेगा।

आज से लगभग 1400 वर्ष पूर्व इमाम हुसैन एंव यज़ीद के बीच कर्बला के मैदान में घमासान युद्ध हुआ था। यद्यपि उसे युद्ध शब्द से विभूषित करना ही अशुद्ध है क्यों कि इमाम हुसैन तथा उनके सम्बन्धियों–साथियों ने सत्य पर शीश–बलिदान का प्रण कर लिया था न कि युद्ध करने का। वास्तव में हज़रत मोहम्मद की व्यवस्था के अनुसार खलीफा (धर्म प्रदर्शक) के पद् के अधिकारी इमाम हुसैन थे एंव द्वितीय बात यह थी कि इमाम हुसैन के ज्येष्ठ भ्राता इमाम हसन एंव यज़ीद के पिता मुआविया से युद्ध होने पर इस बात की सन्धि हुई थी कि इमाम हसन के पश्चात् इमाम हुसैन को ही ख़लीफ़ा का पद दिया जाएगा। परन्तु अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यज़ीद स्वयं ख़लीफा बन बैठा। इमाम हुसैन ख़िलाफत के लोभी नहीं थे वह यज़ीद को ही ख़लीफा रहने देते परन्तु यज़ीद एक दुष्ट आचरण, कायर, आलसी, भोग विलासी एंव पापी पुरूष था। इमाम हुसैन ने विचार किया कि यदि इस्लाम का मार्ग प्रदर्शक ऐसा मनुष्य होगा तो निःसन्देह शीघ्रातिशीघ्र इस्लाम इस संसार से सदैव सदैव के लिए लुप्त हो जाएगा क्योंकि जैसा धर्म–प्रदर्शक होगा वैसे ही धर्मानुयायी। तो यज़ीद के आचरण एंव चरित्र इस्लाम धर्म सिद्धान्तों एंव नियमों से पूर्ण विपरीत तथा प्रतिइल थे तो अनुयायी उस वास्तविक इस्लाम को क्या जानते एंव धर्म के सिद्धान्तों से क्या परिचित होते? जो वह वास्तव में था तथा जो उसके वास्तविक आदेश थे। अतः वहां के निवासियों ने भी उसे अपना धार्मिक पथ प्रदर्शक (ख़लीफा) स्वीकार न किया क्योंकि वह भी यज़ीद को इसके अयोग्य समझते थे। अतः उन्होंने सहस्त्रों की संख्या में इमाम हुसैन के पास पत्र भेजे तथा कहा कि आप हमें मार्ग दर्शाने के हेतु यहाँ आइये, आप ही वास्तव में ख़लीफा पद अधिकारी हैं– इसका हमें ज्ञान है, आप ही हज़रत मुहम्मद के कथनानुसार धर्मिक अधिष्ठाता हैं– इससे हम परिचित हैं एंव यहां की जनता भी शतप्रतिशत यज़ीद के विपक्ष एंव आप के पक्ष में है। यदि इस समय आप हमें सत्य मार्ग प्रदर्शन नहीं कराते तो इस्लाम के अन्त होने का दोष आप पर एंव हमारे पापों का कारण आप होंगे। इमाम हुसैन ने ऐसे समय में जाना ही अपना कर्तव्य एंव परम धर्म समझा। अतः प्रथम अपने भ्राता हज़रत मुस्लिम को दूत–स्वरूप भेजा। वहां की जनता ने उनका अति स्वागत किया एंव प्रसन्नतापूर्वक अपना मार्ग दर्शक एंव धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार कर लिया। अतः हज़रत मुस्लिम ने इमाम हुसैन को पत्र प्रेषित किया और यही लिखा कि व्यक्ति आप के पक्ष में हैं, यज़ीद को अयोग्य एंव कायर समझते हैं। अतः आप यहां चले आइये। इधर जब यज़ीद को इसका ज्ञान हुआ कि व्यक्ति हमारे विपक्षी हो गये हैं तो उसने अपने सेनापति द्वारा अपना खूब झूठा एंव मिथ्यापूर्ण प्रचार कराया

तथा जनता जिस बात से यज़ीद को अयोग्य समझती थी कि वह दरिद्रों, अनाथों, विधवाओं एंव निर्धनों को सहायता न पंहुचाएगा उसी का अधिक प्रोपेगन्डा कराया कि वह दरिद्रों की इस प्रकार सहायता करेगा, अनाथों की इस प्रकार रक्षा करेगा, विधवाओं एंव असंरक्षकों की इस प्रकार सेवा करेगा इतना अधिक धन कोष से विधवाओं आदि को मासिक अथवा वार्षिक रूप में देगा, इतनी अधिक भूमि दरिद्रों आदि को दी जाएगी आदि। धन का लोभ मानव को अंधा बना देता है, खरा खोटा समझने की परख सत्य असत्य का ज्ञान मनुष्य को नहीं रह पाता। यज़ीद के झूठे प्रोपेगन्डे का प्रभाव भी पूर्ण रूपेण इस प्रकार पड़ा कि लोग हज़रत मुस्लिम के विपक्ष में हो गये तथा यह विपक्ष्ता, शत्रुता तथा ईर्ष्या बढ़ती गई—यहां तक कि हज़रत मुस्लिम की अत्यन्त निर्दयता से हत्या की गयी एंव उनके शव का भी बड़ा अपमान किया गया। इध ार इमाम हुसैन के पास जब पत्र पँहुचा तो हुसैन बालकों, बुद्धों, नवयुवकों, स्त्रियों को लेकर यात्रा के लिए रवाना हुए। काफ़ी व्यक्ति इमाम हुसैन के साथ इसलिए हो गय कि रण—क्षेत्र में विजयी होकर धन एंव आभूषण आदि के अधिकारी बनेंगे अथवा इमाम हुसैन स्वयं राज्य सिंहासन पर विराजमान होंगे तथा हम भी इमाम हुसैन के प्रेमी कहलाकर उच्च पद प्राप्ति के पात्र होंगे। अतः इमाम हुसैन अ0 मार्ग में यह कहते जाते थे कि मैं बलिदान होने जा रहा हूँ—शहीद होना ही मेरा परम ध्येय है। इस प्रकार इमाम हुसैन के साथ आने वाले समूह की संख्या का निरन्तर ह्यस होता जाता था। ध्यान एंव विचार करने की बात है यदि इमाम हुसेन का ध्येय लड़ना होता तो अपने सिपाहियों को इस प्रकार कम न करते। इस प्रकार अटल एंव अडिग साथियों के साथ इमाम हुसैन 2 मोहर्रम को कर्बला पँहुच गये। जल आदि की सुविधा के कारण इमाम हुसैन के सम्बन्धी तथा साथियों ने पहले फ़ुरात नदी के निकट अपने ख़ेमे (रहने के स्थान) लगाये तथा भूमि भी क्रय की परन्तु यज़ीद की आज्ञा हुई कि इमाम हुसैन के ख़ेमे नदी से दूर लगाये जाऐं। अतः नदी से दूर इमाम हुसैन के ख़ेमे लगाये गये यह वह स्थान है जहाँ के लिए यह उपमा दी जाती है कि दाना डाला जाए तो भुन जाए। इधर यज़ीद की ओर अनेकों स्थानों से सेनाएँ आ आ कर एकत्रित हाने लगीं जिसके घोड़ों की टापों से सारा बन कांपता था। उसी स्थान पर जहां दाना डाला जाय तो भुन जाए, सात मुहर्रम से इमाम हुसैन तथा उनके छोटे—छोटे बालकों पर जल बन्द कर दिया गया, नदी के चारों ओर सिपाही नियुक्त किये गये कि वह पानी को इमाम हुसैन के ख़ेमे तक न जाने दें। यह भी स्मरण रहे कि उसमें एक छः मास के बालक हज़रत अली असग़र भी थे। यह जल तीन दिवस बन्द रहा अथवा यूं कहना अधिक उचित होगा कि इमाम हुसैन को तथा उनके सम्बन्धी—साथियों को मृत्यु समय तक जल से भेंट न हुई। उस जल एंव भोजन की आपत्ति के कारण बालकों का दृश्य विशेषतः अत्यन्त करूणाजनक एंव अति विलाप पूर्ण था। अरब की वह तपती भूमि और फिर दोपहर की धूप के समय छोटे छोटे पवित्र पापहीन बालकों के "प्यास" "प्यास" के शब्द सुनकर पाहन का हृदय भी पसीज सकता है तथा "प्यास ने हमारा अन्त कर दिया" यह शब्द कठोर—हृदय मनुष्य से भी अश्रु—धारा प्रवाहित करा सकते हैं। परन्तु फिर भी उनके दृढ़—निश्चय में न कोई कमी थी एंव न अडिग विश्वास में पूर्व के अपेक्षाकृत कोई अन्तर।

6 मोहर्रम की तिथि आई। इमाम हुसैन ने अपने साथियों से कहा कि तुम को भली भांति ज्ञात होना चाहिए कि मैं यहां राज्य, सिंहासन एंव मुकुट प्राप्ति के लिए नहीं आया हूँ न मुझे युद्ध ही करना है बल्कि मैं सत्य मार्ग पर शीश—बलिदान करने आया हूँ। प्रेमियों! मैं ने यज़ीद को धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार नहीं किया है, यह मेरे शत्रु हैं मेरे रक्त के प्यासे हैं मेरे प्राण लेने पर तुले हैं। केवल मुझे ही मृत्यु के घाट उतारना चाहते हैं। यदि यह मेरा अन्त कर देंगे तुम्हें न पूछेंगे। तुम सब स्वतन्त्र हो जिसका मन चाहे स्वतन्त्रता पूर्वक प्रस्थान कर सकता है। यदि तुम को मेरे सामने लज्जा आती है तो देखो यह दीपक बुझाये देता हूं जिसका जी चाहे चला जाय। परन्तु कोई न गया। प्रत्येक की ज़बां पर यही शब्द थे यदि हमारी सत्तर बार निर्दयता से हत्या की जाए तो भी आप को छोड़ कर न जाएंगे। इस प्रकार इमाम हुसैन ने अपने साथियों को परखा, सभी पूर्ण एंव खरे उतरे एंव सभी सत्य और अटल सत्य की कसौटी पर पूर्ण एंव उचित थे। उस रात्रि को सांसारिक युद्धों की भांति इमाम

हुसैन तथा उनके साथी एंव सम्बन्धी भली भांति युद्ध की सामग्री जुटाने में नहीं लगे थे, अपितु प्रत्येक ख़ेमे से भगवद् प्रार्थना एंव ईश–भक्ति की ध्वनि सुनायी पड़ती थी।

जब 10 मोहर्रम की तिथि आई, अंधकार में ही हुसैन एंव उनके साथियों ने नमाज़ पढ़ी। तत्पश्चात् सूर्योदय हुआ जिसकी लालिमा इस बात की सूचक थी कि ऐ हुसैन! आज तो तेरा बाह्य अन्त है परन्तु वास्तव में जब तक मेरी यह लालिमा है, तब तक तेरा नाम भी जीवित है। जिनके भाग्य प्रबल होते हैं तथा जिनके शरीर नरक की अग्नि से बचना चाहते हैं वह सत्य की ओर आ ही जाते हैं। यज़ीदी सेना से हज़रत हुर इमाम हुसैन की ओर आए। आप के चरण रूपी कमलों परगिर कर क्षमा प्रार्थना की। धन्य हो दयासागर इमाम हुसैन जो इतनी विघ्न बाधाओं में आप को लाया था उसी को क्षमा कर दिया एंव वह भी इमाम हुसैन की सेना में आ गये। इसके बाद कायर सेना की ओर से एक बाण इमाम हुसैन अ0 की सेना की ओर आया।

अब युद्ध का आरम्भ था। इमाम हुसैन की सेना में वीरता, धीरता, सत्यता कर्तव्यपरायणता, उदारता, मित्रता, सज्जनता, प्रेम एंव स्नेह आदि दैवी–गुण विद्यमान थे तथा यज़ीदी सेना में दुष्टता, शत्रुता, ईषा, ईर्ष्या, दुर्जनता, असत्यता, दुराचार तथा कायरता आदि राक्षसी गुण उपस्थित थे। प्रथम इमाम हुसैन के साथियों ने अपने प्राण सत्य, धर्म एंव इमाम पर निछावर किये तथा पतंग रूपी साथी इमाम रूपी दीपक पर बलिदान हुए। एक एक प्रेमी–साथी ने ऐसे ऐसे वीरता के प्रदर्शन किये कि इतिहास के पृष्ठ उनके समक्ष प्रस्तुत करने के लिए खामोश हैं। उनमें भी हबीब, हुर, जुहैरे क़ैन आदि की वीरता विशेष उल्लेखनीय हैं एंव इतिहास के पृष्ठों मे स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। इसके बाद सम्बन्धियों की बारी आई। सर्वप्रथम हज़रत क़ासिम सुपुत्र इमाम हसन ने आज्ञा ली–रण क्षेत्र में आए तथा अनेकों शत्रुओं का दमन करने के पश्चात स्वर्गवासी हुए। तत्पश्चात हज़रत अब्बास सुपुत्र हज़रत अली गये, जिनका ध्येय लड़ना न था बल्कि बालकों एंव बालिकाओं विशेषकर हज़रत सकीना (इमाम हुसैन की सुपुत्री) की अत्यन्त करूणजनक दशा को देखकर जल प्राप्ति था। वह अत्यन्त वीर योद्धा थे। सहस्त्रों उन व्यक्तियों पर जो नदी के किनारे इसके पहरे दार थे कि जल इमाम अ0 के ख़ैमे तक न जाने पाये मगर अब्बास अ0 ने अपनी थोड़ी वीरता से नदी पर अधिकार पा लिया। जल हाथ में लिया परन्तु ये कहकर कि इमाम प्यासा है मैं पीलूँ पानी फेंका। मश्क भरी, परन्तु एक बाण ने उसमें छेद कर दिया। पानी बह गया हाथ पहले ही कट गये थे, एक हथियार होते हुए अब निहत्थे थे दुश्मनों ने हत्या कर डाली। इनके पश्चात् हज़रत अली अकबर सुपुत्र इमाम हुसैन रणक्षेत्र में आए सहस्त्रों शत्रुओं को मृत्यु –घाट उतारा तब स्वंय शहीद हुए। तब इमाम हुसैन अपने सुपुत्र हज़रत अली असग़र जिनकी उम्र छः मास थी हाथ पर लेकर गये तथा कायर सेना की ओर संकेत करके कहा यद्यपि : तुम्हरी दृष्टि में मैं पापी हूँ परन्तु इस बालक ने तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है परन्तु दुष्ट एंव पापी ने एक ऐसा बाण मारा कि बालक अपने पिता के हाथ पर सवर्गवासी हुआ। अब इमाम हुसैन के पास कोई बलिदान न था, अब स्वयं अकेले थे अब इमाम हुसैन शिविर में आए, सबको अन्तिम प्रणाम किया तथा अपने सुपुत्र हज़रत सय्यदे सज्जाद अ0 जो रोग के कारण इतने बेहोश थे कि उनको इसका ज्ञान भी न था अपने पास बुलाया तथा कहा कि तुम अब इस धर्म के गुरू एंव पथ प्रदर्शक हो। तब आप घोड़े पर सवार होकर रण–क्षेत्र में आए तथा सर्व–प्रथम अपना परिचय करया कि मैं हज़रत मुहम्मद का पौत्र, हज़रत अली तथा फ़ातिमा का पुत्र तथा इमाम हसन का लघु भ्राता हूँ जो सब इस्लाम के अधिष्ठता एंव धार्मिक मार्ग–दर्शक थे। अतः इमाम हुसैन में हज़रत मुहम्मद की उदारता, हज़रत अली की वीरता, बीबी फ़ातिमा की कर्तव्यपरायण्ता तथा इमाम हसन की सहनशीलता थी। ऐसे हुसैन लड़ने चले परन्तु यह एक बेजोड़ युद्ध था। हज़रत इमाम हुसैन अकेले थे, तथा शत्रुओं की संख्या थी कई सहस्त्र एंव असंख्य । स्वयं युद्ध करना प्राण त्यागना सरल है परन्तु अपने पुत्रों, सम्बन्धियों, भ्राताओं एंव साथियों के दूख को सहन करना और बात है। ऐसे समय युद्ध करने में क्या मन लगेगा और उनका भी विचार केवल शहीद होना था युद्ध करना नहीं । सहस्त्रों की संख्या में शत्रुओं का दमन किया तथा वीरता की उच्चतम सीमा का प्रदर्शन करा दिया इतिहास के पृष्ठ इसके साक्षी हैं कि कर्बला के युद्ध

के पश्चात् वीरता के समय श्रेष्ठतम वीर हज़रत अली के बजाय इमाम हुसैन को ही कहा जाने लगा तथा वीरता के उपमान इमाम हुसैन कहलाने लगे। परन्तु वे जिस कारण युद्ध कर रहे थे उसका उन्हें ज्ञान था। शहीद होना ही उनका ध्येय था। दुश्मनों को केवल इतना बतलाना मात्र था कि यदि हम युद्ध करने लगे तो मैदान से तुम्हारे पैर उखड़ जायें। तत्पश्चात् ईश–आज्ञा से खडग यथास्थान रखी तथा उस कृपालु, दयालु, सर्वशक्तिमान एंव सर्वव्यापी परम्पिता परमात्मा की नमाज़ में अपने मस्तक को झुका दिया। ऐसा सुनहरा अवसर पाकर शत्रुओं ने अत्यन्त निर्दयता से हत्या कर डाली। तत्पश्चात उनके सिर को काटा गया तथा प्रत्येक अंग को शरीर से अलग कर दिया गया तथा नैज़े के ऊपर सिर को चढ़ाया गया तथा खुशियाँ मनाई जाने लगीं, बाजे बजाये गये तथा वह पापी चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे हुसैन की हत्या कर डाली गई यदि अब भी पुरस्कार की इच्छा हो तो उन के शव को घोड़ों द्वारा कुचल डालो। यातनाओं का अन्त इमाम हुसैन के ऊपर कर दिया गया।

सूर्य ढ़ल रहा था। सूर्य का अस्त होना यह बता रहा था कि कोई सूर्य समान मानव भी स्थायी धाम (स्वर्ग) की ओर जा रहा है। पक्षी गण कलख करते हुए अपने घोंसलों की ओर चले जा रहे थे, परन्तु कर्बला में आए हुए यात्री अब शहीद हो कर सदैव के लिए विश्राम कर रहे थे। प्रकाश के साम्राज्य का अन्त था तथा अंधकार की विजय थी। उसी प्रकार कायर तथा कायरता की, वीर तथा वीरता पर बाहा एवं प्रकट रूप में विजय थी। अब हम आप का ध्यान उस ओर ले चलें जहां इमाम हुसैन की महिलाएं थी। अभी यज़ीदी अत्याचारों का अन्त न हुआ था, उसने उन शिविरों (ख़ेमों) में आग लगवा दी। इमाम हुसैन की सम्बन्धी स्त्रियों को जिनके गृह से पर्दा–प्रथा चली आ रही थी, शिविरों से निकलना पड़ा, उनके सिरों से चादरें छीन ली गईं, आभूषणों को इस प्रकार उतारने के लिए खींचा गया कि उनके उस स्थान से रक्त बहने लगा। फिर एक रस्सी में दुष्ट एंव पापी यज़ीद ने 12 स्त्रियों के गले बंधवाए तथा बहुत ही अपमान किया एंव कष्ट पंहुचाया–जिसके पढ़ने के बाद पत्थर हृदय भी करूणा से भर जाता है तथा उसके नेत्रों से आंसू निकल पड़ते हैं। इमाम हुसैन के सुपुत्र सैय्यदे सज्जाद जो बीमार थे, उनके हाथों में हथकड़ियाँ, पैरों में बेड़ियां एंव गले मे तौक़ डाला गया। इसी प्रकार रोगी एंव अनाथों की सेवा तथा सुश्रषा होती है क्या? परन्तु कर्बला का संसार एंव वातावरण ही सब से अलग था एंव वह पापी मानव रूप में दानव की साक्षात् मूर्ति थे। अभी आप ने ऊपर ही पढ़ा और याद होगा कि किस किस प्रकार कौन कौन बलिदान हुआ तो उनकी स्त्रियां उनपर रोना चाहती होंगी, उन्हें आंसू बहाने की इच्छा होगी और आंसू बह ही रहे होंगे–कविवर अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिओम के
vuqlkj%&

बात अपनी ही सुनाते हैं सभी
पर छिपाए भेद छिपता है कहीं
जब किसी का दिल पसीजेगा कभी
आंख से आंसू गिरेगा क्यों नहीं?

क्या इतने अधिक कष्ट उन महिलाओं के पुत्रों, माताओं पिता आदि पर पड़े होंगे– तो उन्हें शोक न हुआ होगा– अवश्य हुआ होगा। आंसू गिरते होंगे परन्तु यज़ीद की यह आज्ञा थी कि यदि किसी की आंख से आंसू गिरे तो उसे कोड़े से मारा जाए–इस प्रकार रोने–विलाप आदि से रोका जा रहा था तथा रोने पर उन महिलाओं को कोड़ों से कष्ट पँहुचाया जा रहा था। अधिक से अधिक कष्ट यातनायें जो हो सकती है वह पँहुचायी जा रही थीं परन्तु सत्य मार्ग यात्रियों ने उसे सहन किया और सत्य–पथ से क़दम न उठाया।

इमाम हुसैन तथा उनके सम्बन्धी तथा साथियों की मृत्यु पर उन्हें रोने न दिया गया तथा उनका अन्तिम संस्कार भली भांति न होने दिया गया एंव चेहलुम करने की आज्ञा न दी गई तथा यज़ीदी समझते थे हमने हुसैन की मृत्यु पर विलाप न करने दिया परन्तु निःसन्देह उनको इसका ज्ञान न था कि वह दिन दूर नहीं जब इन्ही का शोक चारों दिशाओं एंव संसार के प्रत्येक कोने में मनाया जाएेगा तथा शोक मनाकर इमाम हुसैन के प्रति श्रद्धाभाव रखेंगे एंव श्रद्धांजलियां अर्पित करेंगे तथा यज़ीद को धिक्कार के शब्दों द्वारा स्मरण करेंगे। यही आज दीख पड़ रहा है कि इमाम हुसैन के प्रेमी मुहर्रम के प्रथम दिवस से ताज़िये रखते हैं। उसके आगे शोक संगीत पढ़ते हैं तथा हुसैन की करूणाजनक मृत्यु पर आंसू बहाते हैं।

2 माह 8 दिवस तक प्रातः काल से लेकर अर्ध रात्रि अथवा सम्पूर्ण रात्रि कोई भी ऐसा क्षण नहीं जिस समय मजलिस न होती हो, तथा उसमें हुसैन की करूणाजनक मृत्यु पर लोग अश्रु धारा प्रवाहित करते हैं तथा उसमें सहस्त्रों की संख्या में हुसैन के प्रेमी सकिय रूप से भाग लेते हैं। यूँ तो दो मास 8 दिवस निरन्तर यह कार्य अत्यन्त भली प्रकार होता है परन्तु 3 दिन इसका कार्यक्रम अति अधिक विस्तृत तथा सामूहिक हो जाता है। प्रथम अशरे (यह मुहर्रम की 10 तारीख को होता है यह वह दिवस है जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन एंव उनके सम्बन्धी साथी सत्य मार्ग पर बलिदान हुए) इस दिन इमाम–प्रेमियों को ताज़िये रखते 10 दिन व्यतीत हो जाते हैं अतः काफ़ी प्रेमी इसी दिन ताज़िये उठाते हैं उसके सामने ऐसे हृदयस्पर्शी शोक संगीत पढ़ते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति रोने लगता है तथा सारा वातावरण शोकमय हो जाता है। इसी प्रकार पढ़ते हुए वे कर्बला जाते हैं और वहीं दफ़न कर देते हैं। बहुत सी शोक–संगीत पढ़ने वाली गोष्ठयां भी होती हैं जिनमें काफ़ी व्यक्ति सम्मिलित रहते हैं वे जिस समय सब मिलकर हुसैन हुसैन कहते हैं तो प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक स्थान से यही ध्वनि सुनाई पड़ती है–पत्ते पत्ते से यही शोकमय आवाज़ आती है। संध्या तक यही कार्यक्रम रहता है इसी दिन ही बलिदान का दिन था और इमाम हुसैन इत्यादि शहीद हुए थे अतः मुसलमान शिया दिन भर न भोजन करते हैं न जल पीते हैं। दूसरा शोकमय एंव महत्वपूग्र दिवस चेहलुम है। इस्लाम धर्मानुसार किसी व्यक्ति की मृत्यु के 40 दिन के भीतर एक विशेष दिन निश्चित करके मृतक व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह उस मृत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा उसके पापों को क्षमा करके स्वर्ग में पंहुचा दे परन्तु कर्बला वालों का यह भी दिन न मनाया गया उनको शोक न करने दिया गया। अतः उनके प्रेमी काफ़ी संख्या में इस दिवस भी ताजिये उठाते हैं। गोष्ठियां अशरे की भांति इस दिवस भी की जाती है। इस दिन बहुत अधिक हाहाकार होता है। विलाप किया जाता है तथा अत्यधिक शोक मनाया जाता है। केवल अन्तर इतना है कि मुहर्रम का अशरा बलिदान दिवस होता है अतः अधिकतर शोक संगीत शहीद क्योंकर हुए इससे सम्बन्धित होते हैं परन्तु चेहलुम के दिन हुसैन के पश्चात उनकी आदर्श महिलाओं पर क्या–क्या अत्याचार हुए उनको कौन कौन से कष्ट पँहुचाए गये, इसका वर्णन एंव पाठ होता है, तृतीय महत्व पूर्ण दिवस आठवीं (2 माह 8 दिवस पश्चात) है इसको शोक दिवसों का अन्तिम दिन समझाा जाता है अतः इस दिन के हाहाकार का, विलाप का, शोक–गान का एंव रोने का वर्णन अवर्णनीय है। सबसे अधिक गोष्ठियां इसी दिन कर्बला जाती है। कई कई मीलों दूर भी ''हुसैन'' ''हुसैन'' की आवाज़े सुनाई देती हैं। ऐसे दिल हिला देने वाले संगीत पढ़े जाते हैं कि श्रोतागणों की आंखों से अश्रुओं की एक झड़ी सी लगी रहती है–जिनके आंसू नहीं निकलते उनका हृदय अवश्य टुकड़े टुकड़े हो जाता है। ताज़िये भी उठते हैं। लोगों के सिरों पर न टोपी होती है न पैर में जूते इसी दशा में कर्बला जाते हैं। किसी हिन्दू व्यक्ति ने इन सब दृश्यों के देखने के बाद कहा था ''कि इमाम हुसैन ऐसे धीर, वीर, गुणी, योद्धा, पराक्रमी, सत्यवादी दृढ़निश्चयों एंव स्नेही व्यक्ति के लिए इतना शोक मनाना कोई बड़ी बात नहीं है –शोक मनाना क्या है? इतने अधिक अत्याचार ही उनपर किये गये कि आंख में अश्रु आ जाते हैं एंव शोक मनाने पर हम बाध्य हो जाते हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि उन पर किये गये सभी अत्याचारों, कष्टों एंव यातनाओं का वर्णन किया जाये तो पाहन–हृदय मोम हो जाएं अर्थात अश्रु उससे रोके न रूकें''

ऐ मनुष्यों! ध्यान तो दो विचार तो करो किसी व्यक्ति पर थोड़ी सी विपत्तियाँ पड़ते देखकर तुम्हारा हृदय पसीज जाता है, किसी पुस्तक अथवा नाटक के पात्र पर आपत्तियां होते देखकर तुम्हारे नेत्रों में अश्रु आ जाते हैं, हरिश्चन्द्र अथवा श्रवण कुमार के जो विघ्र (धन), बाधायें उनके मार्ग में पड़ती दिखाई जाती है, तो तुम्हारे नयनों से अश्रु धारा बह निकलती है । जबकि ये विपत्तियां इमाम हुसैन की विपत्तियों को देखते हुए नाम मात्र को है फिर भी तुम रोते हो तो हम इतने अधिक अत्याचार और अपने धार्मिक मार्ग प्रदर्शक पर होते हुए सुनें और न विलाप करें। रोना तो एक प्राकृतिक एंव स्वाभाविक वस्तु है जब मानव अत्याचारों का वर्णन सुनेंगे उनके नेत्र सजल हो ही जाएंगे। कविवर हरिऔध ने दूसरों के कष्ट अत्याचार देखने और सुनने वाले व्यक्ति पर जो आंसू न बहाए

¼cfd ;k is u0 28 ij----------------½

अमर शहीद

y§kd %t fLVl i&Mr Qkd nso feJk ngyh
vuqokd %Jh fet kZl Ttkn gq S

संसार नश्वर, संसार–वासी नश्वर, संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर, संसार की किसी वस्तु को स्थायी जीवन प्राप्त नही है। चाहे वह गुल्मलता हो अथवा पुष्प एंव वाटिका, चाहे वह मरूस्थल तथा उपजाऊ क्षेत्र हों अथवा दरिद्र व धनाशय व्यक्ति हों सब नश्वर हैं। यहां तक कि तिथियाँ तथा घटनाएं भी भूला दी जाती हैं। कोई राजा अथवा नेता मृत्यु के पश्चात कुछ समय तक जीवित रहता है तथा धीरे धीरे उसका नाम भी मिट जाता है। यदि उसके आचरण एंव व्यवहार अच्छे हाते हैं तो संसार अधिक समय तक याद रचाता है परन्तु यदि वह चरित्र भ्रष्ट एंव दुष्ट आचरण का होता है तो उसकी स्मृति आधिक समय तक नहीं रहती है। समस्त सांसारिक व्यवस्था इसी नियम के अनुसार कार्यान्वित है मनुष्य यदि इसे बदलना चाहे तो बदल नहीं सकता। जब तक यदि दुनिया है यह परिवर्तन होते ही रहेंगे तथा इसी के साथ साथ हम भी परिवर्तित होते जाएंगे। राज्य सिंहासन भी परिवर्तित होंगे, समय भी बदलेगा, संसार के बसने वालों में भी परिवर्तन आएगा।

जहां आज गगन चुम्बी अट्टलिकाएं हैं, अनन्त भोग विलास की सामग्री जुटी हुई है, शायद कल वहां चाहे कुछ न हो, जहां आज अति सुन्दर एंव मनोहारी वाटिकाएं एंव उद्यान हैं शायद कल वहां मरूस्थल दृष्टिगोचर हों। क्रान्ति आते देर नही लगती, देखते ही देखते नगर अस्त व्यस्त हो जाते हैं, घर नष्ट–भ्रष्ट हो जाते हैं परिवार के परिवार उजड़ जाते हैं। जो घर प्रातः भाई, भतीजों, पुत्रों, छोटों–बड़ों तथा मित्र सम्बन्धियों से परिपूर्ण था मध्यान्ह होते–होते वहां धूल उड़ने लगती है। भाई से बहिन छूट जाती है, बच्चों से माताओं की गोदें सूनी हो जाती हैं, सर से मालिक का साया उठ जाता है, सुहागनें विधवा हो जाती हैं, लोग विरोधी हो जाते हैं, भाग्य विपक्ष में हो जाता है, काल (समय) अंधकारपूर्ण दृष्टिगोचर होने लगता है, हास्य रूदन में परिवर्तित हो जाता है तथा जिस ओर दृष्टि डालिए शोक व रूदन के अतिरिक्त कुछ और दीख नहीं पड़ता।

जो वस्तु निर्मित हुई है वह बिगड़ेगी अवश्य, किसी वस्तु का उत्पन्न होना उसके अन्त का सर्व प्रमुख प्रमाण है। हिंसक पशु, पशु एंव पक्षी (खग–वृन्द) सभी नश्वर हैं, सूर्य व चन्द्रसब मिट जाएंगे, आकाश तारागणों से खाली हो जाएगा, आकाश की कमर टूट जाएगी, मृत्यु का देवता चारों ओर दौड़ता दृष्टिगोचर होगा। एक समय ऐसा भी आएगा जब मृत्यु को भी मृत्य का सामना करना पड़ेगा। कहीं कोई वस्तु शेष न रह चुकी होगी, जिसकी अडिगता से आकाश भी थरथरा जाता है, जिसका धैर्य एंव दृढ़ता ईश्वरीय इच्छा पर छा गया है, जिसके साहस को क्रान्तियां अचम्भित होकर देख रही हैं। जिसकी तीन दिन की भूख तथा प्यास समस्त संसारों को हिला सकती है। ऐसा अमर एंव अजर व्यक्ति कौन है? वह है अल्लाह का भेजा हुआ इमाम, हज़रत मोहम्मद[स०] का दौहित्र, हज़रत अली का सुपुत्र, हज़रत फ़ातिमा का लाल, इमाम हसन का लघु भ्राता हुसैन।

वह हुसैन जो इस्लाम धर्मानुयायीयों के लिए सत्य दीप तथा अन्य धर्माबलम्बियों के लिए ज्ञान दीप तथा संसार के लिए ''पूर्ण धर्म'' बन कर आया। क्यों न हो मनुष्य अत्यधिक दलित होता जा रहा था, लोगों के चरित्र जितने अधिक दूषित हो सकते थे हो चुके थे। मदिरा पान पर कोई प्रतिबन्ध शेष न रह गया था, अत्याचार तथा दूसरों को कष्ट पंहुचाना बिल्कुल प्रचलित हो चुका था। मानवता क्रूरता का नाम था। जो सत्य मार्ग पर चलने का विचार करता मृत्यु के घाट उतरवा दिया जाता। जो तनिक उभरने (विरोध करने) का प्रयत्न करता वह तथा उसके परिवार सम्बन्धी मार डाले जाते। असत्य इतना अधिक प्रभुत्व प्राप्त कर चुका था कि अल्लाह के सच्चे अनुयायी व उपासक भी उसमें शरण ले रहे थे। ऐसी सुदृढ़ शक्ति

का मुक़ाबला करना, साधारण व्यक्ति का काम न था। इस असत्य से परिपूर्ण राज्य का मुक़बला करने के हेतु हज़रत इमाम हुसैन "पूर्ण धर्म" बनकर कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए। अकेले नही आए बल्कि छोटे छोटे बच्चे भी साथ लाए गृह महिलाओं को साथ लाए, संक्षेप में यूं कहूं कि अली व फ़ातिमा के अजीवन का पारिश्रमिक समर्पित करने के लिए साथ लाए। वह संसार को बतला रहे थे कि जिस वस्तु के संरक्षण के हेतु मैं आया हूँ वह अति मुल्यवान है, उसके संरक्षण के हेतु पुत्रों का बलिदान हो सकता है, भाइयों की जानें जा सकती है, छः मास का बालक गले पर तीर खा सकता है, देवियां विधवा हो सकती हैं शिविर जलाए जा सकते हैं, हज़रत मोहम्मद के घर की स्त्रियों के सरों से चादरें छिन सकती हैं परन्तु धर्म को मिटने नहीं दिया जा सकता।

यह वह दीप है जिसको हज़रत मोहम्मद ने ईश्वरीय धाम में जलाया, जिसने हज़रत अली की खडग् की छाया में शरण ली, जिसको हज़रत फातिमा के सतीत्व ने चार चांद लगाए, जिसको इमाम हसन के बलिदान ने प्रेरणा प्रदान की। हज़रत मोहम्मद की अमानत अब हुसैन के पास पंहुची और किस समय पंहुची जबकि प्रत्येक ओर अज्ञान का साम्राज्य था, अंधकार छाया हुआ था, बहुसंख्यक इसके इच्छुक कि यह ज्ञान दीप सदैव सदैव के लिए बुझा दिया जाए हुसैन की इच्छा थी कि प्राण जाते हैं तो जाये, बच्चों को बलिदान करना पड़े तो पड़े, शिविर लुटते हैं तो लुटें, गृह देवियाँ बन्दी बनायी जाती हैं तो बनायी जायें परन्तु मोहम्मद का प्रकाश दीप बुझने न पाये। नाना हज़रत मोहम्मद का यह कथन सदा सामने रहताः—

gq lSu eq> lsgSa vkSj eSa gq lSu lsgw

कथन का आधा भाग कि हुसैन मुझसे हैं, एक स्वयं सिद्ध वस्तु है परन्तु मैं हुसैन से हूँ यह सिद्ध होना शेष था। हज़रत मोहम्मद का आशय सम्भवतः यही था कि हुसैन मुझे और मेरे नाम को जीवित करेगा और इसीलिए कहा था कि मैं हुसैन से हूँ तथा यही कारण था कि हुसैन अपना सर्वस्व लेकर कर्बला में आए (बलिदान के लिए) ताकि संसार देख ले और समझ ले कि हज़रत मोहम्मद के दौहित्र का उद्देश्य बहुमूल्य है और वह धर्म का संरक्षण है। असत्य के समर्थकों के मुक़ाबले में इमाम हुसैन की सेना की वही हैसियत थी जो शायद प्रलय के दिन नरक वासियों और स्वर्ग वासियों की हो। हुसैन की मुट्ठी भर सेना में हबीब इब्ने मज़ाहिर जैसे वयोवृद्ध, अली असगर जैसे दुध पीते बालक भी सम्मिलित हैं। हुसैन ने क़सिम जैसा भतीजा, अब्बास जैसा भाई, सत्य मार्ग में बलिदान कर दिया फिर भी यज़ीदियों के पाहन हृदय मोम न हुए। यह देखकर कि मेरे शत्रु मेरे नाना का कलमा पढ़ने वाले हैं हज़रत अली अकबर को भेजा जो कि हज़रत मोहम्मद से रूप व आकार में बिल्कुल मिलते जुलते थे परन्तु वे हज़रत मोहम्मद और उनके अनुयायियों के इतने विरोधी हो गये थे कि हज़रत मोहम्मद की तस्वीर को भी मृत्यु के घाट उतार दिया तथा अली अकबर जैसे पुत्र का रक्त हुसैन के आगे बहा दिया तथा इसी पर अन्त नहीं हुआ बल्कि इमाम हुसैन को भी शहीद किया गया। शिविरों में आग लगा दी गयी, स्त्रियों के आभूषण छीन लिए गए तथा उन्हें बन्दी बनाया गया।

हुसैन ने कुछ घन्टों में अपना समस्त परिवार लुटा दिया। सत्य मार्ग पर प्राण निछावर करने आए थे शहीद हो गये। जिस उद्देश्य के लिए निकले थे वह पूर्ण किया। संसार को दिखा दिया कि सत्य मार्गानुयायी इस प्रकार बलिदान देते हैं। आज किसी जाति व धर्म में ऐसा उदाहरण नही मिलता। हुसैन ने संसार के प्रत्येक सम्प्रदाय को, प्रत्येक धर्म को सत्य मार्ग में प्राण देने का पाठ पढ़ाया। हुसैन की शहादत इस बात को प्रकट करती है कि यदि धर्म में ऐसा उदाहरण नही मिलता। हुसैन ने संसार के प्रत्येक सम्प्रदाय को, प्रत्येक धर्म को सत्य मार्ग में प्राण देने का पाठ पढ़ाया। हुसैन की शहादत इस बात को प्रकट करती है कि यदि धर्म में अडिग व अनन्य विश्वास हो तो प्राणों का त्यागना अत्यंत सरल कार्य प्रतीत होता है, कोई कठिनता प्रतीत नहीं होती। एक कर्बला की अद्वितीय घटना है जिसने इस्लाम के इतिहास को रंगीन बनाया तथा धर्म का सर्वाधिक प्रचार किया। मुझे विश्वास है कि धीरे धीरे संसार कर्बला की घटना से शिक्षा ग्रहण करेगा तथा एक ऐसा समय अवश्य आ जाएगा जब हुसैन के बतलाए हुए मार्ग पर चलना। प्रत्येक व्यक्ति का धर्म होगा तथा संसार से अत्याचार व हिंसा, क्रूरता तथा कठोरता का सदैव के लिए अन्त हो जाएगा।

(इमामिया मिशन का प्रकाशन नं0 390 /मुहर्रम, 1373)

मनुष्यता तथा बर्बता का खुला हुआ मुकाबला

y§kd ¼mnZ½%ckcwegkohj iz kn JhokLro
fgUnh vuqkn %ch0 ,0 ud ehul hjkcknh

प्रत्येक देश, जाति और धर्म में कुछ न कुछ लोग ऐसे हुए हैं, जिन्होंने अपनी सांसारिक आवश्यकताओं को, अल्लाह के न्याय को जीवित रखने के लिए अपर्ण कर दिया। ऐसे मनुष्य मानव इतिहास में जीवित हैं और सदैव जीवित रहेंगे, उनकी याद भी समयानुसार मनाई जाती है, परन्तु संसार की तमाम घटनाओं और कुर्बानी की श्रेष्ठतम उदाहरणों में, इमाम हुसैन, उन के सम्बन्धियों और मित्रों की शहादत एक ऐसी घटना है, जिसका जवाब किसी दूसरी जगह नहीं मिलता। यही कारण है कि इस शहादत से बिना जाति–पाति, धर्म, सम्प्रदाय, और प्रत्येक भौगोलिक विशेषताओं से अलग रहकर, तमाम लोग चाहे उनका सम्बन्ध किसी भी देश से क्यों न हो, प्रभावित हुए हैं और इस घटना की याद इस तरह मनाई जाती है, जिसका उदाहरण भी और कहीं नहीं मिलता है।

इमाम हुसैन की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए इतना कह देना पर्याप्त है कि कर्बला की इस अमर घटना का चौदह सौ वर्ष समाप्त हो जाने के पश्चात भी यह शोक इतना नवीन है, जैसे यह शहादत कल ही घटित हुई थी। प्रत्येक वर्ष मोहर्रम का चांद निकलते ही, हम को यह याद आ जाता है कि इमाम हुसैन अपनी मातृ–भूमि को छोड़ने पर विवश कर दिये गये थे और मरूस्थलों और वनों का गर्मी के दिनों में यात्रा करके कर्बला पंहुचे थे। जहां से उन को आगे बढ़ने की आज्ञा नहीं दी गई।

दूसरी मोहर्रम को उन के ख़ेमे (तम्बू) दरिया (नदी) से दूर जलती और तपती भूमि पर लगवाए गये, सातवीं मोहर्रम से पानी बन्द कर दिया गया और युद्ध छिड़ जाने का सारा प्रबन्ध नवीं मोहर्ररम तक सम्पूर्ण हो गया। इमाम हुसैन ने अपने शत्रुओं से एक रात का अवकाश मांगा और दूसरे दिन अर्थात् दसवीं मोहर्रम की वह और उन के साथी एक–एक करके शहीद कर दिये गये। इमाम हुसैन ने इस भीषण युद्ध काल में भी यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि अगर उन को छोड़ दिया जाए तो वह यज़ीद के राज्य और समस्त अरब देश से असम्बन्धित हो भारत वर्ष चले जाएंगे, लेकिन उन के शत्रुओं को यह सहन न हो सका कि वह मुस्लिम देश से बाहर निकल कर अपने हिन्दु मित्रों के शरण में जीवित रह सकें।

इतिहास का अध्ययन हम को यह सोचने पर विवश करता है कि आखिर शत्रु इमाम हुसैन को जीवित न रहने देने पर इतना व्याकुल क्यों था! कहा गया था कि इमाम हुसैन यज़ीद की बैअत (शपथ ग्रहण करना) कर लें और अगर वह बैअत न करें तो उन को वध कर दिया जाय। वर्तमान दशा समक्ष है, बैअत का यह अर्थ था कि इमाम हुसैन, जो सभ्यता, मनुष्यता, ईमानदारी, सच्चाई, न्याय तथा पवित्रता की मुर्ति थे, एक ऐसे व्यक्ति के आगे सिर झुका देते, जो किसी ईमानदार आदमी के सम्मुख आत्मिक, नेता होना तो दूर की बात सांसारिक राज्य के भी योग्य न था। इमाम हुसैन का हृदय कुचला नहीं जा सकता था, उनके लिए उनका वध कर दिया जाना सरल था। अपने हृदय की पवित्रता को सदैव के लिए जीवित बना देना उन के लिए आवश्यक हो गया। इस कारण वह अपने वध किये जाने पर ही टिके न रहे, बल्कि एक दिन के कुछ घण्टों में ऐसे बहत्तर साथियों की कुर्बानियां दे दीं जिन को वह बड़ी अच्छी तरह परख कर और अरब के समाज से चुन कर और अपने सोचे समझे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कर्बला लाए थे। इन बहत्तर साथियों में ऐसे बृद्ध भी थे, जिन को

आंखों से देखने के लिए पपोटे ऊपर खींचकर रूमाल से बांधना पड़े और घोड़े पर बैठने के लिए कमर को कस कर बांधना भी पड़ा और इन्हीं बहत्तर में नाबालिग़ (अव्यस्क) बच्चे भी थे, जिन में एक छः महीने का दूध
ा पीता बालक भी था। इन शहीदों की जीवनियां
पढ़कर बरबस यह कहना ही पड़ता है कि कर्बला के मैदान में मनुष्यता और बर्बता का खुला हुआ मुक़ाबला था, जिस में शहीद होने वालों ने अपनी जान की बाज़ी लगा कर मैदान जीत लिया।

इन समस्त घटनाओं व समयों के सम्मुख यह कहना ही पड़ता है कि इमाम हुसैन ने मनुष्यता को उच्च्च स्थान दिया और सज्जनता का सिर गर्व से ऊंचा हो गया। इस लिए हर व्यक्ति के वास्ते जिस के हृदय में मनुष्यता की श्रेष्ठता और व्यक्तित्व का दर्द है, यह आवश्यक है कि वह इमाम हुसैन की याद बनाए रखे और कर्बला की घटना से अपने दैनिक जीवन में पाठ लेता रहे। इमाम हुसैन के व्यक्तित्व से लेश मात्र भी प्रभावित हो जाने से हम में बहुत सी विशेषताऐं उत्पन्न हो सकती हैं और उन की याद हमको धार्मिक कट्टरता के स्तर से ऊंचा करके मनुष्यों की बीच में भाई–चारे का सम्बन्ध स्थापित करती है। मोहर्रम की मजलिसों को अगर धार्मिक रीति–रिवाज मान भी लें, तो शायद यही एक ऐसी रीति–रिवाज है, जिसमें प्रत्येक धर्म का व्यक्ति बराबरी के नाते एक तरह से बैठकर बराबर से सम्मिलित हो सकता है। यही वह धार्मिक सभा है, जिस में प्रत्येक धार्मिक विचार का व्यक्ति, केवल मनुष्य होते हुए एक सम्पुर्ण व्यक्ति की याद में, सांसारिक मोह को त्याग कर, आत्मिक विशेषताओं से प्रफुल्लित होते हुए अपने जीवन के हेतु आदर्श प्राप्त करता है। 

(इमामिया मिशन लखनऊ का प्रकाशन नं0 484 मोहर्रम 1386 हि0 /अप्रैल 1966)

ज़िन्दगी सकीना की

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहिबा

सब्र की अलामत है ज़िन्दगी सकीना की
बन्दगी की रिफ़अत है ज़िन्दगी सकीना की
मश्क ये अलम में है या अतश की है तारीख़
मक़सदी इशाअत है ज़िन्दगी सकीना की
ज़िन्दगी–ए–सरवर है उलफ़ते सकीना में
और पदर की उलफ़त है ज़िन्दगी सकीना की
इस तरह बलाओं में लोग मर ही जाते हैं
कोहे अज़्मो हिम्मत है ज़िन्दगी सकीना की
अब हुसैन की सूरत सरपरस्त हैं ज़ैनब
उनको एक दौलत है ज़िन्दगी सकीना की
हक़ के वास्ते जीना हक़ के वास्ते मरना
किस क़दर हक़ीक़त है ज़िन्दगी सकीना की
मश्क दे के अम्मू को सर झुका के कहती हैं
आपकी बदौलत है ज़िन्दगी सकीना की
जुरअते सकीना से हिम्मतों को निस्बत है
अज़्म से इबारत है ज़िन्दगी सकीना की
ज़िन्दगी रहे हक़ में बहरे रब बसर की है
कुल की कुल इबादत है ज़िन्दगी सकीना की
मक़सदे सकीना से है नदा को बस निस्बत
शायरी की क़िस्मत है ज़िन्दगी सकीना की

¼'ks u0 24 dk cfd;k------------------½
उसे अवगुणी तथा पापी कहा हैः–

है हमारे अवगुणों की भी न हद।
हाय गरदन भी उधर फिरती नहीं।।
देख करके दूसरों का दुख दर्द।
आंख से दो बूंद भी गिरती नहीं।।

ऐ अल्लाह! तू उन मनुष्यों को सुबुद्धि प्रदान कर जो इन दुश्यों को सुनकर विलाप नहीं करते एंव शोक मनाने वालों को खिल्ली पात्र समझते हैं उन पर हंसते हैं एंव रोने सी स्वाभाविक, प्राकुतिक वस्तु को घृणा दृष्टि से देखते हैं। हमारे लखनऊ के एक नवयुवक उच्च कवि 'माथुर' जी ने इसको भली प्रकार प्रदर्शित किया हैः–

इन्सान तो ग़म का आदी है।
फ़ितरत के लिए ग़म होता है।
मज़लूम अगर मरता है कोई।
हर क़ौम में मातम होता है।।

परन्तु केवल विलाप करना हीं पर्याप्त न होगा अपितु इमाम हुसैन का बलिदान जो ईश–भक्ति दृढ़ निश्चय, अडिग वीरता, धीरता, वचन पालन एंव कर्तव्यपरायण्ता आदि सदगुणों को संदेश एंव शिक्षा दे रहा है, उसका भी पालन करना होगा। तभी हम इस योग्य होंगे कि हुसैन के प्रेमी कहलाऐं।

(इमामिया मिशन, लखनऊ प्रकाशन नं0 262)

हुसैन का बलिदान

y§kd %J h J her Hkn Ur cksikku Uh egkfl r k$
fgUnh h v uqokn %t ukc fet kZl Tt kn gq S l kgc

भली भांति विचार करने पर हमें मानव 4 श्रेणियों में विभक्त दिखलायी पड़ते हैं। प्रथम नरकीय कोटि के प्राणी हैं जो प्रत्येक क्षण जुआ, मदिरा,–पान, भोग विलास, धन सम्पत्ति, लूटने आदि पापों में ही तल्लीन रहते हैं। कभी पुण्य कर्मों की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता, अपितु सद्मार्गियों को ये खिल्ली–पात्र समझते हैं। उनकी हंसी उड़ाते हैं। द्वितीय स्वर्ग कोटि के मानव अथवा देवता हैं जो उत्तमोत्तम सुखों का भोग करते हैं और आनन्दित होते हैं एंव साहस्य मनुष्यों के सुख का अकेले ही भोग करते हैं। ये मनुष्य दूसरों को अपने ऊपर जाने देना अर्थात दूसरों को अपने से उच्च पदाधिकारी हुए देखना तो क्या अपने समान होते देखना पसन्द नहीं करते सदैव औरों को अपने से नीचा एंव तुच्छ देखना चाहते हैं। उनका कहना है कि हमारी दासता में जो रहेगा वह सुख को प्राप्त करेगा। जो विरोध करेगा वह दन्ड–भोगी होगा। ये लोग अपने अधिकारों एंव अपने सुखों को स्थायी बनाये रखने के लिए एंव उसमें और भी विकास करने के लिए बहुत पूजा–भक्ति दान पुण्य भी करते हैं तथा अपनी कुशलना एंव मंगलता के लिए प्रार्थनाएं भी करते हैं। इस प्रकार के मनुष्यों में देवता भी सम्मिलित हैं जैसा कि तुलसीदास जी ने अपनी रामायण के उत्तराकान्ड में लिखा है।

इन्दरन द्वार भरोखा नाना।
तन तन सुर बैठ करी थाना
ओत देखें विश्य बिहारी।
ते हत्थी देन्ह कपाट उधारी
जब सू पर भनजन उर गुरू आयी।
अब हैं दीप व ज्ञान बुझायी
ग्रन्थी न छुटी मिटा सुर प्रकाश।
बुद्धि बिकल भयी विश्व बताया
इन्दर नह सुर न ज्ञान सुहायी।
विश्व भोग पर प्रीति सदायी

(अर्थ) शरीर में पंच प्रमुख इन्द्रियों के जो समस्त कपाट हैं प्रत्येक पर देवता अपना अड्डा जमाये हुए हैं वे लोग जब काम वासनाओं की हवा को आते हुए देखते हैं तो तत्काल ही कपाट खोल देते हैं एंव जब ये काम–वासनाओं की हवा हमारे हृदय में घर कर लेती है तो यह हमारे ज्ञान–दीप को बुझा देती है तथा पदार्थ एंव आत्मा में जो गुत्थी पड़ी हुई है वह नहीं खुल पाती। इस समय स्वभाव, प्रकृति एंव खरा खोटा परखने वाली बुद्धि इस वायु की आंधी से व्याकुल हो जाती है। वास्तविकता तो यह है कि ज्ञान एंव प्रकाश इन इन्द्रियों के देवताओं को भला नहीं लगता। काम–भावनाओं एंव सुख–भोग की इच्छाओं से ही इनको प्रेम है। भाव यह है कि देवता कोटि के मानव इसको कदापि पसन्द नहीं करते कि सर्व साधारण असत्य की पूजा को छोड़कर सत्य–पूजक एंव ईश्वर–भक्त बन जाए क्यों कि उन्हें भय है कि यदि सर्व–साधारण मानव सत्य के भक्त बन जाएंगे तो फिर देवताओं की पूजा कौन करेगा? यथाकारण वे इन्हें यत्नपूर्वक नाशुक वस्तुओं की पूजा में लगाये रखते हैं अर्थात वे मनुष्यों को सदैव असत्य मार्ग पर चलाते हैं।

तृतीय श्रेणी में मोक्ष अढ़त्ट कोटि के मानव हैं ये लोग सांसारिक सुखों की प्राप्ति से घृणा सी करते हैं क्यों कि सांसारिक वैभव एंव सुख बिना किसी को कष्ट पंहुचाये हुए प्राप्त नहीं होते। जब हम ध्यान पूर्वक देखते हैं तो ज्ञात होता है कि एक का सुख दूसरे के कष्ट पर, एक की स्वतन्त्रता दूसरे की दासता पर एंव एक का जीवन दूसरे की मृत्यु पर अवलंबित है। आदि आदि।

दूसरा पहलू इसका यह हैं कि जिस सुख की प्राप्ति के हेतु आज हम भगीरथ–प्रयास कर रहे हैं कल वह हमारे लिए साधारण हो जाता है, एंव उससे बड़े (अधिक) सुख की इच्छा उत्पन्न हो जाती हैं एंव हम उसके लिए उत्सुक हो उठते हैं। इसी प्रकार बड़े से बड़े ऐश्वर्य, सुख एंव वैभव–प्राप्ति का सिलसिला क्रमशः लगा रहता है एंव उत्सुक एंव व्याकुल होते रहते हैं। यही कारण है कि इस संसार के भीतर महान ज्ञानियों एंव पण्डितों के मस्तिष्कों में मोक्ष (निज़ात) का विचार उत्पन्न हुआ तथा खोज होने लगी।

इस वास्तविकता का अनुभव करके एंव संसारिक सुखों को दुख व कष्ट का कारण जानकर वे लोग त्यागी हो गये एंव मुक्ति तथा मोक्ष प्राप्त करने का यत्न करने लगे क्योंकि मोक्ष अथवा मुक्ति वह परम शान्ति है जिसे प्राप्त कर लेने के पश्चात् कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता।

मलिक मोहम्मद जायसी ने इसकी कुछ झलक अपनी पदमावत में इस प्रकार दिखाई हैः–

अर्थात वह दशा एंव स्थान जहां पंहुचने के बाद फिर लौट कर नहीं आता।

चौथी श्रेणी के मानव वे हैं जिन्हें हम बुद्धिमत्व कहते हैं ये लोग भी सांसारिक सुखों मे फँसना अच्छा नहीं समझते बल्कि उन्हें व्यर्थ जानते हैं एंव मानव जाति का प्रमुख ध्येय मोक्ष–प्राप्त को समझते हैं किन्तु इनका कहना है कि केवल अपनी मुक्ति अथवा मोक्ष–प्राप्ति के हेतु एकान्तवासी हो जाना अथवा ध्यान–समाधि द्वारा प्रयत्न करना पर्याप्त नहीं है बल्कि समस्त मानव जाति की मोक्ष–प्राप्ति के लिए यत्न करना नितान्त आवश्यक है एंव हमारा अनिवार्य–कर्तव्य है । ये लोग पतितों का उद्धार, भूले भटकों को सद्मार्ग पर लाना तथा सत्य एंव न्याय के हेतु त्याग व अपना बलिदान करना कर्तव्य समझते हैं।

मैं इमाम हुसैन को इसी कोटि का मानव समझता हूँ। उन्होंने कर्बला के मैदान में अपना अपने पुत्रों, सम्बन्धियों एंव अपने प्रिय मित्रों (साथियों) का अति महान बलिदान किया किन्तु एक दृष्ट एंव चरित्रहीन शासक के आगे अनुचित रूप से शीश नवाना उचित न समझा। यदि वह यज़ीद को धार्मिक अधिष्ठाता व उत्तराधिकारी (ख़लीफा) स्वीकार कर लेते तो वह स्वयं अपना जीवन अति सुखपूर्वक व्यतीत कर सकते थे किन्तु उन्होंने अपने निजी व व्यक्तिगत सुचा को ठुकराया, यथाकारण मैं इमाम हुसैन को बहुत प्यार एंव आदर की दृष्टि से देखता हूँ।

इमाम हुसैन का यह बलिदान एंव भेंट हिन्दू, बुद्ध, जैन, मुसलमान, ईसाई, पारसी इत्यादि सभी धर्मो के लिए पालन–योग्य है। सबको इससे शिक्षा ग्रहण करना चाहिए।

इस्लाम के दृष्टिकोणानुसार पंजतने पाक अर्थात हज़रत मुहम्मद, उनकी सुपुत्री हज़रत फ़ातिमा उनके दामाद हज़रत अली तथा मोहम्मद साहब के दोनों नाती हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन ये पाँच देवता तुल्य मानव अत्यन्त पवित्र हैं एंव इनके शरीर प्रत्येक अपवित्रता एंव, अवगुण से रहित हैं तथा इनके शरीर उन वस्तुओं से निर्मित नहीं हैं जिनसे सर्व–साधारण के अपितु इनके शरीर पवित्र आध्यात्मिकता रूहानियत) से परिपूर्ण हैं जैसे कि शक्कर के खिलौने के भीतर–बाहर सब तरफ तथा प्रत्येक अंग एक सी मिठास से भरा होता है एंव इन पाँचों में इमाम हुसैन को वह स्थान प्राप्त है कि स्वयं हज़रत मोहम्मद उन्हें सबसे अधिक प्यार करते थे। जब हज़रत मोहम्मद मिम्बर (एक उच्च स्थान जहां बैठकर मस्जिद में प्रवचनादि दिया जाता है) पर बैठे हुए अल्लाही संदेश सुना रहे होते तो उस समय यदि कभी इमाम हुसैन पंहुच जाते तो आप इमाम हुसैन को प्रेमपूर्वक बुलाते तथा उन्हें अपनी गोद में बिठाकर भाषण प्रारम्भ कर देते थे। हज़रत मोहम्मद के पास इस से बढ़कर कोई प्यार नहीं हो सकता था तथा आप का यह प्यार केवल इमाम हुसैन ने अपने नाना हज़रत मोहम्मद के पवित्र धर्म इस्लाम के लिए कर्बला के मैदान में अपना अद्वितीय बलिदान देकर चुका दिया।

कर्बला की हृदय–वेधक घटना की स्मृति एंव इमाम हुसैन का महान त्याग एंव बलिदान के मूल्यस्वरूप अब तक लाखों भाई प्रत्येक वर्ष मोहर्रम के दिनों में शोक मनाते एंव विलाप करते हैं।

इतिहास के पृष्ठों में इमाम हुसैन की भांति कोई ऐसी घटना नहीं मिलती जिसके लिए लाखों मनुष्य प्रति वर्ष शोक व विलाप करते एंव अश्रु–धारा प्रवाहित करते हैं।

(इमामिया मिशन, लखनऊ प्रकाशन नं0 300)

हुसैन पर विलाप

y§kd %tukc fetkZl Ttkn gl wSa l kgc] l kfgR; fo'kkjn

इमाम हुसैन की करूणाजनक एंव विलापपूर्ण हत्या (शहादत) पर अश्रुधारा प्रवाहित करने पर उनके शत्रु दो प्रकार से आक्षेप करते थे।

(1) स्वास्थ्य एंव संसारिक दृष्टिकोण से

(2) धार्मिक दृष्टिकोणानुसार।

वास्तव में इन आक्षेपों का भी मूल्य नहीं है एंव यह निराधार है। सच पूछिए तो यह बाहरी ह्रदय से हुसैन के प्रेमी विलाप पर आक्षेप की आड़ लेकर हुसैन के बलिदान–बखान तथा उनके आदर्शो एंव शिक्षाओं के वर्णन को समूल नष्ट कर देने का व्यर्थ भगीरथ प्रयास करते हैं।

प्रथम स्वास्थ्य सम्बन्धी दृष्टिकोण से जो आक्षेप किये जाते हैं उनमें रोने से कायरता उत्पन्न होती है, विलाप करना मानव की बलहीनता का द्योतक है आदि की गणना है इस प्रकार के आक्षेपों के उत्तर–स्वरूप मैं केवल हिन्दी के प्रसिद्ध दैनिक पत्र स्वतन्त्र–भारत में प्रकाशित एक लेख ''नैनन भर आए नीर'' को प्रस्तुत कर देना ही प्रयाप्त समझता हूं। जिससे यह भलीभांति स्पष्ट हो जायेगा कि रोना हमारे स्वास्थ्य के प्रति हानिकारक है या न रोना।

''सामान्य जल के समान प्रतीत होने वाले आंसुओ में कितनी शक्ति है इसे प्रत्येक सहृदय व्यक्ति भलीभांति जानता है।

महकवि मिलटन ने आंसुओं को मृत्युज्जयी'' कहा है आज के वैज्ञानिक कवि इस सत्य को तो चरितार्थ नहीं कर पाये है, किन्तु आंसु की कृमि नाशक शक्ति का परिचय उन्होंने अवश्य पा लिया है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि एक चम्मच आंसू यदि 100 गैलन पानी में डाल दिया जाए, तो उस जल के समस्त कीटाणु मर जाएंगे। इतना ही नहीं आंसू की कृमि नाशक शक्ति इतनी तीव्र होती है कि 6 हजार गुने जल में मिश्रत होने पर भी यह शक्ति बनी रहती है।

अन्य कृमि–नाशक पदार्थों की अपेक्षा आंसू की सबसे बडी विशेषता यह है कि वह काफी समय तक कीटाणु से लड़ता रहता है तथा जब तक कीटाणु जीवित रहते हैं तब तक आंसू उनको नष्ट करने में अपनी चेष्टा बन्द नहीं करता।

हमारे शरीर में आंख एक अत्यन्त नाजुक अंग है। शायद इसी कारण प्रकृति ने उसकी रक्षा के लिए आंसू में ऐसी संरक्षण शक्ति भर दी है।

वैज्ञानिकों नें आंसू का रसायनिक विश्लेषण भी किया है। उनका कहना है कि आंसू में 94 प्रतिशत पानी होता है और 6 प्रतिशत में कुछ क्षार तथा लाइसोजाइम नामक रसायनिक तत्व। लाइसोजाइम हमारे खून में भी किसी न किसी मात्रा में रहता है। वस्तुतः कृमि नाशक शक्ति इसमें ही रहती हैं।

जब आंसू निकलता है उस समय मनुष्य में सिसकने तथा फूट फूट कर रोने की भावना जाग्रत हो उठती है। प्रश्न है, आखिर हम रोते ही क्यों हैं? इस प्रसंग में विशेषज्ञों का मत है कि आज का मनुष्य अपने बाहरी जीवन एंव तदनुसार अपने मानसिक चिन्तन में पहले की अपेक्षा अधिक संवेदनशील हो गया है। उसकी भावनाएं अपने आदि रूप में बिल्कुल अपरिपक्व थी। और उन पर उसका काबू एक दम नहीं के बराबर था। भावनायें जिधर चाहती उधर मनुष्य को चलाती रहतीं। किन्तु इतने वर्षों के विकास में मनुष्य ने भावनाओं पर काफी काबू प्राप्त कर लिया है। आज का मनुष्य भावनाओं की दया पर मारा मारा फिरने वाला जीव नही है। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि भावनाओं ने पराजय स्वीकार कर ली और वे मनुष्य की आज्ञाओं का बिना किसी विरोघ के पालन

करने लगीं है। इसके विपरीत वे मनुष्य के दबाव का हर दम विरोध करती हैं, उससे लड़ती हैं। भावनाओं की यह मजबूरी ही वस्तुतः हमारे रोने मे प्रतिफ़लित होती हैं। जब भावनाओं को अपने आदि रूप में खुल कर व्यस्त होने की सुविधा नहीं मिलती, तभी वे रूदन के रूप में बरबस बरस पड़ती हैं। जैसा कि कविवर 'प्रसाद' ने भी लिखा है :

जो घनी भूत पड़ी थी
मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुदिन में आंसू बन कर
वह आज बरसने आयी।

जब हर्ष अथवा विषाद से हमारी भावनाएं अद्विलत होती हैं तो हमारी आंख के कोनों में एक तीखा वाष्पीय पदार्थ पैदा होने लगता है। उस तीखे वाष्प के कारण आंसुओं की थैली (लैक मेल सैक) की नली जो नाक के रास्ते निकला करती है, इस रास्ते न निकल कर आंख के रास्ते निकलने लगती है।

वैज्ञानिकों के मतानुसार जो आदमी कभी नहीं रोता वह साधारण ढ़ंग का आदमी नहीं होता। इस न रोने को उसके मस्तिष्क की विकृति माननी चाहिए। अक्सर देखा गया है कि न रोने वाला मनुष्य या तो दमा का शिकार होता है या उसके बहुत फोड़े निकलते हैं। यह भी कहा जाता है कि कुछ रोगों में आंसुओं का निकलना बिल्कुल बन्द हो जाता है। आयुर्वेद में आंसुओ द्वारा कितने ही रोगों के उपचार का भी उल्लेख मिलता है।

मनोविज्ञान–वेत्ता इस बात को भी मानते हैं कि कभी कभी दिल खोलकर रो लेना हमारे लिए बड़ा हितकर है।

प्राचीन काल में मिस्र में यह प्रथा कि महिलाएं अपने आँसू बोतलों में एकत्र किया करती थीं। उस अश्रु जल को लोग परम पवित्र मानते थे और मृत्यु के बाद इस अश्रु जल से भरी बोतलें भी शव के साथ क़ब्र में रख दी जाती थीं सोलहवीं शताब्दी में कुछ देशों में यह प्रथा थी कि जब किसी नारी का पति युद्ध में मारा जाता था तो वह अपने अनन्य प्रति–प्रेम एंव सतीत्व का प्रमाण देने के लिए विरह काल के आंसू सुन्दर फूलदार बोतलों में बड़े यत्न के साथ एकत्रित करके रखती थीं।

हास्य की भांति रूदन भी मानव का सहज स्वभाव है। हर्ष, प्रेम, करूणा, विरह, ग्लानि आदि भावनाओं का अतिरेक होने पर सामान्य रूप से आंखों में आंसू छलक आते हैं। उनसे न केवल अन्तःकरण की भावनांये प्रकट हो जाती हैं बल्कि दूसरे भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। साहित्य में इसी लिए रूदन और आंसुओं को भी बहुत महत्व मिला है। कुछ लोग तो इसे हंसी से ज्यादा मुश्किल मानते हैं। उर्दू कवि 'दाग़' के शब्दों मेंः–

''थमते थमते थमेंगे आंसू
रोना है कुछ हंसी नहीं है।''

उपरोक्त विवरण से यह सुस्पष्ट है कि रोना, विलाप अथवा अश्रु धारा प्रवाहित करना स्वास्थ्य के प्रति हानिकारक नहीं है एंव नकायरता का घोतक ही है।

इसके विपरीत न रोना ही मनुष्य की बुद्धि शून्यता एवं रोगी होने का परिचायक है तथा उपरोक्त लेख से यह भी ज्ञात होता है कि हास्य की भांति रूदन एंव विलाप मानव प्रकृति है एंव प्रकृति पर आक्षेप करना अप्रत्यक्ष रूप से मानव प्रकृति निर्माता परमपिता परमात्मा (अल्लाह) पर आक्षेप है एंव अल्लाह पर आक्षेप करने का साहस करना मनुष्य के नास्तिक एंव अधर्मी (पापी) होने के लिये पूर्ण प्रयाप्त है।

दूसरी ओर कुछ धार्मिक दृष्टिकोण से भी आक्षेप किये जाते हैं। उदाहराणर्थ कभी कहा जाता है कि आशूर का दिन (मोहर्रम की दस तारीख) पहले ईद का दिन था। रोना धर्म में एक नई वस्तु को जन्म देना (बिद्दत) है विशेषतयः शहीदों पर रोना क्योंकि वह जीवित हैं।

आईये रोना धर्म में एक नई वस्तु का सम्मिलित करना है एंव शहीदों पर न रोना चाहिए इस पर भी दृष्टिपात करें। बिदअत क्या है? धर्म में किसी नयी वस्तु को सम्मिलित कर लेना ही बिदअत है जो कुरआन और हदीस के विपरीत हो। इस्लाम–अनुयाइयों को बिदअत व पाप, पुन्य व सदकर्म आदि का ज्ञान कराने वाला कौन था? प्रत्येक उत्तर देगा हजरत मोहम्मद। तो लोग यदि इमाम हुसैन पर विलाप करने को बिदअत व पाप समझते हैं तो हजरत मोहम्मद के जीवन चरित्र का ही अध्ययन करना होगा एंव आप का ही कथन एंव कर्म में मुसलमानों के हेतु इस योग्य होगा कि उसका पालन किया जाये। हजरत मोहम्मद की जीवन घटनाओं के अध्ययन से हमें यही ज्ञात होता है कि आप कितने ही बार रोये हैं एंव हजरत मोहम्मद स0 के देहावसान पर उनके सम्बन्धी, साथी

एंव पत्नियों ने भी विलाप किया है यह सब कुछ सुन्नियों की धार्मिक पुस्तकों में भी लिखा है उदाहरणार्थ देखिए सहीह बुखारी, व अहयाउल उलूम, रौज़तुलअहबाब आदि।

हजरत मोहम्मद ने हजरत खदीजा (आप की प्रिय पत्नी) की मृत्यु पर अश्रु बहाये हैं तथा उसके बाद भी जब कभी याद आ जाया करती थी रोया करते थे। इतना ही नही जिस वर्ष हज़रत ख़दीजा और हज़रत अबूतालिब (हज़रत मोहम्मद के चचा) का देहान्त हुआ है उस वर्ष का नाम भी आपने आमुल हुज़न (शोक का वर्ष) रखा। एक अंग्रेज लेखक वाशिंगटन अरविंग ने History of Islam (इस्लाम का इतिहास) नामक पुस्तक के पृष्ट 70 पर इस प्रकार लिखा है।

She was sixty five years of age. Mohemet wept bitterly at her tomb and clothed himself in mourning for her and Abu Talib. So that this year called the year of mourning.

अनुवादः—उसकी (खदीजा) की आयु 65 वर्ष की थी मोहम्मद उनकी समाधि (कब्र) पर फूट फूट कर रोये। खदीजा और अबूतालिब के मृत्यु शोक में मातमी वस्त्र धारण किये यथाकारेण वह वर्ष "शोक" वर्ष कहलाया।

किन्तु कहा जाता है कि उनको तो देहावसान हुआ था, विलापादि ठीक था किन्तु शहीद जिनके प्रति पवित्र कुरआन का आदेश है कि देखो शहीद को कदापि मरा हुआ न समझना। उन पर तो रसूल न रोये। जी नहीं हजरत मोहम्मद की जीवन कथाओं का अध्ययन कीजिए, ये समस्या स्वंय सुलझ जायेगी कि हज़रत मोहम्मद शहीद पर भी रोये हैं। जाफरे तैयार शहीद हैं आप की शहादत का समाचार जब हजरत फातिमा को ज्ञात हुआ तो आप रोने लगीं रसूल ने देखा तो मनाही न की, रोका नहीं बल्कि एक आदेश भी दे दिया है कि जाफ़र ऐसे व्यक्ति पर तो राने वालों को रोना ही चाहिए। चलिए निर्णय हो गया अब शहीद पर रोने पर आक्षेप करने का साहस किसी में न होना चाहिए। हजरत मोहम्मद ने यह कहकर कि जाफर ऐसे व्यक्ति पर रोना ही चाहिए बतला दिया कि जो व्यक्ति जाफ़र के ऐसे गुणों एंव विशेषताओं का पात्र हो एंव निर्दयता से शहीद किया जाये तो शोक मनाना ही चाहिए और यह कथन पवित्र कुरान की कसौटी पर खरा भी उतरता है इस लिए कि फिरऔन जो स्वंय को ईश्वर कहलवाता था उसके डूब कर मर जाने पर कुरान में है कि उस पर न जमीन रोयी न आकाश रोया, भाव यह हुआ कि कुकर्मी, दुष्ट एंव पापी की मृत्यु पर कोई भी अश्रु धारा प्रवाहित नहीं करता।

यदि अब भी हज़रत मोहम्मद के शहीद पर विलाप करने में किसी को सन्देह हो तो देखे रसूल के विलाप को न केवल शहीद पर बल्कि उस पर जो शहीदों में सर्वश्रेष्ठ है, और जिन्हें समस्त मुसलमान "सय्यदुश शुहदा" की उपाधि से विभूषित करते हैं अर्थात हज़रत हमज़ा। इतिहास के पृष्ठ साक्षी है कि जब हज़रत अमीर हमज़ा की उहद नामक युद्ध में शहादत हो जाती है एंव रसूल ने देखा कि हमज़ा की बहन आ रही हैं तब आपने हज़रत अली से कहा कि हज़रत हमज़ा के शव पर चादर डाल दो ताकि बहन की दृष्टि भाई के नग्न शव पर न पड़े। हज़रत अली अ. ने चादर उनके शव पर ड़ाल दी। जब आप की बहन आयीं और रोने लगीं तो हजरत मोहम्मद स. ने यह नहीं कहा कि तुम्हारे भाई जीवित हैं वह शहीद हुए हैं विलाप न करो अपितु स्वयं रोने लगे और यहां तक रोये कि आप की हिचकियां बंध गयी।

युद्ध स्थल से लौट कर जब आप मदीने आये और देखा कि प्रत्येक ग्रह से युद्ध में शहीद होने वाले सम्बन्धी पर विलाप करने की आवाज़ें आ रही हैं किन्तु अमीर हमज़ा पर रोने वाला कोई नहीं। देखिए पैग़म्बर स्वंय शहीदों पर रोने का आदेश दे रहे हैं। मदीने की स्त्रियों को जब यह ज्ञात हुआ तो एकत्रित हुयीं और अमीर हमज़ा पर विलाप किया।

लीजिए हज़रत हमज़ा पर रोने के लिए हज़रत मोहम्मद ने स्वंय आदेश दिया एंव आप ही का कथन एंव कर्म मुसलमानो के हेतु इस योग्य है कि उसका पालन किया जाये। किन्तु फिर भी ये कहा जाता है कि उस समय तो शोक मना लेना उचित है किन्तु कई वर्ष पश्चात भी उसी प्रकार शोक मनाना एंव परिपाटी सी बना लेना कदापि उचित नहीं। किन्तु आईए और देखिए रसूल स. कई वर्ष पश्चात अपनी प्रिय माता की क़ब्र पर अश्रु धारा प्रवाहित करते दृष्टिगोचर होते हैं इसको अंग्रेज लेखक वाशिंगटन अरविंग अपनी पुस्तक के पृष्ठ 181 पर इस प्रकार लिखता हैः—

" His (Mohd.) heart yearned to pay a

fatial tribute to her memory. He burst into tears on arriving at this trying place of tender effections.

अनुवादः—आपका (हज़रत मोहम्मद स.) का ह्रदय अपनी माता की क़ब्र पर पुत्र होने के नाते श्रद्धांजलियों के पुष्प चढ़ाने के लिए बेचैन हो गया अतएव आप उस स्थान पर पहुंचे जहां आप की प्रिय माता की क़ब्र थी और आप फूट फूट कर रोये।''

उपरोक्त स्थलों एंव घटनाओं से भली भांति विदित है कि विलाप करना बिदअत व पाप नहीं है, अपुति एक पुण्य कर्म है क्योंकि यह तो हज़रत मोहम्मद के द्वारा किये गये कर्मों के पालन हैं। अब आइये हज़रत मोहम्मद की पत्नियों के विलाप पर भी एक विहंग दृष्टि डाल लें। इसी अंग्रेज लेखक ने हजरत मोहम्मद की पत्नियों के विलाप को हज़रत मोहम्मद के देहान्त अवसर पर निम्न शब्दों में लिखा है :—

Ayesha outeries brought the other wives of Mohemet and their clamourous grief soon made the event khown throughout the city.

अनुवादः—आएशा की रोने की आवाज़ों को सुनकर हज़रत मोहम्मद स. की दूसरी पत्नियां भी आ गयीं तथा उनकी रोने की आवाज़ों ने रसूल स. की मृत्यु की ख़बर अतिशीघ्र शहर में पहुंचा दी।''

एंव जब रसूल स. के देहान्त का समाचार अबूबक्र ने हज़रत मोहम्मद स. के साथियों के समूह में सुनाया तब अरविंग लिखता हैः—

people (Sahaba) listened to Abubakar with tears and sobbings.

अनुवादः—लोग अबूबक्र की बात रो रो कर और सिसकियां लेकर सुन रहे थे।

अब तो सहाबा (हज़रत मोहम्मद के साथियों) के अनुयायी होने का दावा करने वाले भी विलाप पर आक्षेप नहीं कर सकते तथा रोने के विरोधी नहीं हो सकते।

उपरोक्त वर्णन से यह भली भांति स्पष्ट हो गया है कि रोना, विलाप करना आदि न तो स्वास्थ्य सम्बन्धी दृष्टिकोणानुसार ही हानिकारक है (बल्कि इस के विपरीत स्वास्थ्य के प्रति लाभप्रद है एंव न रोना ही रोगी एंव बुद्धिहीन होने का द्योतक है) तथा न रोना तो धार्मिक दृष्टिकोण से ही पाप है अपितु पुण्य है क्योंकि रोना हज़रत मोहम्मद का आदेश है तथा इसी रोने के लिये इमाम जाफ़रे सादिक़ ने कहा है :—

''रोये, रूलाए अथवा रोने वाले की सी मुखाकृति बनायें तो वह ज़न्नत का एवं जन्नत (स्वर्ग) उसकी है।''



¼s uå 42 dk cfd+k------------½

सख़्त सुस्त कह बिन ज़याद ने
भेजा फिर यज़ीद के पास
सही वहां बेतरह मुसीबत
रह यज़ीद के क़ैदी खास

रोते इन्हें देख हंसता था
वह ज़ालिम जल्लाद यज़ीद
दुखद मोहर्रम मुज़लूमों का
बना ज़ालिमों के हित ईद

अहलेबैत ज़ालिम यज़ीद से
छुटकारा पाने के बाद
शाम देश से वापस आकर
हुये मदीने में आबाद

आज तलक जिस क़दर मुसीबत
सही हुये जिस क़दर ज़लील
ताक़त कहां क़लम जो लिखती
सब तकलीफ़ों की तफसील

याद शहीदों को करके सब
रोया करते थे दिन रात
हुयी यहां से दुनिया में
मजलिस मातम की शुरआत

राहे रास्त पर थे हुसैन
इस लिए अभी क़ायम है शान
मगर यज़ीदी खानदान का
मिटा जहां से नामों निशान

दुनिया के कोने कोने से
सुनते हैं हम हाय हुसैन
कितना प्यारा था अब भी है
और रहेगा भी दिन रैन

ऐ भारत के नौनिहाल
अपना लो सब हुसैन की राह
दुनिया में गर अमर नाम
कर जाने की है तुमको चाह



(इमामिया मिशन लखनऊ प्रकाशन नं0 296)

सत्य का पुजारी

y§kd %iafMr Jhx.ks'kizlkn 'kqDy]fjVk;MZLVs'ku ekLVj

प्रथमहिं क़लम लिखे लेखक की
बिस्मिल्ला रहमाने रहीम
अस्सलाम फिर पैग़म्बर को
जिन पर किरपा करत करीम

लाय सुनाये रूच ज़मीं पर
अल्ला ताला के पैग़ाम
अता किया फिर जिन्हें खुदा ने
कल्मा और दीन इस्लाम

हो रसूल की हम्दो सना क्या
लिखते सिफत क़लम थर्राराय
ताबे क़यामत दो जहान के
आलिम कहें कही ना जाय

हैं वजिन्स तारीफ़ मुहम्म्द
जिनकी उम्मत धार्मी वीर
हुए एक से एक जिहादी
जिनमें सर्व श्रेष्ट शब्बीर

लख्ते जिगर फ़ातिमा के
नाती रसूल के थे सरदार
जो अपने इस्लाम दीन पर
पराधीन हो हुये निसार

जिसने जीत लिये सबके दिल
करके प्यार नेक व्यवहार
सचाई से डिगे न चाहे
हो गरदन पर झुकी कटार

दुनिया जिसकी यादगार में
करे ताज़िया दारी आज
मुस्लिम क्या हिन्दू भाई के
घर घर में है कहीं रिवाज

सहे कष्ट जो दीन बचाते
आते याद दहला दिल जाय
पत्थर से भी कठिन कलेजा
पिघला देतीं आंख बहाय

आज यहां मुख्तसिर कहानी
मरदाने की करू बयान
थाम कलेजा ले हाथों से
चाहें जो कि सुने बलिदान

अरब देश में दूर दूर जब
फैल चुका मज़हब इस्लाम
सन् चालिस हिजरी में थे
कूफ़ा के हज़रत अली इमाम

हज़रत के शहीद होने पर
हुये हसन दूसरे इमाम
गुल ज्यों खिलें बहार आने पर
त्यों खिल खिला उठा इस्लाम

उन्हीं दिनों माविया नाम का
था कूफ़ा में हाकिम एक
दिल का हसदी पापी दोषी
ऊपर मेहरबान और नेक

अपनी शतरंजी चालों में
उसने लिया हसन को फांस
मुंह में शीरीं सखुन मगर थी
दिल में कुछ ज़हरीली गांस

बुलवा भेजुंगा हुसैन को
देंगे जैसी आप सलाह
बाद हमारे फिर कूफ़ा के
होंगे वही ख़लीफा वाह

हसन खुशी से त्यागि ख़िलाफत
हुये इबादत में मश्ग़ूल
हरे भरे इस्लाम चमन में
दिन दिन लगी बरसने धूल

मौक़ा पाते ही ज़ालिम ने
दिया हसन को ज़हर दिलाय
फिर अपने बेटे यज़ीद को
वहीं ख़लीफा दिया बनाय

कोशिश करके बड़े बड़ों से
बैअत काग़ज़ लिए लिखाय
इसी तरह धोखे बाज़ी से
लिया दमिश्क शाम अपनाय
फिर क्या कहना है यज़ीद का
जब पाया मर्तबा बलन्द
आवारा ऐयाश शराबी
पहले से अब हुआ दुचन्द
होने लगे जमा दरबारी
चुग़ल खोर और नमक हराम
करे खुशामद जो यज़ीद की
बने मुसाहिब और हुक्काम
रैयत में अमीर ज़ादो की
होती इज़्ज़त खातिर बात
दुखियारे ग़रीब फ़रियादी
पाते दर दर जूता लात
खुले आम सड़कों पर अब तो
खोलें जुवा जुवारी लोग
है न यहां इस्लाम धर्म की
छीछा लेदर कहने योग
जहां तहां बेटी बहनों की
इज़्ज़त लोग बचाते भाग
लगी फैलने जब यज़ीद के
ज़ुल्मों की बुनियादी आग
तंग आगये कूफ़ा वाले
सब यों करने लगे सलाह
पार लगेगी नाव किस तरह
बीच धार से बिना मलाह
दुनिया में हुसैन से बढ के
कौन नमाज़ी रोज़ेदार
दीन दार इस्लाम धर्म पर
जो खुद को कर सके निसार
अल्लाह वाले नेक तबीयत
दिल में दरदीलों की आह
वही बचा सकते हम सब को
बतला सकते नेक सलाह
नामें में दिल खोल लिख दिया
सब यज़ीद का कच्चा हाल
फिर अपना दुख भरा कलेजा
काग़ज पर रख दिया निकाल
नामा पढ़ते ही हुसैन के
दिल पर गयी मुर्दनी छाय
दुर्गत से इस्लाम बचे
किस तरह सोचने लगे उपाय
चचा ज़ात भाई मुस्लिम को
फौरन अपने पास बुलाय
भेज दिया कूफ़ा नगरी को
सब प्रकार समझाय बुझाय
मुस्लिम के आते कुफ़ा वालों
के पड़ी जान में जान
मस्जिद से अब दूर दूर तक
फिर सुन पड़ने लगी अज़ान
मस्जिद में पांचों वक्तों की
सब जमात में पढ़े नमाज़
गूँज उठी इस्लाम धर्म की
फिर चौतरफ़ा वही आवाज़
जब यज़ीद को मिली ख़बर
फ़िलफ़ौर शहर कोतवाल बुलाय
हुक्म दिया मारो मुस्लिम को
गद्दारी का ऐब लगाय
हुआ हुक्म तामील लिया
मुस्लिम का फौरन शीश उतार
बेरहमी से मुस्लिम के
दोनों बेटे भी डाले मार
फिर भी हुयी न पूरी हसरत
उस ज़ालिम यज़ीद की हाय!
पास मदीने के हाकिम को
भेजा परवाना लिखवाय
बैयत लिखवा लो हुसैन से
वरना करदो काम तमाम
ढोंगी है इस्लाम धरम को
करता है नाहक़ बदनाम
परवाना पाकर वलीद ने
बुलवाया हुसैन को पास
कहा पढ़ो यह परवाना है
बैयत लिख दो हो न उदास
पढ़कर शाही हुक्म हुआ
हज़रत हुसैन का अबतर हाल
जान माल का ख़ौफ न था
था नाना की इज्ज़त का ख्याल

दिल पर क़ाबू पा हुसैन
बोले वलीद से सुनें जनाब
सोंच समझ कर ही शायद
परवाने का दे सकूँ जवाब
यह कहकर हज़रत हुसैन
वापस चल पड़े मक्का की ओर
डगमग पड़ते पैर राह में
क्यों कि घुसा था दिल में चोर
सारा कुनबा बुला शाम को
सभी कैफियत कही सुनाय
ख़तरे में इस्लाम जान है
हज़रत की सुनि गये सुखाय
जान बचायें भाग मदीने से
यह सब की हुयी सलाह
यह सुन कर हज़रत फिर बोले
भर कर दुख की ठंडी आह
जान बचायें भाग अगर हम
करें कंही कायर का काम
छूत लगे इस्लाम पाक में
डूब जाय नाना का नाम
जिसे आप बुज़दिली बताते
कहें इसे मौक़ा या घात
जैसे भी हो सके बनानी
हमें चाहिए अपनी बात
जान रहेगी तब ही तक तो
बचा सकेंगे हम इस्लाम
वरना कौन रसूलिल्ला के
बजाला सकेगा एहकाम
इधर बुज़ुर्गी का कहना
होता है हज का उधर सवाब
सोंच समझ हज के मौसम में
मक्के को चल पड़े जनाब
ख़बर वहां की सब वलीद से पा
यज़ीद ने खा कर ताव
भेजे कुछ पाजी मक्के को
बने हुये हाजी से भाव
रहे ताक में वह हुसैन की
मौक़ा मिले कि करदे वार
मगर कौन बे वक्त किसी को
बिला क़ज़ा के सकता मार
दिल ने दी बतला हुसैन को
होनहार दुश्मन की घात
जैसे कोई कभी किसी के
कान लगा मुह कहदे बात
दिल में लगे सोचने हज़रत
मेरी जान रहे या जाय
लेकिन नाना की, काबा की
अज़मत में न दाग़ लग जाय
हुये शहीद यहां हम तब तो
होगा सब पर ख़ून सवार
वे सब मेरे लिये मरेंगे
जिनसे है कुछ भी व्यवहार
ऊच नींच सब सोंच समझ
हज़रत कूफ़ा को हुये तयार
हाथ जोड़ कर इब्ने हन्फिया
बोला सुनिये विनय हमार
कूफ़ा जाने का विचार
बेहतर करदें मुलतवी जनाब
कूफ़ी बड़े निठुर छालिया हैं
बड़े बेवफा बड़े ख़राब
क़ातिल हैं इमाम हैदर के
सब बे रहमी के अवतार
सब खिलाफ इस्लाम धरम हैं
सब यज़ीद के ताबेदार
काबे से जाना ही है तो
चले जाइये आप यमन
वहां अली के हामी हैं सब
मुसलमान हैं नेक चलन
इब्ने हन्फिया की बातें सुन
बोले विहंसि इमाम हुसैन
भाइ! होनी होके रहेगी
वृर्थ्था हो रहे हो बेचैन
अब शहीद होना होगा
इस्लाम धर्म पर हमें ज़रूर
होता है वह ही दुनिया में
जो है मालिक को मन्ज़ूर
एक रोज़ मरना ही है
तब क्यों न मरे हक़ पर इन्सान
चमका दूं इस्लाम न क्यों फिर
हंसी ख़ुशी होकर बलिदान

इतना कह कर ही हुसैन ने
ली कूफ़ा की सीधी राह
दुखी हुये सब बीच धार ज्यों
डूबे नय्या बिला मलाह
जो हुसैन के रहे संघाती
साथी सच्चे ताबेदार
वे सब उनके साथ हो लिए
जो थे दिल के खुद मुख्तार
लौटाना चाहा हुसैन ने
वे बोले सुनिये सरकार
जहां पसीना गिरे आपका
वहां बहेगी खूं की धार
आखिर मजबूरी दरजे में
लिया सभों को साथ लिवाय
चले क़ाफिला ले मक्के से
काबे में सिजदा करवाय
पैदल चलते हुए धूप में
देखा सब ने खाया ताव
रहम दिली ने किया तक़ाज़ा
वहीं छांह में पड़ा पड़ाव
बड़े अदब से अरब मुसाफिर ने
की आकर अलैक सलाम
पेश आय हज़रत ख़ातिर से
जैसे हैं उसूल इस्लाम
उसने कहे हाल कूफ़ा के
जैसे मुस्लिम हुये शहीद
बेटों का कर ख़याल कह उठा
उफ! ज़ालिम बदकार यज़ीद
रो, रो, कहते हुये मुसीबत
लिया कलेजा थाम उसांस
था न क़ाफिले में कोई
जो रोया हो न रक्त के आंस
मुस्लिम की बीबी की हालत
क्या कहकर बतलाऊँ हाय
सुनते ही बेहोश हुयी वह
छाती पीट पछाड़ें खाय
देख बहन की अबतर हालत
और सबों को भी बेचैन
मरने जीने का मसला
सब को समझाने लगे हुसैन

कौन जहां चक्की में पड़कर
हुआ न पिसकर चकना चूर
आयेगा फानी दुनियां में
जाना होगा उसे ज़रूर
अमर नाम कर जाता है
जो मरता है हक़ पर इन्सान
यही बताता है कुरान और
यही बताते वेद पुरान
रोते समझाते पहाड़ सी
बीती रात हुआ जब भोर
मशरिक़ की नमाज़ पढ़कर
चल दिया क़ाफ़िला कूफ़ा ओर
अन्क़रीब तैतीस मील जब
होगी कूफ़ा नगरी दूर
कहा किसी ने धूल देखा
हैं आंधी के आसार हुज़ूर
चन्द मिनट के अन्दर ही
लश्कर तक़रीबन एक हज़ार
लिये सामने आ पंहुचा
ज़ालिम यजीद का हुर सरदार
कड़क रही थी धूप बला की
सभी हो रहे थे बेचैन
सूख रहे थे होंठ प्यास से
देख तरस खा गये हुसैन
थोड़ा था सामान सफ़र का
थोड़ा ही था पानी पास
फिर भी हज़रत ने उन सब की
पानी पिला मिटाई प्यास
जरा सोचिए है भी कोई
ऐसा दानी सिवा हुसैन
दुश्मन की मेहमानी कर दे
अपना भी न हो ख़्याल जिसेन
पानी पीकर दम लेकर फिर
बोला हुर यूँ सुनों हुसैन
तुम यज़ीद के क़ैदी हो अब
बैयत ही है मक़सद ऐन
जान बचानी हो तुमको तो
बैयत लिख कर करो सलाम
रहो जहां जी चाहे फिर तुम
हंसी ख़ुशी से बने इमाम

मुस्का कर बोले हुसैन
है बैयत करने से इन्कार
मार डालने की धमकी देना
भी है भाई बेकार
मार डालना और जिलाना
अथवा करना माफ क़सूर
होता है सब हुक्म खुदा से
नहीं दूसरे का मक़दूर
रोक दिया हुर ने हज़रत को
उसी जगह सुन तल्ख़ ज़बान
जहां करबला का पड़ता था
बड़ा भयानक रेगिस्तान
आंवा सी तम्बुआ कनात थी
तावा सी तप रही ज़मीन
फूंक रही थी आग लूक सी
बैठी मलकुल मौत कमीन
ऐसी गर्म रेत थी जिसमें
गिरते ही अनाज भुन जाय
दुश्मन को भी दे न खुदा
यह सज़ा यहां पल भर ठहराय
थी अँगार सी धूप दहकती
चलती आंधी उड़ती धूल
फिर भी सब मज़लूम खुदा की
रहे इबादत में मशगूल
चार पांच दिन इसी तरह
बीते आगयी मुहर्रम सात
अब तक भी हज़रत हुसैन ने
मानी नहीं सुलह की बात
उसी सातवीं को मुस्लिम का
क़ातिल बिन ज़याद बदकार
उमर साद के बेटे को ले
लाया लश्कर बीस हज़ार
चौ तरफ़ा डेरे हुसैन के
उसने घेर लिए चुप चाप
और फुरात नदी की भी
वह करने लगा चौकसी आप
खाने से मजबूर रहे अब
पानी से भी हैं लाचार
हुआ ज़ालिमों का कैसा
यह मज़लूमों पर अत्याचार

सूख रहे थे हलक़ सबों के
बच्चों की थी दशा अजीब
अम्मा ज़रा पिला दो पानी
रो, रो, कहते रहे ग़रीब
पत्थर ही छाती पर रखकर
सुनती मातायें असहाय
करतीं क्या, बस, रो देतीं थी
बस, क्या था, रोने के सिवाय
बीती निठुर आठवीं लायी
नवीं मुहर्रम दुख धन घोर
इधर पढ़ रहे थे नमाज़ सब
उधर लड़ाई का था शोर
फर्ज़ अदाई करने हज़रत
आये सरदारों के पास
बोले उम्मत जिसकी हो तुम
हम हैं उसके नाती खास
हम से करना जंग तुम्हें वाजिब हो
तो तुम करो ज़रूर
मगर कहो किस लिये हमें
करते हो, लड़ने को मजबूर
कहां बहत्तर भूखे प्यासे
कहां हज़ारों की यह फौज
रोक सकें बालू के ज़र्रे
कैसे रण दरिया की मौज
हक़ नाहक़ हम दुखियारों का
खून बहा कर ऐ सरदार
कहो कौन मुह लेकर जाओ गे
उस मुन्सिफ़ के दरबार
ग़ौर करो तुम सही ग़लत
कुछ भी जैसी हो सब की राय
मगर आज की मोहलत हम को
अगर हो सके दे दी जाय
इतना सुन कर सरदारों ने
ढीली कर दी चढ़ी कमान
जाने कया था असर ज़बां में
जो हैवान बने इन्सान
इस में भी मसलहत खुदा ही
की होगी कुछ अजी जनाब
वरना हज़रत बदकारों से
पाते शायद साफ जवाब

वापस आ हुसैन खे़मे में
बोले सब को पास बिठाय
है मुसीबत से बचने का
बस नमाज़ ही एक उपाय
फिर क्या था सब हुये इबादत में
लयलीन दीन ग़मख्वार
आवाज़ें सुन पड़ें, रही हों
जैसे मधु मक्खी गुंजार
इसी तरह जब यादे खुदा में
बीत चली थी आधी रात
बोले करते हुए मुखातिब
सब से हज़रत सच्ची बात
राहे रास्त इस्लाम धर्म पर
कल होना है मुझे शहीद
क्योंकि हमारे ही खूं का है
प्यासा वह बदबख्वाह यज़ीद
तुम सब नाहक ही देते हो
मेरी एक जान पर जान
बुझे हुये हैं दिये देख लो,
हैं सब राहें भी सुनसान
सुनते ही सब लोग जोश में
आकर बोले जोड़े हाथ
सौ, सौ बार जलें ज़िन्दा पर
मुमकिन नहीं कि छोड़ें साथ
इसी समय नौकर बेटे को
लेकर आया हुर सरदार
हज़रत के क़दमों पर गिर कर
बोला माफ़ करें सरकार
होने को हक़ पर निसार
हज़रत ने बना लिया इन्सान
पानी दिखा, चुका दूंगा
जो पानी पिला किया एहसान
तुम्हें खुदा ही ने बख़्शा है
आओ, बैठो, पढ़ो नमाज़
शुरू इबादत इधर हुयी
और उधर आगये तीरन्दाज़
पौ फटते फटते जमात पर
लगे बरसने तीखे तीर
फ़ौरन ही हुसैन के आगे
तन कर खड़े हुये दो वीर
सीने ही को सिपर बनाकर
सहने लगे चोट पर चोट
वाह, खूब शाबाश न लगने
दी हुसैन को ज़रा खरोट
पूरी हुयी नमाज़ चल पड़ा
बेटे को ले हुर सरदार
लड़ने लगा जवांमर्दी से
करने लगा वार पर वार
ज़रा देर में काट छांट कर
हुर ने किया करबला साफ
भाग रहे थे जवांमर्द सब
कहते हुये कीजिये माफ
हुर के बेटे चाकर की थी
जंग देखने के क़ाबिल
तीरो गुर्ज से दहल रहे थे
बड़े दिलेरों के भी दिल
डेढ़ पहर तक लड़े बराबर
ये तीनों जाबिर दिल खोल
आखिर हुये शहीद दीन पर
कर निसार जीवन अनमोल
अनस, इब्न हारिस, सवैद
विन उमर, और अबदुर्रहमान
नाफे, इब्न, हिलाल, हन्ज़ला
असद, जिन्हें था हिफ़्ज़ कुरान
मुस्लिम, इब्ने औसजा, आबिस
हमदानी बुरेर से वीर
सत्तर अस्सी साल उम्र में
खुली ज़ईफ़ी की तक़दीर
बांधि ढाल तलवार दुधारा
खन्जर बरछी तीर कमान
चले धन्य इस्लाम धर्म पर
ये सब होने को क़ुरबान
टूट पड़े इक साथ फ़ौज पर
ये सब अल्लाहु अकबर बोल
दिखला दिये जंग के जौहर
मर्दाने ज़ईफ़ दिल खोल
एक पहर तक लड़े बराबर
हमदानी हन्ज़ला बुरेर
जिधर देखिये उधर लगा था
दुश्मन की लाशों का ढेर

एक एक होकर शहीद सब
अमर कर गये अपना नाम
इधर अली अकबर क़ासिम ने
आ हुसैन को किया सलाम
इन दोनों के पीछे थे
ज़ैनब मुस्लिम के बच्चे चार
सीने से हज़रत ने सब को
लगा लिया और करके प्यार
बिठा दिया सबको घोड़े पर
ख़ुद देकर नंगी शम्शीर
पिले दुश्मनों के लश्कर में
जैसे मछली पानी में
दिखा दिये वह हाथ हौंसले
दुश्मन भी कह उठे ''कमाल''
ऐसा कोई था न फ़ौज में
जिसे खुन से किया न लाल
बच्चे ही थे कब तक लड़ते
भारी तीस हज़ार भी फ़ौज
फिर भी रहे खोलते जैसे
सौरी से दरिया की मौज
जो सब का होता है आखिर
इनका हुआ वही अन्जाम
सब सदके होते इमाम पर
इन पर सदक़े हुये इमाम
घर बाहर के सब शहीद हो चुके
बचे हज़रत अब्बास
क्योंकि मुहाफिज़ रहे यही
इस्लामी पाक अलम के खास
भूखा प्यासा देख सबों को
अब यह रह न सके ख़ामोश
चले अलम और मश्क़ साथ ले
दिल में नयी उम्र का जोश
खेमें से फरात दरिया तक
तर हो गयी खून से रेत
दुश्मन के सिर काट बो दिये
हों जैसे कद्दू के खेत
अलम संभाला मश्क भरी फिर
पलट पड़े पड़ाव की ओर
इतने में आगयी उमड़ती
दुश्मन की फ़ौजें घनघोर

हाथ कट गये मशक़ छिद गयी
गिरा ज़मीं पर अलम दबाय
कोशिश हुयी रायगां पानी
डेरे तक न सका पँहुचाय
खून उगल कर वही दिलावर
शेर शहीद हुआ तत्काल
हज़रत ने बिना कफ़न दफ़न के
शव छोड़ दिया दो आंसू डाल
खे़मे में आकर देखा
बे पानी के कुम्हलाया फूल
बाहर ले आये असग़र को
झूले में जो रहा था झूल
बच्चे की हालत दिखला
बोले हुसैन होकर मजबूर
मैं शायद हूँ गुनहगार
लेकिन इसने क्या किया कुसूर
मुझे नहीं, दो इसे खुदा के
सदके में पानी दो बूंद
सुनते ही रो दिये शत्रु भी
फेर फेर मुह आंखों मूंद
उसी समय जल्लाद हुरमुला ने
वह तक कर मारा तीर
जिस से हलक़ छिदा असग़र का
और हुये ज़ख़्मी शब्बीर
हाय बाप के हाथों पर ही
खून उगल कर बेटा आज
विदा सदा के लिये हुआ
बन अमर शहीदों का सरताज
सीने से ली लगा लाश
और खून भरा नन्हा मुंह चूम
सुला दिया फिर तहे खाक
लो झूले का सिंगार मासूम
इतने गहरे घाव लगे, पर,
उफ, न करे, यह कैसा धीर
शायद सब हो एक ज़बां
कह देंगे, वह होगा शब्बीर
मगर हरम में मां बहनों के
रोने से थे अबतर हाल
सब्र करें कैसे ग़रीब
जिन के खो जांय क़ीमती लाल

मरने जीने का मसला
समझा कर सब को छोड़ उदास
हज़रत ने तलवार ढाल ले
पकड़ी जुलजनाह की रास
''होशियार हों जवां मर्द''
यह जोश भरी देकर आवाज़
टूट पड़ ऐसे लश्कर पर
जैसे अबाबील पर बाज़
बाकि सियारों पर चीता
हिरनों पर हावी होकर शेर
कांट छांट सिर हाथ पैर धड़
लगा दिये लाशों के ढेर
सरपट भरता कभी चौकड़ी
ले चलता था दुलदुल चाल
मरते थे कितने टकरा कर
टापों से होकर पामाल
बिजली सी चमचमा तड़पा
नागिन सी लहराती तलवार
जिधर झुकी कर दिया सफ़ाया
समझे शत्रु खुदा की मार
थी सत्तावन साल उमर
और उस पर ज़ख्मों का यह हाल
तिल तिल बदन छिदा तीरों से
हुये खून से लालो लाल
उसपर भी जिस तरफ घूमते
कर देते थे मैदाँ साफ
भाग खड़े होते थे दुश्मन
कहते हुये कीजिये माफ़
दुश्मन पर खा तरस और फिर
सरे जंग भी करदे माफ़
यह हुसैन के सिवा किसी में
सुने, न हैं, देखो औसाफ
लड़ते लड़ते वक्त इबादत देख
उतर घोड़े से आप
वहीं रेत पर बैठ लगे
निर्भय नमाज़ पढ़ने चुपचाप
इधर सुनहरा मौक़ा पाकर
फिर दुश्मने जां बे चैन
हुये शहीद शिम्र के हाथों
सिजदा करते हुये हुसैन

जुलजनाह आया डेरे पर
रंजीदा बे ज़बां बसीठ
बतला दी हालत हज़रत की
दिखला अपनी खाली पीठ
हुये हुसैन शहीद जान कर
सभी हरम में रोईं खूब
यहाँ तलक तर अश्कों से
हो गयी ज़मीं उग आई दूब
आग लगा कर कुछ खेमों में
दुश्मन पड़े हरम पर टूट
बेरहमी से उतरा ज़ेवर
की सबने मन मानी लूट
वहीं पड़ा हुसैन का बेटा
था साबिर सज्जाद अलील
उस ग़रीब को सख्त सुस्त कह
किया सबों ने बहुत ज़लील
मां बहनों की कुछ हराम ज़ादों
ने लीं चादरें उतार
गड़ी शर्म से जाती थीं
बेपर्दा हुयी सब पर्दादार
पहना कर ज़ंजीर तौक़
ले चले क़ैदियों को हमराह
क़तल गाह में आ, अपनों की
लाशों पर जब पड़ी निगाह
आह सर्द भर ली, करते क्या
सब तो थे कैदी लाचार
शुक्र खुदा जो हुआ आख़िरी
वक्त शहीदों का दीदार
नेज़ें पर सिर ले हुसैन का
आगे चला शिम्र बेपीर
जिसे देख ग़म अहल बैत को
हो, औरों के लिये नज़ीर
पैदल ही दो दिन में आये
सब क़ैदी कुफा बाज़ार
शहेर घुमाकर दिखलाया फिर
बिन ज़याद का भी दरबार
कभी जहां के शहज़ादे थे
बने वहां ही क़ैदी आज
चुल्लू भर पानी को तरसे
दाने दाने को मुहताज

¼ckdh is u0 34 ij ---------------½

मुख्य समाचार

क्या क़ब्र में भी रोशनी पंहुचा सकेंगी सोनिया गांधी : मौलाना कल्बे जवाद

क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद की आवाज़ पर 16 सितम्बर 2013 को हज़ारों फ़रज़न्दाने तौहीद ने राय बरेली में कहारों के अड्डे पर जमा होकर कांग्रेस की मरकज़ी हुकूमत के ज़ेरे साया मस्जिदों को शहीद करने और दूसरे मक़ामाते मुक़द्दसा पर नाजाएज़ क़ब्ज़ा करके उन पर आली शान इमारत तामीर कराए जाने के मन्सूबे के ख़िलाफ़ आवाज़ इहतिजाज बलन्द की। और मौलाना कल्बे जवाद की क़यादत में मरकज़ी हुकूमत की क़ाएद सोनिया गांधी के चुनाव क्षेत्र रायबरेली में ही रोड शो किया गया। ये रोड शो रायबरेली के कलेक्ट्रेट में ख़त्म हुआ जहां मरकज़ी हुकूमत के नाम एक एहतिजाजी मेमोरेण्डम ज़िला इन्तेज़ामिया को दिया गया। रोड शो के दौरान काले झंडे लहराते रहे। सैकड़ों ख़्वातीन भी जलसे व रोड शो में शामिल रहीं।

कहारों के अड्डे पर एहतेजाजी जलसे को ख़िताब करते हुए क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी साहब ने कहा कि आज दुनिया में हर जगह मुसलमान मारा जा रहा है चाहे मुसलमान मुसलमान को मार रहा हो या दूसरी ताक़तें मुसलमान को मार रही हों। इसका कारण हमारे अन्दर के इख़्तेलाफ़ात हैं जिसको दूर करके हमें एकता क़ाएम करनी होगी। उन्होंने कहा कि हमारा मुल्क तो आज़ाद हुआ मगर मुसलमान आज तक आज़ाद न हो सका। आज़ादी के वक़्त मुसलमान सरकारी मुलाज़मत में 35 % थे। आज डेढ़ फीसद हैं। इसकी ज़िम्मेदार कांग्रेस है। मौलाना ने कहा कि आज़ादी के 65 % साल में मुसलमानों को कुछ नहीं दिया गया बल्कि लिया गया है, मिला सिर्फ धोखा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने गुज़िश्ता एक साल में सात मस्जिदें शहीद कराईं। मौलाना ने कहा कि मुसलमानों को परेशान करने की हर बात की बुनियाद कांग्रेस ने रखी और उस पर इमारत बी०जे०पी० ने खड़ी की। 800 साल पुरानी देहली की ग़ौसिया मस्जिद को कांग्रेस ने शहीद कराया। उस मस्जिद के इमाम साहब को तिहाड़ जेल में डाल दिया गया। क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने अपनी तक़रीर जारी रखते हुए कहा कि आज लोगों का कहना है कि मेरी बेटी और दामाद को कांग्रेस ने नौकरी दी है मेरे मुहल्ले में बिजली पंहुचायी है। उन लोगों को सोचना चाहिए कि प्यारे आक़ा व मौला की बेटी और दामाद की मुक़द्दस ज़ियारत गाहों के साथ कांग्रेस क्या सुलूक कर रही है। आज मुहल्ले की रोशनी का ख़्याल है मगर कल क़ब्र में रोशनी कहां से आएगी क्या वहां भी सोनिया और राहुल का इन्तेज़ार करोगे।

मौलाना शाह मेराज अशरफ़ जाएसी ने कहा कि आपसी झगड़े लोगों को बर्बाद कर देते हैं। उन्होंने कहा कि जब मोमिन कम थे तब काबा शरीफ़ की हिफ़ाज़त के लिए खुदा ने अबाबील का लश्कर भेजा था। अब हम करोड़ों की तादाद में हैं, ये काम हमको करना है। मस्जिदें अल्लाह का घर हैं और हम उनके मुहाफ़िज़। हाजी मुहम्मद सलीस कानपूर ने अपने ख़िताब में कहा कि हमें क़ाएद की मन्शा पर चलना चाहिए न कि क़ाएद हमारी मन्शा पर चले। मौलाना इशतियाक़ अहमद नियाज़ी ने कहा कि इत्तेहाद का ही नतीजा है कि आज मुल्क शाम में अमरीका पीछे हठने को मजबूर है। जलसा को बताया गया कि सोनिया गांधी की मुशीर अहमद पटेल ने देहली में मस्जिद को शहीद कराकर उस पर काम्पलेक्स तामीर करवाने का मन्सूबा बनाया है।

इस एहतेजाजी जलसे के बाद रोड शो हुआ जो कहारों के अड्डे से निकलकर बस स्टेशन, दीवानी, कचहरी, अस्पताल चौराहा, हाथी पार्क और डिग्री कालेज होता हुआ ज़िला कलेक्ट्रेट पंहुचा। इस दौरान सोनिया गांधी मुर्दाबाद, राहुल गांधी मुर्दाबाद, अहमद पटेल मुर्दाबाद और लब्बैक या हुसैन के फ़लक शिगाफ़ नारे लगाये जाते रहे। वहां मरकज़ी हुकूमत के नाम एक मेमोरेण्डम इन्तेज़ामिया को दिया गया जिसमें शहीद कराई गयी तमाम मस्जिदों की तामीर, मक़ामाते मुकद्दसा के तहफ़्फ़ुज़, बे गुनाह मुसलमानों की रिहाई आदि की मांग की गई।

शाम में फिलिस्तीनी मुहाजिर कैम्पों पर हमला, 5 फिलिस्तीनी मरे

शाम में मौजूद फिलिस्तीनियों के वरकिंग ग्रुप ने कहा है कि शाम में फिलिस्तीनी मुहाजिर कैम्पों पर जारी शैलिंग और हमलों की वजह से पांच फिलिस्तीनी मुहाजिर और मारे गये। ग्रुप की तरफ़ से जारी करदा एक बयान में बताया गया है कि गुज़िश्ता दिनों यरमोक मुहाजिर कैम्प में होने वाले तसादुम के नतीजे में सामी अब्दुल अज़ीज़ मारे गये जबकि वसाम सईद शामी हुकूमत की जेल में तशद्दुद के कारण जान से हाथ धो बैठे।

यरमोक मुहाजिर कैम्प से तअल्लुक़ रखने वाले एक और फिलिस्तीनी नौजवान शहाबी एक माह क़ब्ल कैम्प पर बम्बारी के नतीजे में ज़ख़्मी होने के कारण ज़ख़्मों की ताब न लाते हुए जान से हाथ धो बैठे। इसके अलावा कैम्प के अन्दर काम करने वाले एक समाजी कारकुन ख़ालिद शामी हुकूमत की जेल में तशद्दुद के कारण मारे गये। यरमोक कैम्प गुज़िश्ता 2 माह से शामी फौज के मुहासिरे का शिकार बना हुआ है जबकि उसपर मुसलसल बमबारी भी की जा रही है। वरकिंग ग्रुप के मुताबिक हुसैनिया कैम्प पर भी बमबारी की गयी जिसके नतीजे में माली नुक़सान का सामना करना पड़ा। उन्होंने मज़ीद बताया कि ख़ान एशिया मुहाजिर कैम्प पर भी बमबारी की गयी मगर उससे किसी जानी नुक़सान की इत्तेला नहीं है।

150 दहशतगर्द यहूदी मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल

मस्जिदे अक़्सा के ख़िलाफ़ सहयूनी साज़िशों मे ग़ैर मामूली इज़ाफ़ा होता जा रहा है जबकि क़ाबिज़ यहूदियों की रोक थाम के लिए कोई प्रभावशाली क़दम नहीं उठाया जा रहा है। इत्तेलाआत के मुताबिक़ गुज़िश्ता दिनों थोड़े थोड़े वक़्फे के साथ कम से कम 150 यहूदी आबादकार ग्रुप की शक्ल में मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल होते रहे। हर ग्रुप के साथ यहूदी रबी उन्हें मज़मूम हैकल सुलैमानी की तामीर के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों के बारे में भी आगाह करते रहे। मस्जिद में शोर गुल करते रहे और मुसलमानों और फिलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ नारे लगाते रहे।

मरकज़े इत्तेलात फिलिस्तीन के नामा निगारों और गवाहों की सूचना के अनुसार गुज़िश्ता दिनों क़िब्ला-ए-अव्वल में सख़्त कशीदगी की फ़िज़ा बरक़रार रही। मस्जिद में मौजूद नमाज़ी हज़रात यहूदियों के नापाक क़दम मस्जिद अक़्सा में दाख़िल होते ही बलन्द आवाज़ों में ''नारा-ए-तकबीर'' बलन्द करते रहे, लेकिन इन्तेहा पसन्द यहूदियों को सहयूनी पुलिस और फ़ौज ने अपने हिफ़ाज़ती हिसार में ले रखा था इसलिए उन्हें फिलिस्तीनियों के नारों की कोई परवाह नहीं थी।

क़िब्ल-ए-अव्वल के तहफ़्फ़ुज़ की ज़िम्मेदार तनज़ीमुल अक़्सा फ़ाउण्डेशन व ट्रस्ट ने यहूदियों की क़िब्ल-ए-अव्वल में मुसलसल मदाख़लत और आलमे इस्लाम की जानिब से उस पर मुजरमाना ग़फ़लत दोनों की शदीद अलफ़ाज़ में मज़म्मत की है। एक बयान में फ़ाउण्डेशन का कहना है कि यहूदी आलमे इस्लाम की ख़ामोशी के नतीजे में क़िब्ल-ए-अव्वल का तक़द्दुस पामाल कर रहे हैं। आलमे इस्लाम से मस्जिदे अक़्सा के तहफ़्फ़ुज़ के लिए बार बार अपील की जा चुकी हैं लेकिन मजाल कि मुस्लिम दुनिया ने इसकी ज़रा भी परवाह की हो मुसलमानों का ये रवय्या यहूदियों को क़िब्ला अव्वल पर यलग़ार के लिए हौसला फ़राहम कर रहा है। फिलिस्तीन के मक़्बूज़ा मग़रिबी कनारे के शहर नाबिल्स में एक शाहराह आम की बन्दिश के खिलाफ़ निकाली गयी फिलिस्तीनियों की रैली पर इस्राईली फौजियों ने ताक़त का बहीमाना इस्तेमाल किया है जिसके नतीजे में कई लोग ज़ख़्मी हो गये हैं। मरकज़े इत्तेलाआत फिलिस्तीन के मुताबिक़ पिछले सप्ताह हज़ारों आदमी ने घरों से निकल कर जुनूबी नाबिल्स की क़रयूत शाहराह खोलने के हक़ में प्रदर्शन किया। ख़्याल रहे कि ये शाहराह आम 2000 के बाद से अब तक बन्द है और उसे बन्द रखने का कोई ख़ास कारण भी नहीं है।

मुज़ाहेरे में मक़ामी शहरियों के अलावा बड़ी संख्या में ग़ैर मुल्की भी शामिल थे। ऐनी शाहदीन के मुताबिक मुज़ाहेरे में रामुल्लाह और नाबिल्स के दीगर मक़ामात से शिरकत के लिए आने वाले कई शहरियों को इस्राईली फौज ने रास्ते ही में गिरफ़्तार कर लिया सहयूनी फ़ौज के हाथों गिरफ़्तार होने वाले कम से कम दस आदमी की तस्दीक़ की गयी है। गिरफ्तार होने वालों में शहर के दो सर करदा सियासी और समाजी रहनुमा अब्दुल्लाह अबू रहमा और सलाहुल ख़्वाजा शामिल हैं।

पी०आई०सी० के नामानिगार के मुताबिक़ क़ाबिज़ फौजियों ने मज़ाहरीन को मुन्तशर करने के लिए उनपर लाठीचार्ज किया और ज़हरीली अश्क आवर गैस छोड़ी जिसके नतीजे में दर्जनों आदमी मुतअस्सिर हुए। सहयूनी फौज की जानिब से ताक़त के इस्तेमाल के बावजूद फिलिस्तीनियों ने अपना धरना और मुज़ाहरा जारी रखा। मुज़ाहरीन सहयूनी रियासती दहशतगर्दी, नस्ली दीवार फ़ासिल, शाहराह क़रयूत की बन्दिश और फिलिस्तीन में यहूदी आबादकारी के ख़िलाफ़ भी नारे लगा रहे हैं।

मस्जिदे अक़्सा पर यहूदी यलग़ार की इजाज़त के लिए कनेस्ट में बहस

इस्राईली पार्लियामेन्ट (कनैस्ट) की दाखिला कमेटी में खुसूसी जलसे में ''ईदुलअर्श'' के मौक़े पर यहूदी इन्तेहा पसन्दों के मस्जिदे अक़्सा में दाखिले की इजाज़त देने या न देने पर बहस की गयी। मस्जिदे अक़्सा की तामीर व मरम्मत की ज़िम्मेदार तनज़ीम ''अल-अक़्सा फ़ाउण्डेशन व ट्रस्ट'' की जानिब से जारी एक बयान में सहयूनी पार्लियामेन्ट की वेबसाइट पर इस ख़बर की निशान्दही की गयी। वेबसाइट पर जारी ख़बर में बताया गया है कि दाख़िला कमेटी यहूदी आबादकारों के ''ईदुलअर्श'' के मौक़े पर मस्जिद अक़्सा पर धावा बोलने या वहां इबादत की अदाएगी की इजाज़त देने पर ग़ौर कर रही है। इससे क़ब्ल कमेटी में इबरानी नये साल की तक़रीबात के मौक़े पर भी यहूदियों को क़िब्ल-ए-अव्वल में दाख़िले की इजाज़त देने का मामला ज़ेरे बहस रहा है, कमेटी के मुतशद्दिद अराकीन ने यहूदियों की यलग़ार की खुली हिमायत की। रिपोर्ट के मुताबिक़ कनैस्ट की दाख़िला कमेटी के जलसे में 12 महकमों के अफ़सरों को भी बुलाया गया। ख़्याल रहे कि यहूदी ''ईदुलअश्र'' नामी मज़हबी तेहवार मना रहे हैं। इस अवसर पर यहूदी आबादकारों और इन्तेहा पसन्द गुरूपों ने रैलियों की शक्ल में मस्जिदे अक़्सा में दाख़िल होकर उसकी बेहुरमती की धमकियां देना शुरू कर दी हैं।